पहला संस्करण — दो हजार — दिसम्बर १९३७
दूसरा संस्करण — (संशोधित और परिवर्द्धित)
— दो हजार १९४०
तीसरा संस्करण — दो हजार — अप्रैल १९४९
चौथा संस्करण — दो हजार — मअी १९५३
पाँचवाँ संस्करण — तीन हजार — अगस्त १९५६

मूल्य—एक रुपया

प्रकाशक— श्री आर्यनायकम्, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम, वर्धा (मध्यप्रदेश)

मुद्रक— श्री द्वारका प्रसाद परसाई
नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम

निवेदन

"शिक्षा में अहिंसक क्राति" तीसरी बार छप रही है। किताब की माग बहुत हो रही थी अिसलिअे अिसे जल्द छपवाना पड़ा। अिस बार अिस किताब में से पाठ्यक्रम का वह हिस्सा निकाल दिया गया है जिसमें हमारे तजुर्बे और अनुभव के आधार पर अब काफी सुधार किया गया है। अिसके सिवा किताब में और कोअी तब्दीली नहीं की गयी है।

नया पाठ्यक्रम अलग छपवाया जा रहा है।

आर्यनायकम्
मंत्री,
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम (वर्धा)
ता. २२–४–४९

चौथा संस्करण

"शिक्षा मे अहिंसक क्राति' के अिस चौथे संस्करण में पिछले संस्करण की अपेक्षा कोअी परिवर्तन नहीं किये गये हैं। नअी तालीम के प्रारम्भ और अिसकी मूल कल्पना को समझने के लिअे अुत्सुक पाठकों के लिअे यह पुस्तक बहुत सहायक है। विशेषतः नअी तालीम की ट्रेनिंग पानेवाले शिक्षकों ने अिसकी बहुत माग की है।

अिस क्रातिकारी शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रश्नों का अुत्तर और शंकाओं का समाधान सन् १९३७–३९ में स्वयं गांधीजी ने "हरिजन" पत्र में किया है। किन्तु आज भी कभी-कभी नये लोग वे ही प्रश्न और शंकाअें प्रस्तुत करते हैं। अुनसे हमारी प्रार्थना है, कि अिस पुस्तक को अेक बार पूरी पढ़े, अिसका मनन करें, और जहा-जहां सच्चे रूप में नअी तालीम का काम चल रहा है, वहां जाकर प्रत्यक्ष सब बातों को देखें, और समझें। अिस तरह अुन्हें अिस क्रातिकारी शिक्षा की वास्तविकता का अनुभव हो सकेगा।

१५-५-'५३

—प्रकाशक

प्रकाशक का निवेदन

[दूसरे संस्करण के लिअे]

'शिक्षा में अहिंसक क्रांति' का यह दूसरा संस्करण है। इस संस्करण में गांधीजी का विचार-संग्रह अुससे आगे के लेख जोड़ कर बढ़ाया गया है और साथ-साथ वर्धा-शिक्षा-परिषद् का कार्य-विवरण कुछ संक्षिप्त करके अुसके साथ जाकिर हुसैन समिति का विवरण और बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा का विस्तृत पाठ्यक्रम जोड़ा गया है। हमें आशा है कि इस पुस्तक से बुनियादी तालीम का अेक पूरा चित्र पाठकों को मिलेगा।

अिस पुस्तक का पहला संस्करण मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की ओर से प्रकाशित हुआ था। अुन्होंने अिस पुस्तक का सब स्वत्व हिन्दुस्तानी तालीमी संघ को समर्पण कर दिया। अिसके लिअे मैं यहां तालीमी संघ की ओर से हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ-साथ अिस पुस्तक के पहले संस्करण के सम्पादन और प्रकाशन में महिलाश्रम वर्धा के श्री काशीनाथजी त्रिवेदी ने शुरू से आखिर तक जो अक्लान्त परिश्रम किया अुसके लिअे अुनका आभार मानता हूँ। अिसके द्वितीय संस्करण के सम्पादन में नवभारत विद्यालय के अध्यक्ष श्री श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल ने जो सहायता की अुसके लिअे भी अपनी कृतज्ञता-ज्ञापन करता हूँ।

सेगाँव   आर्यनायकम्

ता. २३-२-४०   मन्त्री, हिंदुस्तानी तालीमी संघ

अनुक्रमणिका

शिक्षा में अहिंसक क्रांति

(महात्मा गांधी के विचार)

शिक्षा

(३१ जुलाअी, १९३७ के 'हरिजन' में गाधीजी ने 'क्रिटिसिज्म अेन्सर्ड' यानी 'आलोचनाओं का जवाब' शीर्षक से अेक लंबा लेख लिखा था। यह 'शिक्षा' शीर्षक लेख का अेक अंग है।):—

हमारे यहाँ शिक्षा के सवाल का हल दुर्भाग्यवश शराब की आय के बन्द हो जाने से जुडा हुआ है। निःसन्देह नये कर लगाने के और भी रास्ते हैं। अध्यापक शाह और अध्यापक खम्भाता ने यह दिखाया है कि अिस गरीब देश में आज भी नये कर देने की शक्ति है। धनवानों के धन पर अभी काफी कर नहीं लगा है। दुनिया के दूसरे देशों के मुकाबले अिस देश में कुछ चुने हुअे व्यक्तियों का, स्वयं बहुत ज्यादा धन बटोर लेना, हिन्दुस्तान के मानव-समाज का अपराध करना है। अिसलिअे अेक निश्चित सीमा से अधिक की सपत्ति पर कितना ही कर क्यों न लगाया जाय, वह कभी हद से ज्यादा नहीं कहा जा सकता। मैंने सुना है कि अिंग्लैण्ड में अेक निश्चित आमदनी से अधिक की आमदनी पर ७० फीसदी तक कर वसूल किया जाता है। फिर, क्यों न हिन्दुस्तान अिससे भी ज्यादा कर लगाये? किसी आदमी के मरने पर अुसके वारिस को जो विरासत मिलती है, अुसपर यह कर क्यों न लगाया जाय? बालिग हो जाने पर भी जब लखपतियों के लड़कों को अपने पिता की संपत्ति अुत्तराधिकार में मिलती है. तो अिस संपत्ति के कारण ही अुनको नुकसान पहुँचता है। और राष्ट्र की तो अिससे

दुगुनी हानि होती है। क्योंकि अगर सच पूछा जाय तो अिस संपत्ति पर राष्ट्र का ही अधिकार होना चाहिये। सिवा अिसके जो अिस संपत्ति को विरासत में पाते हैं, वे अिसके बोझ के नीचे अिस तरह दब जाते हैं, कि अुनकी शक्तियों का पूरा-पूरा विकास नहीं हो पाता। अिससे भी राष्ट्र की अुतनी ही हानि होती है। मेरी दलील को अिस हकीकत से कोअी नुकसान नहीं पहुँचता कि प्रान्तीय सरकारों को अिस तरह का मृत्युकर लगाने का अधिकार नहीं है।

लेकिन अेक राष्ट्र के नाते शिक्षा में हम अितने पिछड़े हुअे हैं, कि अगर शिक्षा-प्रचार के कार्यक्रम का आधार पैसा रहे तो अिस विषय में जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य-पालन की आशा हम कभी नहीं रख सकते। अिसलिअे रचनात्मक कार्य-सम्बन्धी अपनी सारी प्रतिष्ठा को खो बैठने की जोखिम अुठाकर भी मैंने यह कहने का साहस किया है कि शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिये। सच्ची शिक्षा वही है, जिसे पाकर मनुष्य अपने शरीर, मन और आत्मा के अुत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास कर सके, और अुन्हें प्रकाश में ला सके। साक्षरता न तो शिक्षा का अन्तिम ध्येय है, न अुससे शिक्षण का आरम्भ ही होता है। वह तो स्त्री-पुरुषों को शिक्षित बनाने के अनेक साधनों में अेक साधन मात्र है। अपने-आप में साक्षरता कोअी शिक्षा नहीं है। अिसलिअे मैं तो बच्चे की शिक्षा का आरम्भ अुसे कोअी अुपयोगी दस्तकारी सिखाकर, अर्थात् जिस क्षण से अुसकी शिक्षा शुरू होती है अुसी क्षण से अुसे कुछ-न-कुछ नया सृजन करना सिखाकर ही करूँगा। अिस तरीके से हरअेक पाठशाला स्वावलंबी बन सकती है। शर्त सिर्फ यह है कि अिन पाठशालाओं में तैयार होनेवाले माल को सरकार खरीद लिया करे। मैं मानता हूँ कि अिस पद्धति द्वारा मन और आत्मा का अुच्च-से-अुच्च विकास किया जा सकता है। अिसके लिअे आवश्यक है कि जो अुद्योग-धन्धे आज केवल यंत्रवत् सिखाये जाते हैं वे वैज्ञानिक ढंग से सिखाये जायँ, यानी बच्चों को यह समझाया जाय कि कौन-सी क्रिया किसलिअे की जाती है। अिस चीज को मैं थोड़े आत्मविश्वास के साथ लिख रहा हूँ, क्योंकि अिसकी पीठ पर मेरे अनुभव का बल है। जहाँ-जहाँ मजदूरों को चर्खे पर सूत कातना सिखाया जाता है, तहाँ-तहाँ सब जगह अिस तरीके से कमोवेश काम लिया गया है। खुद मैंने भी अिस तरीके से चप्पल सीना और कातना सिखाया है और अुसका परिणाम अच्छा हुआ है। अिस तरीके में अितिहास-भूगोल के ज्ञान का

बहिष्कार नहीं किया गया है। लेकिन मेरा तजरबा यह है कि बातचीत के जरिये जबानी जानकारी देकर ही ये विषय अच्छी-से-अच्छी तरह सिखाये जा सकते हैं। वाचन लेखन की अपेक्षा अिस श्रवण-पद्धति से ज्यादा ज्ञान दिया जा सकता है। जब लड़के-लड़की भले-बुरे का भेद समझने लगें और अुनकी रुचि का थोड़ा विकास हो जाय, तभी अुन्हें लिखना-पढ़ना सिखाना चाहिये। यह सूचना मौजूदा शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तनों की सूचक है, लेकिन अिसके कारण मेहनत बहुत ही बच जाती है, और जिस चीज को सीखने में विद्यार्थी को बरसों बीत जाते हैं, अुसे अिस तरीके से वह अेक साल में सीख सकता है। अिसके कारण सब तरह की बचत होती है। और अिसमें कोअी शक नहीं कि दस्तकारी के साथ-साथ विद्यार्थी गणित भी अवश्य ही सीखेगा।

प्राथमिक शिक्षा को मैं सबसे ज्यादा महत्त्व देता हूँ। मेरे विचार में, यह शिक्षा अंग्रेजी को छोड़कर और विषयों में आजकल की मैट्रिक तक होनी चाहिये। अगर कॉलेज के सब ग्रेजुअेट अपना पढ़ा-लिखा अेकाअेक भूल जायँ और अिन कुछ लाख ग्रेजुअेटों की याददाश्त के यों अेकाअेक बेकार हो जाने से देश का जो नुकसान हो अुसे अेक पलड़े पर रखिये, और दूसरी ओर अुस नुकसान को रखिये जो पैंतीस करोड़ स्त्री-पुरुषों के अज्ञानान्धकार में घिरे रहने से आज भी हो रहा है, तो साफ मालूम होगा कि दूसरे नुकसान के सामने पहला कोअी चीज नहीं है। देश में निरक्षरों और अनपढ़ों की जो सख्या बतायी जाती है, अुसके आँकड़ों से हम लाखों गाँवों में फैले हुअे घोरतम अज्ञान का पूरा अनुमान नहीं कर सकते।

अगर मेरा बस चले तो कॉलेज की शिक्षा को जड़-मूल से बदल दूँ, और देश की आवश्यकताओं के साथ अुसका सम्बन्ध जोड़ दूँ। मैं चाहता हूँ कि मिके-निकल और सिविल अिंजीनियरों के लिअे अुपाधि परिक्षाअे रखी जायें, और भिन्न-भिन्न कल-कारखानों के साथ अुनका सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाय। अिन कारखानों को जितने ग्रेजुअेटों की जरूरत हो अुतनों को ये अपने ही खर्च से तालीम दिलाकर तैयार कर लें। अुदाहरण के लिअे ताता कंपनी से यह आशा की जाय, कि जितने अिंजीनियरों की अुसे जरूरत हो अुतनों को तैयार करने के लिअे वह राज्य की निगरानी में अेक कॉलेज का संचालन करे। अिसी तरह मिल-मालिकों के मण्डल भी आपस में मिलकर अपनी जरूरत के ग्रेजुअेटों को तैयार

करने के लिअे अेक कॉलेज का संचालन करें। दूसरे अनेक अुद्योग-धंधों के लिअे भी यही किया जाय। व्यापार के लिअे भी अेक कॉलेज हो। अिसके बाद आर्ट्स, मेडिकल और कृषि कॉलेज रह जाते हैं। आज कअी 'आर्ट्स' कॉलेज अपने पैरों खड़े होकर चल रहे हैं। अिसलिअे राज्य अपनी ओर से 'आर्ट्स' कॉलेज चलाना छोड़ दे। मेडिकल कॉलेजों को प्रमाणित अस्पतालों के साथ जोड़ दिया जाय। चूँकि अैसे कॉलेज धनिक-समाज में लोकप्रिय हैं, अिसलिअे अुससे यह आशा रक्खी जाय, कि वह अिनके सचालन का भार स्वेच्छा से अपने अूपर ले ले। कृषि-कॉलेज तो अपने नाम को तभी सार्थक कर सकते हैं, जब वे स्वावलंबी हों। मुझे कृषि कॉलेजों से निकले हुअे अनेक ग्रेजुअेटों का बड़ा कड़ुआ अनुभव हुआ है। अुनका ज्ञान बहुत ही अुथला और व्यावहारिक अनुभव नाम मात्र का होता है। लेकिन अगर अुन्हें स्वावलंबी और देश की जरूरतें पूरी करनेवाले फार्मों पर अुम्मीदवारी करनी पड़े तो डिग्री पाने के बाद, और जिनकी नौकरी करते हैं, अुनके खर्च से, व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता अुन्हें न रह जाय।

अिसे आप निरा काल्पनिक चित्र न समझें। अगर हम अपनी मानसिक जड़ता को दूर कर सकें, तो हमें तुरन्त ही पता चल जाय कि शिक्षा का जो प्रश्न आज महासभा के मंत्रियों के और फलतः स्वयं महासभा के सामने अुपस्थित है, अुसका यह बहुत ही अुपयुक्त और व्यावहारिक हल है। कुछ समय पहले ब्रिटिश सरकार की ओर से जो घोषणाअें की गयी हैं अगर सचमुच अुनका अर्थ वही है, जो हमारे कान को प्रतीत होता है, तो मंत्रियों को अपनी नीति को अमल कराने में सिविल सर्विस की संगठित कार्य-शक्ति का लाभ मिलना ही चाहिये। हर तरह के मौजी और मनस्वी गवर्नरों और वाअिसरायों द्वारा निर्धारित राज्यनीति को अमल में लाने की कला सरकारी नौकरों ने सीख रक्खी है। मंत्रियों का कर्तव्य है कि वे अच्छी तरह सोच-समझकर अेक निश्चित शासन नीति तय करें, और सिविल सर्विसवाले जिनका नमक खाते हैं अुनके प्रति वफादार रहकर अुन वचनों को सच्चा करें, जो अुनकी ओर से दिये गये हैं।

बाद में शिक्षकों का प्रश्न रह जाता है। अिसके लिअे विद्वान् स्त्री-पुरुषों से अनिवार्य सेवा लेने का जो अुपाय प्रोफेसर शाह ने सुझाया है, वह मुझे अच्छा लगा है। अैसे लोगों के लिअे यह अनिवार्य हो कि वे कुछ वर्षों तक (सम्भवतः पाँच बरस तक) जनता को अुन विषयों की शिक्षा दें, जिनमें

अुन्होंने योग्यता प्राप्त की है। अिस बीच जीविका-निर्वाह के लिअे अुन्हें जो वेतन दिया जाय, वह देश की आर्थिक स्थिति के अनुरूप हो। अुच्च-शिक्षा की संस्थाओं में आज शिक्षक और अध्यापक बहुत अधिक वेतन की अपेक्षा रखते हैं। अब यह प्रथा मिट जानी चाहिये। गॉंव में अिस समय जो शिक्षक काम कर रहे हैं, अुनके बदले वहॉं दूसरे अधिक योग्य आदमी रक्खे जाने चाहिये।

अनावश्यक भय

तीन साल में शराब-बंदी के कॉंग्रेसी कार्यक्रम की बड़ी तारीफ करते हुअे अेक लिबरल मित्र ने शिक्षा के बारे में अपना भय अिस प्रकार प्रकट किया है:—

"महासभा के शिक्षा-सम्बन्धी कार्यक्रम से लोगों में बेचैनी-सी फैलती दिखायी देती है। अुन्हें डर है कि अिस नीति के कारण अुच्च-शिक्षा की प्रगति में रुकावट पैदा होगी। मुझे अुम्मीद है कि जबतक भली-भॉंति सोच-समझकर तैयार की हुअी योजना न बन जाय और जनता को प्रस्तावित परिवर्तनों की सूचना काफी पहले से न दे दी जाय, तबतक जल्दी मे कोअी कार्रवाअी न की जायगी।"

यह भय बिलकुल अनावश्यक है। कॉंग्रेस कार्य-समिति ने अपनी कोअी व्यापक नीति निर्धारित नहीं की है। कॉंग्रेस ने काशी विद्यापीठ, जामिया मिल्लिया, तिलक विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, और अैसी दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना करने के सिवा, अैसी कोअी घोषणा नहीं की है, जो शिक्षा के समग्र क्षेत्र पर घटित होती हो। मैंने जो कुछ लिखा है, सो अिस विषय पर अपने विचार प्रकट करने की दृष्टि से लिखा है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने देश के नौजवानों को, हिन्दुस्तान की भाषाओं को, और देश की सर्वमान्य संस्कृति को जो अपार हानि पहुॅंचाई है अुसको मैं बहुत तीव्रता के साथ अनुभव किया करता हूँ। मेरे विचार बहुत दृढ हैं लेकिन मैं यह दावा नहीं करता कि सभी कांग्रेस-वादियों को आमतौर पर मैं अपने विचारों के अनुकूल बना सका हूँ। जो शिक्षा-शास्त्री महासभा के वातावरण से भी दूर हैं, और भारतीय विश्व

विद्यालयों पर जिनका प्रभाव है, अुनके बारे में तो मैं कह ही क्या सकता हूँ? अुनके विचारों को बदलना नहीं है। अिन मित्र को और अिनके जैसा डर रखने वालों को विश्वास रखना चाहिये कि श्री श्रीनिवास शास्त्री ने जो सलाह दी है, अुसे अिस विषय से सम्बन्ध रखनेवाले सब ध्यान में रखेंगे और बिना पूरा-पूरा विचार किये और शिक्षा के मामले में जिनकी सलाह बहुमूल्य मानी जाती है अुन सबके साथ बिना सलाह-मशविरा किये किसी भी प्रकार का महत्त्वपूर्ण निर्णय नहीं किया जायगा। मैं अितना और कहूँगा कि मैंने बहुत पहले से बहुतेरे शिक्षा-शास्त्रियों के साथ पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया है और मुझे यह कहते हुअे खुशी होती है कि जो बहुमूल्य सम्मतियाँ अिधर मुझे मिली हैं वे आमतौर पर मेरी योजना के अनुकूल ही पड़ती हैं।

('हरिजन,' २८ अगस्त, १९३७)

"शिक्षा की समस्या"

जबसे महासभा के मंत्रियों ने मंत्री-पद ग्रहण किये है, तबसे गांधीजी शिक्षा के बारे में कअी लोगों के सामने अपने विचार प्रकट किया करते हैं। अेक बार अिसी सम्बन्ध में बातचीत करते हुअे अुन्होंने कहा था: "नये सुधारों की सबसे बड़ी विपरीतता यह है कि अपने बच्चों को पढ़ाने के लिअे हमारे पास शराब की आमदनी से मिलनेवाले पैसों को छोड़कर और कोअी जरिया ही नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह अेक गूढ़ पहेली ही है। लेकिन हमें अिससे हार मानने की आवश्यकता नहीं। अिस पहेली को बूझने के लिअे हमें कितना ही स्वार्थत्याग क्यों न करना पड़े हम शराब को जड़ मूल से मिटाने के अपने आदर्श को तनिक भी नीचा नहीं कर सकते। हमारे लिअे तो यह विचार ही, कि अगर शराब की आमदनी न हुअी तो हमारे बच्चे अनपढ़ ही रह जायेंगे, अेक लज्जा का और खिसियाहट का विषय होना चाहिये। लेकिन अगर अैसा ही समय आ जाये, तो यह समझकर कि शराबखोरी और निरक्षरता में निरक्षरता कम खराब है हमें अुसीको मंजूर कर लेना चाहिये। अगर हम अंकों के चक्कर में न फँसें और प्रचलित

विश्वास के शिकार न बने कि आज हमारे बच्चों को जिस प्रकार की शिक्षा मिलती है, वैसी शिक्षा अुन्हें मिलनी ही चाहिये तो अिस प्रश्न से हमारे सामने कोअी परेशानी पैदा ही क्यों हो ?" शिक्षा को स्वावलंबी और गांव के मदरसों को गॉव की आवश्यकताओं की पूर्ति करने योग्य बनाने के लिअे जिस शिक्षा-पद्धति के विकास की जरूरत है, अुसपर विचार करने के लिअे हमारे शिक्षा-शास्त्रियों को किसी जगह अेकत्र होना चाहिये; अिस बात पर गांधीजी क्यों अितना जोर देते हैं, अुसका मतलब अुनके अूपर दिये गये अुद्‌गारों से समझा जा सकता है।

अेक प्रश्नकर्त्ता ने आश्चर्य से पूछा : 'तो क्या आप हाअीस्कूल की शिक्षा को बन्द कर देंगे, और मैट्रिक तक की सारी शिक्षा गॉव के स्कूलों में देंगे ?"

महात्माजी ने कहा : " बेशक ! आपकी हाअीस्कूल की शिक्षा में धरा ही क्या है ? जिस चीज को लड़के अपनी मातृभाषा द्वारा दो साल में सीख सकते है, अुसीको पराअी भाषा द्वारा सात साल में सीखने के लिअे बाध्य करने के सिवा वह और करती ही क्या है ? यदि आप विदेशी भाषा द्वारा पढने के असह्य बोझ से बच्चों को मुक्त करने का निश्चय मात्र कर ले और अुनको अपने हाथ-पैरों का अुपयोग किसी लाभप्रद काम में करना सिखायें, तो शिक्षा की समस्या अपने-आप ही हल हो जाये। अिस तरह शराब की सारी आमदनी को आप निःसंकोच छोड़ सकते है। लेकिन पहले तो आपको अिस दूषित आमदनी को छोड़ देने का निश्चय करना चाहिये, और बाद मे अिस बात का विचार करना चाहिये कि शिक्षा के लिअे पैसे कहॉ से मिल सकते हैं। अिस तरह अेक बड़ा कदम अुठाकर आप अिसे शुरू कर सकते हैं।"

"लेकिन क्या शराब-बंदी की घोषणा-मात्र कर देने से शराबखोरी बन्द हो जायगी ? क्या यह नहीं हो सकता कि हमारे शराब की आमदनी को छोड़ देने पर भी शराबखोरी न मिटे, और मिटना तो दूर, जरा भी कम न हो ?"

"शराब-बन्दी की घोषणा का अर्थ यह नहीं है कि अुसके बाद आप हाथ-पर-हाथ धरकर बैठ जायें ! बल्कि आप तो हरअेक आदमी का अपने अिस काम में अुपयोग करेंगे। सरकारी नौकरों का दल आपके पास है ही—आबकारी अिन्स्पेक्टर अुनके अफसर और अुनके अधीन काम करनेवाले छोटे कर्मचारियों का सारा दल

आपके पास है। आप अुनसे कहिये, कि शराबखोरी की पूरी-पूरी बन्दी के सिवा और किसी काम के लिअे आपको अुनकी नौकरी की जरूरत नहीं है—वे अिसी शर्त पर नौकर रह सकते हैं ! शराब की हरअेक दूकान को आप खेल-कूद मनोरंजन का स्थान बना सकते हैं। जिन जगहों में शराबखोरी के लिअे ज्यादा से-ज्यादा सहूलियतें हों, वहाँ आप अधिक-से-अधिक प्रयत्न कीजिये। आप मिल-मालिकों और कारखानदारों से कहिये कि वे मजदूरों के लिअ अच्छे और सुन्दर अुपहारगृह कायम करें। अिन अुपहारगृहों में गन्ने के रस के समान ताजगी देनेवाले पेयों का प्रबंध किया जाये। खेल-कूद के साधन प्रस्तुत किये जायें, और मैजिक लैन्टर्न के प्रयोग दिखाये जायें, जिससे मजदूरों के दिल में यह खयाल पैदा हो, कि दूसरे आदमियों की तरह वे भी आदमी ही हैं ! बिना किसी अपवाद के हरअेक आदमी को आप-अपने काम में शरीक करें। देहाती स्कूलों के शिक्षक दूसरे अफसर और कर्मचारी सभी शराब-बन्दी के प्रचारक बन जायें।"

"बहुत ठीक; लेकिन कअी जगह गाँवों के पटेल और दूसरे आदमी खुद शराबियों के साथ बैठकर शराब पीते हैं अुनका क्या कीजियेगा ?"

"आपकी पाठशाला का हरअेक विद्यार्थी शराब-बन्दी का काम करेगा। जहाँ शराब की दूकानों का स्थान मनोरंजन के स्थानों ने ले लिया होगा, वहाँ वे जायेंगे; साधारण लोगों के साथ बैठकर रस का या अैसी ही किसी ताजगी देने-वाली चीज का अेकाध प्याला पियेंगे और अिस तरह अिन स्थानों की प्रतिष्ठा बढायेंगे।"

(कुछ ही दिन पहले मद्रास के अेक मन्त्री श्री रामन् मेनन ने अेक सभा में कहा था कि "अिस महान् प्रयोग में सारे देश को दिलचस्पी लेनी चाहिये। शराब-बन्दी किसी अेक आदमी का काम नहीं, बल्कि सारे देशका काम है।")

गांधीजी : "आप यह सोचकर हिम्मत न हारें, कि अमेरिका में शराब-बन्दी का प्रयोग असफल हुआ है; यह याद रखिये कि जिस देश में शराब का पीना दुर्गुण नहीं माना जाता, और जहाँ आमतौर पर करोड़ों लोग शराब पीते हैं, अुस अमेरिका में यह प्रयोग किया गया था। हमारे देश में तो सभी धर्म शराब को त्याज्य समझते हैं; और यहाँ शराब पीनेवाले करोड़ों नहीं, बल्कि कुछ अिने-गिने लोग ही हैं।"

अिससे पता चलता है, कि गांधीजी का मन किस दिशा में काम कर रहा है। अुनकी यह अिच्छा है कि दूसरे महासमाचादी भी अिसी दिशा में कार्य करने लगें। शराब-बन्दी के अुद्योग को सफल बनाने के लिअे राजाजी भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। वे कअी सभाओं में भाषण देते हैं। अैसी अेक सभा में अुन्होंने कहा था: "अगर लोगों में मन की अुदारता हो, तो अुन्हें कह देना चाहिये हम शिक्षा के बिना अपना काम चला लेंगे; लेकिन शराबखोरी की जड़ को तो खोदकर ही रहेंगे। आखिर अिस शिक्षा से फायदा ही क्या है? शराबी शराब के नशे मे चूर रहता है, और शिक्षित शिक्षा के विलास में मस्त; अैसे शिक्षित आदमी किसी शराबी से अधिक संस्कारी नहीं समझे जा सकते।"

('हरिजन,' अगस्त १९३७)

—महादेव देसाई

क्या साक्षरता नहीं?

अिस पत्र में शिक्षा-सम्बन्धी जो विचार मैंने प्रकट किये हैं, अुन पर मेरे पास बहुतेरी सम्मतियां आयी हैं। अिनमें जो सबसे महत्त्व की हैं, सम्भव है, आगे चल कर अुन्हें मैं अिस पत्र में दे सकूं। अिस समय तो सिर्फ अेक विद्वान पत्र-लेखक की शिकायत का जवाब देना चाहता हूं। अुनके विचार में मैंने साक्षरता की अुपेक्षा करने का अपराध किया है। मैंने जो कुछ लिखा है, अुसमें अैसी धारणा को पुष्ट करनेवाली कोअी चीज नहीं है। क्या मैंने यह नहीं कहा कि जो पाठशालाअें मेरी कल्पना के अनुसार चलेंगी, अुनमें बालकों को दी जानेवाली दस्तकारी की शिक्षा के मार्फ़त दूसरी सब प्रकार की शिक्षा भी मिलेगी? अिसमें साक्षरता का भी समावेश हो जाता है। मेरी योजना में हाथ से चित्र बनाने या अक्षर लिखने से पहले बालक औजारों का अुपयोग करना सीखेगा। आँखें जिस प्रकार संसार की दूसरी चीजों को देखती-परखती हैं, अुसी प्रकार अक्षरों और शब्दों के चित्रों को भी देखें-परखेंगी। कान वस्तुओं और वाक्यों के नाम और अर्थ को ग्रहण करते रहेंगे। शिक्षा की पद्धति पूरी तरह स्वाभाविक होगी; बालकों का मनोरंजन करनेवाली होगी; और अिसीलिअे देश में प्रचलित सभी

शिक्षा-प्रणालियों की अपेक्षा अधिक प्रगतिशील और सस्ती होगी। अिस प्रकार मेरी पाठशाला के बालक जितनी तेजी से लिखेंगे, अुससे कहीं ज्यादा गति से वे पढ़ेंगे। और जब वे लिखेंगे तो मेरी तरह 'चीटों के पैर' न लिखेंगे, बल्कि जिस तरह अपनी देखी-परखी चीजों के हूबहू चित्र बनायेंगे, अुसी तरह शुद्ध और सुन्दर अक्षर भी लिखेंगे। यदि मेरी कल्पना की पाठशालाअें कभी स्थापित हुईं; तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि वे वाचन के क्षेत्र में सबसे आगे बढ़ी हुई पाठशालाओं का मुकाबला कर सकेंगी; और अगर लेखन के बारे में भी सब अिस सिद्धान्त को स्वीकार करते हों कि वह आजकल की अधिकांश पाठशालाओं की तरह अशुद्ध नहीं, बल्कि शुद्ध होना चाहिये, तो मेरी पाठशालाअें अिसमें भी दूसरी किसी भी पाठशाला की बराबरी कर सकेंगी। सेगाँव की पाठशाला में आज बच्चे जिस तरीके से लिखते हैं, वह पुराना तरीका कहा जा सकता है। मेरे विचार में अिस तरह वे जो कुछ लिखते हैं, अुसमें कागज और स्लेट का अपव्यय मात्र होता है।

पाठशालाओं में संगीत

गान्धर्व महाविद्यालय के पंडित नारायण शास्त्री खरे ने बालक-बालिकाओं में शुद्ध संगीत का प्रचार करने के काम में अपना सारा जीवन खपा दिया है। खास तौर पर अहमदाबाद में और आम तौर पर सारे गुजरात में अिस ओर जो जोरों की प्रगति हो रही है, अुसका विवरण अुन्होंने मेरे पास भेजा है; और अिस बात पर अपना दुःख प्रकट किया है कि शिक्षा-विभाग के अधिकारी पाठ्यक्रम में संगीत को शामिल करने की बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। पण्डितजी की अनुभव सिद्ध सम्मति है कि प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में संगीत को जगह मिलनी ही चाहिये। अुनकी अिस सूचना का मैं हृदय से समर्थन करता हूँ। जितनी जरूरत बालक के हाथ को तालीम देने की है, अुतनी ही अुसके कण्ठ को सुधारने की भी है। बालकों और बालिकाओं की छिपी हुई शक्तियों को प्रकट करने के लिअे जरूरी है कि अुन्हें कवायद, हुनर-अुद्योग, चित्रकला और संगीत की शिक्षा साथ-साथ दी जाय।

मैं मानता हूँ कि अिसका अर्थ होता है, शिक्षा की वर्तमान पद्धति में क्रान्ति। अगर देश के भावी नागरिकों को अपने जीवन-कार्य की नींव मजबूत बनानी है, तो ये चार चीजें जरूरी हो जाती हैं। आप किसी भी प्राथमिक पाठशाला में जाकर देखें, आमतौर पर लड़के आपको अैसे मिलेंगे, जो गन्दे होंगे, अव्यवस्थित होंगे, और बेसुर-बेताल में गानेवाले होंगे। अिसलिअे मुझे अिसमें कोअी शंका नहीं मालूम होती कि जब प्रान्त-प्रान्त के शिक्षा-मंत्री अपने यहाँ शिक्षा की नअी पद्धति का निर्माण करके अुसे देश की आवश्यकताओं के अनुकूल बनायेंगे, तब वे अुन आवश्यक विषयों को अपने कार्यक्रम से अलग न रखेंगे, जिनका मैंने अूपर जिक्र किया है। प्राथमिक शिक्षा की मेरी योजना में तो अिन विषयों का समावेश होता ही है। जिस घड़ी हम अपने बच्चों के सिर से अेक कठिन विदेशी भाषा को सीखने का बोझ हटा लेंगे अुसी घड़ी से अिन विषयों की शिक्षा का प्रबन्ध आसान हो जायगा।

अिसमें सन्देह नहीं कि आज हमारे पास शिक्षकों का अैसा दल नहीं है, जो अिस नअी पद्धति के अनुसार काम कर सके। लेकिन यह समस्या तो प्रत्येक नये कार्य के साथ अुत्पन्न होती है। अगर मौजूदा शिक्षक अिन सब विषयों को सीखने के लिअे तैयार हों, तो अुन्हें वैसा मौका दिया जाय। साथ ही यह प्रबन्ध भी किया जाय कि जो अिन आवश्यक विषयों को सीख लें, अुनके वेतन में तुरन्त ही ठीक-ठीक वृद्धि कर दी जाय। प्राथमिक शिक्षा में जिन नये विषयों का समावेश होनेवाला है, अुन सबके लिअे अलग-अलग शिक्षक रखने की बात तो कल्पना से बाहर की बात है। यह बिलकुल अनावश्यक है, क्योंकि अिससे खर्च बहुत बढ़ जायगा। हो सकता है कि प्रायमरी स्कूलों के कुछ शिक्षक अितने कमजोर हों, कि थोड़े समय में वे अिन विषयों को सीख ही न सकें। लेकिन जो लड़के मैट्रिक तक पढ़े होंगे, अुन्हें संगीत, चित्रकला, कवायद और हुनर-अुद्योग के मूल तत्त्वों को सीखने में तीन महीने से ज्यादा समय न लगाना चाहिये। जब अेकबार वे अिन विषयों का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त कर लेंगे तो फिर पढ़ाते-पढ़ाते भी अपने अिस ज्ञान में बराबर तरक्की कर सकेंगे। लेकिन अिसमें शक नहीं कि यह काम तभी हो सकता है जब शिक्षकों में राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिअे अपनी योग्यता को बराबर बढ़ाते रहने की आतुरता हो और अुत्साह हो।
('हरिजन', ११ सितम्बर, १९३७)

स्वावलम्बी शिक्षा

मद्रास से डॉ० अे० लक्ष्मीरति लिखते हैं:—

"मैंने मिशनरियों द्वारा संचालित कुछ संस्थाअें देखी हैं। अिनमें मदरसे सिर्फ सुबह लगते हैं और शाम को विद्यार्थियों से खेती का अथवा किसी दस्तकारी का काम लिया जाता है। जैसा और जितना जिसका काम होता है, अुसके अनुसार अुसे मजदूरी भी दी जाती है। अिस प्रकार संस्था को न्यूनाधिक परिणाम में स्वावलम्बी बनाया जाता है। विद्यार्थी जब स्कूल से पास होकर निकलते हैं, तो अुन्हें अिस बात की चिन्ता नहीं रहती, कि कहाँ जायेंगे और क्या करेंगे। क्योंकि कम-से कम अितनी शिक्षा तो अुन्हें मिल ही जाती है, कि वे अपनी गुजर-बसर के लिअे कमा-खा लें। सरकारी शिक्षा-विभाग की जो पाठशालाअें अेक ही ढंग से और नीरस रीति से काम करती हैं, अुनके मुकाबले अिस तरह की पाठशालाओं का वातावरण बिलकुल ही भिन्न होता है। अिन पाठशालाओं में लड़के अधिक स्वस्थ पाये जाते हैं। अुनको अिस बात की खुशी रहती है कि अुन्होंने कुछ-न-कुछ अुपयोगी काम किया है। अुनके शरीर की गठन भी मजबूत होती है। खेती के मौसम में ये पाठशालाअें कुछ समय के लिअे बन्द रक्खी जाती हैं, क्योंकि अुन दिनों विद्यार्थियों की सारी शक्ति का अुपयोग खेती के काम में करना पड़ता है। शहरों में भी जिन लड़कों का रुझान व्यापार-धंधे की तरफ हो, अुनको वैसे धन्धों में लगाना चाहिये, जिससे वे अपने काम में विविधता का अनुभव कर सकें। जो लड़के गरीब हों, या जो पाठशाला द्वारा अपने भोजन का प्रबन्ध करना चाहते हों, अुन्हें सुबह की पढ़ाई के दरम्यान आध घंटे की छुट्टी में अेक बार खाने को दिया जाना चाहिये। अिस अुपाय से गरीब लड़के पाठशालाओं में दौड़े-दौड़े आयेंगे और अुनके मा-बाप भी अुन्हें नियमित रूप से मदरसे में जाने के लिअे प्रोत्साहित करते रहेंगे।

"अगर आधे दिन की पाठशाला की यह योजना मंजूर कर ली जाये, तो अिन पाठशालाओं में काम करनेवाले कअी शिक्षकों का अुपयोग गाँव के बालिग

स्त्री-पुरुषों की साक्षरता बढ़ाने में किया जा सकता है, और अिसके लिअे अलग से कुछ खर्च करने की कोअी आवश्यकता नहीं रहती है। मकानों का और पढ़ाअी के दूसरे सामान का भी अिसी तरह अुपयोग किया जा सकता है।

"मैं मद्रास के शिक्षा-मंत्री से मिला हूँ, और मैंने अुन्हें अेक पत्र भी लिख कर दिया है। अिस पत्र में मैंने लिखा है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी की गिरती हुअी तन्दुरुस्ती का मुख्य कारण पाठशाला का असुविधाजनक समय है। मेरे विचार में, हमारे सभी मदरसों और कॉलेजों की पढ़ाअी का समय सुबह ६ से ११ तक होना चाहिये। मदरसों में चार घंटे की पढ़ाअी काफी समझी जानी चाहिये। लड़के दुपहर का समय अपने घरों में बितायें, और शाम का खेल-कूद, कसरत और कवायद वगैरा में। कुछ लड़के जीविकोपार्जन के काम में और कुछ अपने माता-पिता की सहायता करने में अिस समय का अुपयोग करें। अिस तरीके से विद्यार्थी माँ-बाप के सम्पर्क में ज्यादा रहेंगे। मैं समझता हूँ, किसी भी धंधे की शिक्षा के लिअे अथवा परम्परागत कुशलता के विकास के लिअे अिस चीज की जरूरत है।

"अगर हम अिस बात को मान लें कि नागरिकों के शरीर की सुदृढ़ता ही राष्ट्र की सुदृढ़ता का आधार है, तो मेरे सुझाये हुअे परिवर्तन, दीखने में क्रांतिकारी होते हुअे भी, हिन्दुस्तान के रहन-सहन और यहाँ की आबोहवा के अनुकूल ठहरेंगे, और अधिकांश लोग अिनका स्वागत भी करेंगे।"

डॉ. लक्ष्मीपति ने पाठशालाओं की पढ़ाअी का समय सिर्फ सुबह ही रखने के सम्बन्ध में जो सूचना की है, अुनके बारे में शिक्षा विभाग के अधिकारियों से सिफारिश करने के सिवा, मैं और कुछ नहीं कहना चाहता। अुन्होंने अपने पत्र में अुन संस्थाओं का जिक्र किया है जो न्यूनाधिक अंश में स्वावलम्बी हैं। अगर ये संस्थाअें अपना कुछ खर्च या पूरा खर्च निकालना चाहती हैं, और विद्यार्थियों को भी समाज के लिअे अुपयोगी बनाना चाहती हैं, तो सिवा अिसके वे और कुछ कर भी नहीं सकतीं। फिर भी मैं देखता हूँ कि मेरी सूचना से कुछ शिक्षा-शास्त्रियों को आघात पहुँचा है। वजह अिसकी यह है कि आज जो कुछ चल रहा है, अुसके सिवा शिक्षा की दूसरी किसी पद्धति का अुन्हें पता ही नहीं है। शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने का विचार ही अुन्हें शिक्षा के सारे महत्त्व को घटानेवाला मालूम होता है। स्वावलम्बन की सूचना में वे केवल

अर्थोपार्जन की दृष्टि को ही मुख्य समझते हैं। आजकल मैं अेक पुस्तक पढ रहा हूँ, जिसमें यहूदियों के शिक्षा विषयक अेक प्रयोग का वर्णन है। अिस पुस्तक में यहूदी पाटशालाओं में दिये जानेवाले अुद्योग-धंधों के शिक्षण के विषय में लेखक ने अिस प्रकार लिखा है।

"अिसलिअे हाथ का काम करने में वे आनंद का अनुभव करते हैं; अिसके साथ ही बौद्धिक काम भी होते रहते हैं, जिससे हाथ की यह मेहनत अखरती नहीं और चूंकि अिसके साथ देशभक्ति का आदर्श भी सामने रहता है, अिसलिअे यह शिक्षा बहुत अुदात्त बन जाती है।"

अगर हमें सुयोग्य शिक्षक मिल गये, तो वे हमारे बालकों को शरीरश्रम का महत्त्व और गौरव समझायेंगे। बालक शरीर-श्रम को बुद्धि के विकास का अेक अविभाज्य अंग और साधन मानना सीखेंगे और यह समझने लगेंगे कि अपनी मेहनत से अपनी पढाओी का खर्च चुकाने में देश की सेवा है। मेरी अिन सब सूचनाओं का निचोड यह है कि बालकों को जो दस्तकारियाँ सिखायी जायेंगी, वे अुनके किसी प्रकार का अुत्पादक काम कराने की मंशा से नहीं, बल्कि अुनकी बुद्धि का विकास करने के खयाल से सिखायी जायेंगी। अिसमें कोअी शक नहीं कि अगर सरकार सात से चौदह बरस की अुम्र के बच्चों की पढाओी को अपने हाथ में ले, और अुत्पादक कार्यों द्वारा अुनके शरीर और मन का विकास करे, तो ये पाटशालाअें अवश्य ही स्वावलम्बी बननी चाहिये। अगर ये स्वावलंबी नहीं बन सकतीं, तो मैं कहूँगा कि या तो ये पाटशालाअें ही नहीं हैं, या अिनमें पढानेवाले शिक्षक निरे बेवकूफ हैं।

मान लीजिये कि हरअेक लड़का और लड़की यन्त्र की तरह नहीं, बल्कि दिमागी सूझ-बूझ के साथ काम करे, और किसी निष्णात मनुष्य की निगरानी में सबके साथ मिलकर दस्तकारी सीखने में दिलचस्पी दिखाये, तो अपनी पहले साल की पढाओी के बाद अुनके अिस सामूहिक श्रम की कीमत फी घंटा अेक आना होनी चाहिये; यानी रोज चार घंटे के हिसाब से महीने में २६ दिन काम करके हरअेक बालक प्रति मास ६॥ रु. कमायेगा। अब सवाल सिर्फ यह है कि अैसे लाभदायक श्रम में लाखों बालकों को लगाया जा सकेगा या नहीं? अेक साल की तालीम के बाद अगर हम अपने बालकों को अिस योग्य न बना सकें, कि वे फी घंटा अेक आना के हिसाब से काम करके अपनी बनायी चीजें बाजार में अिस

भाव से बेच सकें, तो समझना चाहिये कि हमारी बुद्धि का दिवाला निकल गया ! मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तान के गाँवों में देहाती लोग कहीं भी फी घंटा अेक आना नहीं कमाते। अिसकी वजह यह है कि गरीब और अमीर के बीच अिस देश में आज जो जमीन आसमान का फर्क है, अुसमें न तो हमें कोअी विषमता मालूम होती है, और न वह हमें अखरता ही है। दूसरा कारण यह है कि शहरवाले, शायद अनजान में, गाँवों का शोषण करने मे अंग्रेजी हुकूमत के साथ मिल गये हैं।

('हरिजन', ११ सितम्बर, १९३७)

शरीरश्रम क्या है ?

मध्यप्रांत के शिक्षा-मंत्री श्री० रविशंकर शुक्ल अपने शिक्षा-विभाग के डाअिरेक्टर मि० औवन और मि० डी-सिलवा के साथ अपने यहाँ के सभी शिक्षा-शास्त्रियों को लेकर पिछले हफ्ते गांधीजी से मिलने आये थे। आजकल की शिक्षा प्रणाली में जो क्रांति गांधीजी कराना चाहते हैं, अुसकी दिशा में, प्रयोग शुरू करने से पहले वे गांधीजी से अुनके विचार समझ लेना चाहते थे। गांधीजी ने अुनसे कहा : "बालक राज्य से जो कुछ पाते हैं, अुसका कुछ हिस्सा राज्य को वापस देने का तरीका अुन्हें सिखाकर मैं शिक्षा को स्वावलम्बी बनाना चाहता हूँ। आप जिसे आज प्राथमिक और माध्यमिक यानी हाअीस्कूल की शिक्षा कहते हैं, अुन दोनों को मैं जोड़ देना चाहता हूँ। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि आज हाअीस्कूल मे हमारे बच्चों को अंग्रेजी के टूटे-फूटे ज्ञान के साथ गणित, अितिहास और भूगोल के अुथले ज्ञान को छोड़कर और कुछ नहीं मिलता। अिनमें कुछ विषयों को तो वे प्राथमिक पाठशालाओं मे मातृभाषा द्वारा सीख चुके होते हैं। आप जिन विषयों की शिक्षा आज देते हैं अुन्हें कायम रखकर सिर्फ अंग्रेजी को पाठ्यक्रम से हटा दें, तो बालकों की सारी पढ़ाअी को ११ के बदले ७ वर्षों में पूरी कर सकते हैं, और जो मेहनत मजदूरी या शरीरश्रम का काम आप अुनसे लेंगे, अुनसे राज्य को काफी आमदनी भी हो सकती है। अिस शरीरश्रम को सारी शिक्षा के केन्द्र मे रखना पड़ेगा। मैंने सुना है कि मि० अेबट और मि०

वुड् ने गावों की शिक्षा के अेक महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में शारीरिक श्रम की अुपयोगिता को स्वीकार किया है। मुझे खुशी अिस बात की है कि प्रतिष्ठित शिक्षा-शास्त्री मेरी बात का समर्थन करते हैं। लेकिन मैं नहीं जानता कि जिस तरह का जोर शारीरिक श्रम पर मैं देता हूँ, वैसा ही वे भी देते हैं या नहीं। क्योंकि मैं तो कहता हूँ: "मन का विकास हाथ-पैर की अिस शिक्षा में स्कूल के संग्रहालय के लिअे चीजें बनाने या निकम्मे खिलौने तैयार करने का समावेश नहीं होता। बाजार में बिकने योग्य चीजें ही बननी चाहिये। कल-कारखानों के आरम्भकाल में बालक चाबुक या कोड़े के डर से काम करते थे; अिन स्कूलों में वे अैसा नहीं करेंगे। बल्कि वे अिसलिअे काम करेंगे कि अुससे दिलचस्पी है, और अुनकी बुद्धि का विकास होता है।"

मि० डी-सिलवा ने कहा: "मैं अिस बात को मानता हूँ कि शिक्षा सृजनात्मक कार्यों द्वारा दी जानी चाहिये: लेकिन सवाल यह है कि छोटी अुम्र के सुकुमार बालक बड़ों के साथ कैसे होड़ कर सकते हैं?"

"बालक बड़ों के साथ होड़ नहीं करेंगे। अुनकी बनायी हुअी चीजों को राज्य खरीद लेगा और अुन्हें बाजार में बेचेगा। आप अुन्हें अैसी चीजें बनाना सिखाअिये, जो सचमुच अुपयोगी हों। अुदाहरण के लिअे अिस चटाअी को ले लीजिये। घर में जिस काम को करते हुअे अुनका दिल अुचाट होता है, अुसीको स्कूल में वे बुद्धि-पूर्वक करेंगे। आज आप जो शिक्षा देते हैं, वह जब स्वावलंबी और स्वयंस्फूर्तिवाली बन जायेगी, तभी यह महाजटिल प्रश्न भी सरल हो जायेगा।"

"लेकिन बालकों को अिस तरह की शिक्षा दे सकने से पहले हमें शिक्षकों की मौजूदा पीढ़ी को मिटा देना होगा।"

"नहीं। अिसमें संधिकाल के बीच की स्थिति रखनी ही नहीं है। आपको तो यह काम शुरू कर देना है, और अिसे करते-करते नये शिक्षक भी तैयार करने हैं।"

अिस तरह की थोड़ी बातचीत के बाद, गांधीजी ने अिन मित्रों को सलाह दी कि वे नवभारत विद्यालय के आचार्य श्री आर्यनायकम् से, डॉ. भारतन् कुमारप्पा से, काका साहब से और दूसरे अनुभवी शिक्षा शास्त्रियों से, जो वर्धा में मौजूद

हैं, मिलें। अिस लेख के लिखते समय वे अेक व्यावहारिक योजना तैयार करने के विषय में बहुत ही अुपयोगी चर्चा कर रहे हैं। आशा है, अुनकी अिस चर्चा का परिणाम कुछ ही दिनों में मालूम हो सकेगा।

अिस बीच, गांधीजी शारीरिक श्रम का जो अर्थ करते हैं, अुस पर अधिक प्रकाश डालने में सहायक होनेवाली कुछ बातें नीचे देना चाहता हूँ। अेक सज्जन कुछ वर्षों से अपने स्कूल में हाथ-पैर की और साक्षरता की शिक्षा साथ-साथ देते रहे हैं, गांधीजी ने अुनके नाम जो पत्र लिखा है, अुसमें वह कहते हैं :

"अिस सिद्धान्त को, कि कताअी और पिंजाअी आदि बौद्धिक शिक्षा के साथ न होने चाहिये, आप शायद ठीक-से पचा नहीं पाये हैं। आपने अुसे बौद्धिक पाठ्यक्रम के पूरक के रूप में अपनाया है। मैं चाहता हूँ कि आप अिन दोनों के भेद को समझ लें। जैसे : अेक बढ़अी मुझे बढ़अीगिरी सिखाता है। मैं अुससे अिस चीज़ को यंत्र की तरह सीख लूँगा और फलतः कअी तरह के औज़ारों का अुपयोग करना भी सीख जाअूँगा। लेकिन अुससे मेरी बुद्धि का विकास शायद ही हो सकेगा। लेकिन अिसी चीज़ को जब मैं किसी बढ़अीगिरी के शास्त्र को जाननेवाले शिक्षक से सीखूँगा, तो वह बढ़अीगिरी के साथ-साथ मेरी बुद्धि का भी विकास करता चलेगा। अैसा करते करते मैं अेक होशियार बढ़अी ही नहीं, बल्कि अिंजीनियर भी बन जाअूँगा। क्योंकि वह कुशल बढ़अी मुझे गणित सिखायेगा, तरह-तरह की लकड़ियों का भेद समझायेगा; कौनसी लकड़ी कहाँ से आती है, अिसका पता देगा· और अिस प्रकार भूगोल के साथ खेती का भी थोड़ा ज्ञान करा देगा। वह मुझे अपने औज़ारों के चित्र बनाना भी सिखायेगा और अिस तरह प्राथमिक ज्यामिति का और गणित का ज्ञान करायेगा। हो सकता है कि आपने केवल वाचन-लेखन द्वारा दिये जानेवाले बौद्धिक शिक्षण का हाथ-पैर के साथ मेल न मिलाया हो। मुझे कबूल करना चाहिये कि अब तक तो मैंने यही कहा कि हाथ-पैर की शिक्षा बुद्धि की शिक्षा के साथ साथ दी जानी चाहिये और राष्ट्रीय शिक्षा में अुसका मुख्य स्थान होना चाहिये। लेकिन अब मैं यह कहता हूँ कि बुद्धि के विकास का मुख्य साधन हाथ-पैर की शिक्षा होनी चाहिये। जिस कारण से मैं अिस निर्णय पर पहुँचा हूँ, वह यह है कि मैं देख रहा हूँ कि आज हमारे बालकों की बुद्धि का दुरुपयोग हो रहा है। हमारे लड़कों को कुछ पता ही नहीं चलता कि स्कूल छोड़ने के बाद अुन्हें क्या करना

होगा। सच्ची शिक्षा तो वही कही जायेगी, जो बालकों की आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक शक्तियों को प्रकट करती, और अुनका विकास करती है। यदि अुन्हें अैसी शिक्षा मिले, तो वह बेकारी के लिअे बीमे का काम दे सकती है।"

('हरिजन', ११ सितम्बर १९३७)

—महादेव देसाअी

शिक्षा-मंत्रियों से—

दक्षिण भारत के अेक हाअीस्कूल के शिक्षक ने सरकार की ओर से विद्यार्थियों पर लगाये गये कुछ प्रतिबन्धों का वर्णन करते हुअे नीचे लिखे अवतरण भेजे हैं।

"नियम ९९ : जिस विद्यार्थी को सरकार के खिलाफ़ किसी भी आन्दोलन में हिस्सा लेने के जुर्म में अदालत से सजा हुअी है, पहले से सरकार की अिजाजत लिये बिना अुसे किसी स्कूल में दाखिल न किया जाय। स्कूल के किसी अफ़सर या नौकर को सरकार के विरुद्ध किसी भी राजनैतिक आन्दोलन में भाग न लेने दिया जाय: अुसे अैसी कोअी राय जाहिर न करने दी जाय, जिससे सरकार के विरुद्ध बदगुमानी या बेवफ़ाअी के भाव फैलें। विद्यार्थियों में शामिल न होने दिया जाय।

१००: यदि शिक्षक या संचालक अैसी हरकतें जारी रखें या विद्यार्थियों की अैसी हरकतों को बढ़ावा दें, या बरदाश्त कर लें, तो अुन्हें अुचित चेतावनी दे देने के बाद शिक्षा विभाग का डाअिरेक्टर अुस स्कूल को या तो अमान्य कर देगा, या सरकार की ओर से दी जानेवाली सहायता बन्द कर देगा या अुस स्कूल के विद्यार्थियों को सरकारी छात्रवृत्ति की परीक्षाओं में शामिल न होने देगा, और सरकारी छात्रवृत्ति पानेवाले विद्यार्थियों को अैसे स्कूल में दाखिल होने से रोकेगा।

१०१ : अगर किसी शिक्षक के सार्वजनिक भाषण विद्यार्थियों के सुकुमार मन में सरकार के प्रति अनादर पैदा करनेवाले हों, अुनके व्यवस्थित विकास को

रोकनेवाले हों; नागरिक के नाते अुनकी अुपयोगिता को कम करनेवाले हों विद्यार्थियों के भावी जीवन की प्रगति में बाधा डालनेवाले हों; या शिक्षक छुद विद्यार्थियों को राजनैतिक सभाओं में ले जाय, या जान-बूझकर अुन्हें अैसी किसी सभा में अुपस्थित रहने को प्रोत्साहित करे, या करता मालूम पड़े, तो यह समझा जायगा कि वह अपने कर्तव्य से चूका है और अुसके खिलाफ अनुशासन की कार्रवाअी की जायगी।

७९ : धार्मिक पुस्तकों को छोड़कर स्कूल में अैसी किसी भी पुस्तक का कभी अुपयोग न किया जाय, जो सरकार द्वारा स्वीकृत न हो। स्कूलों में किसी पुस्तक या पुस्तकों का अुपयोग करने या न करने देने का अधिकार सरकार ने अपने हाथ में रक्खा है।

८० : (अिस धारा के अनुसार यह लाजिमी है कि सभी बालकों को टीका लगा हुआ हो। यद्यपि आजकल अिसपर कोअी अमल नहीं होता, फिर भी जरूरी है कि अिसे रद्द ही करा दिया जाय।)

सरकार द्वारा स्वीकृत स्कूलों पर राष्ट्रीय झण्डा न फहराया जाय। कक्षाओं के अन्दर राष्ट्रीय नेताओं की तसवीरें न लटकायी जायें। जिस स्कूल के विद्यार्थी परीक्षा के समय प्रश्नों के जवाब में राष्ट्रीय विचार प्रकट करें, अुन्हें सजा दी जाय। ये और अैसे कअी सरकारी गश्ती हुक्म अब तक कायम हैं।

सरकार को अब यह तरीका अख्तियार करना चाहिये कि शिक्षक मण्डल की राय जाने बिना पाठ्यक्रम में कोअी परिवर्तन न किया जाय। मद्रास में अेक सभा 'दक्षिण-भारत शिक्षक-मण्डल' है। अिस मण्डल ने पहले की सरकार की अुस नीति को निन्दनीय बताया है, जिसके अनुसार चौथे दर्जे की परीक्षा वह खुद लेती थी।

जिन प्रान्तों की मातृभाषा हिन्दी न हो, अुनमें अिस विषय को अधिक प्रोत्साहन दिलाने के लिअे हिन्दी अध्यापकों को दूसरों की अपेक्षा अधिक आर्थिक सहायता दी जानी चाहिये, जिससे अिस विषय को स्थान देने में संचालकों का दिल बढ़े। हिन्दी-प्रचारकों को अुर्दू लिपि का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये।

मद्रास सरकार का अेक नियम है कि हेडमास्टरों को पाँच वर्ष के अन्दर पाठ्य पुस्तकें न बदलनी चाहिये। अिस नियम से छात्रों के माँ-बाप को कोअी

आर्थिक लाभ या किफायत नहीं हो सकती। क्योंकि जिनको अूपर के दर्जों में चढ़ाया जाता है, अुन्हें तो नअी पुस्तकें खरीदनी ही पड़ती हैं; और जो फेल किये जाते हैं; वे अधिकतर दूसरे मदरसों में दाखिल हो जाते हैं, जहाँ बिलकुल दूसरी पाठ्य पुस्तकें होती हैं। अिन नियमों की ७९ वीं धारा के कारण कार्य-शक्ति की गति रुकती है, और राष्ट्रीय विचारों की पुस्तकें चुनी नहीं जा सकतीं।

अिस आशय की सूचना तुरन्त ही दे दी जानी चाहिये कि दो साल के अन्दर हाअीस्कूल के सभी दर्जों में मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम बन जाये। छठे दर्जे में आजकल के चौथे दर्जे के बराबर अंग्रेजी सिखायी जानी चाहिये। अंग्रेजी की पढ़ाअी का समय कम कर देना चाहिये, और अुसके अैच्छिक वर्ग खोले जाने चाहिये। पाँचवीं कक्षा के पहले और दूसरे वर्ग में अंग्रेजी के बदले हिन्दी दाखिल की जानी चाहिये और गणित की पढ़ाअी कम कर देनी चाहिये। अिससे हिन्दी की तरफ यथेष्ट ध्यान दिया जा सकेगा, और आज जो फिजूल की चीजें सिखायी जाती हैं, अुनकी जगह हाथ के अुद्योगों की सच्ची शिक्षा दाखिल की जा सकेगी।

९९ वीं और १०० वीं दण्डवाली धाराअें रद्द की जायें और अुनके बदले ये तीन नियम बनाये जायँ कि हेडमास्टर अपने विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष सामाजिक कार्य द्वारा नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करने की, सफाअी, स्वास्थ्य और आहार सम्बन्धी ज्ञान की और वर्तमान समय के राजनैतिक और आर्थिक प्रश्नों की शिक्षा दें। अगर अैसा किया गया तो अवांछनीय और अज्ञानजन्य आन्दोलन अपने आप दब जायेंगे।

अिनमें से अधिकांश रुकावटें तो अेक मिनट की भी देर किये बिना हटा दी जानी चाहिये। क्या विद्यार्थी और क्या शिक्षक, किसी के भी मन पिंजरों में बन्द न किये जाने चाहिये। जो मार्ग शिक्षक को अथवा सरकार को अच्छे-से-अच्छा मालूम होता है शिक्षक विद्यार्थियों को अुसी मार्ग पर ले सकता है। अितना कर चुकने पर फिर अुसे कोअी अधिकार नहीं रह जाता कि वह अपने विद्यार्थियों के विचारों या भावों को दबाये। अिसका यह मतलब नहीं कि विद्यार्थियों पर किसी भी प्रकार का अंकुश ही न हो। बिना नियम पालन या अनुशासन के तो कोअी भी स्कूल नहीं चल सकता। लेकिन विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर कृत्रिम अंकुश रक्खा जाता है, अुसका नियम-पालन या

अनुशासन के साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है। जहाँ जासूसी से काम लिया जाता है, वहाँ तो यह अेकदम असम्भव है। सच तो यह है कि आज तक हमारे छात्र जिस प्रकार के वातावरण में रहते हैं, वह स्पष्ट ही अराष्ट्रीय रहा है। अब अिस तरह का वातावरण मिट जाना चाहिये और विद्यार्थियों को यह समझना चाहिये कि अपने अन्दर राष्ट्रीय भावना को बढ़ाना पाप नहीं, पुण्य है, सदाचार है।

('हरिजन,' १८ सितम्बर, १९३७)

आजकल गांधीजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, और अुन्हें पूरा-पूरा आराम करने की आवश्यकता है। फिर भी, जो कोअी भी सज्जन, जिन्होंने स्वावलम्बी शिक्षा के अुनके सिद्धांत पर कुछ सोचा है, अुसकी चर्चा के लिअे अुनके पास आते हैं या अिस नये प्रयोग को सफल बनाने में अपनी ओर से कुछ करने की अिच्छा प्रकट करते हैं, अुनके साथ अिस विषय की चर्चा करने की तत्परता वे बराबर बताते रहते हैं। दुर्बल स्वास्थ्य के कारण चर्चाअें कम होती हैं, संक्षिप्त होती हैं, लेकिन हरअेक चर्चा से कुछ-न-कुछ नअी जानने योग्य चीज निकलती है। और जब-जब गांधीजी अिस विषय की चर्चा करते हैं, तब-तब अेक-न-अेक नअी सूचना अथवा नया प्रकाश डालनेवाली बात कहते हैं। अेक बार अुन्होंने कहा कि कोअी यह न समझे कि स्वावलंबी शिक्षा की कल्पना संपूर्ण शराब-बंदी के कारण अुत्पन्न हुअी है; और फिर कहने लगे : "आपको अिस दृढ़ विश्वास के साथ ही आरंभ करना चाहिये कि आमदनी हो या न हो, शिक्षा दी जाये या न दी जाये, फिर भी संपूर्ण शराब-बंदी तो करनी ही होगी। अिसी तरह आपको यह दृढ़ श्रद्धा रखकर श्रीगणेश करना चाहिये, कि हिन्दुस्तान के गाँवों की आवश्यकताओं को देखते हुअे, अगर हम गाँवों की शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहते हैं, तो वह शिक्षा स्वावलम्बी ही होनी चाहिये।"

अेक शिक्षा-शास्त्री, जो गांधीजी से चर्चा कर रहे थे, बोले : "पहली श्रद्धा तो मेरे मन में गहरी जड़ जमा चुकी है और अुसी को मैं बहुत बड़ी शिक्षा समझता हूँ। अतअेव शराब-बंदी को सफल बनाने के लिअे शिक्षा का बिलकुल ही त्याग करना पड़े तो मैं जरा भी न हिचकिचाअूँगा। लेकिन दूसरी श्रद्धा मेरे मन में बस नहीं रही है। मैं आज भी यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि शिक्षा स्वावलंबी बनायी जा सकती है!"

"मैं चाहता हूँ कि अिसमें भी आप वैसी ही श्रद्धा से काम शुरू करें। जब आप अिसका अमल शुरू करेंगे, तो अिसके साधन और मार्ग आपको सहज ही सूझने लगेंगे। अिस तरह का प्रयोग मैं खुद ही करता; अब भी अगर अीश्वर की कृपा रही तो मैं अपने भरसक यह सिद्ध करने की कोशिश करूँगा कि शिक्षा किस प्रकार स्वावलंबी बन सकती है। लेकिन पिछले कअी वर्षों से मेरा सारा समय दूसरे-दूसरे कार्यों में खर्च होता रहा है और शायद वे काम भी अुतने ही महत्व के थे। लेकिन अिधर सेगाँव में रहने के कारण अिसके विषय में मुझे बहुत ही पक्का विश्वास हो गया है। अब तक हमने लड़कों के दिमाग में हर तरह की जानकारी ठूँसने का ही यत्न किया है; मगर अिस बात को कभी सोचा भी नहीं कि अुनके दिमाग कैसे खुलें और किस तरह अुनकी तरक्की हो। अब हमें 'रुक जाओ!' (हॉल्ट) कहकर शारीरिक काम द्वारा बालक को समुचित शिक्षा देने के काम में अपनी शक्तियाँ लगा देनी चाहिये। शिक्षा में शारीरिक काम का स्थान गौण न हो; बल्कि वही बौद्धिक शिक्षा का मुख्य साधन रहे।"

"मैं अिस चीज को भी समझ सकता हूँ, लेकिन आप यह शर्त क्यों लगाते हैं, कि अिससे स्कूल का सब खर्च भी निकलना चाहिये?"

"अिस शर्त से हम अिस बात की परीक्षा कर सकेंगे, कि अिस तरह का शारीरिक काम कितना मूल्यवान है। चौदह वर्ष की अुम्र में, अर्थात् ७ साल की पढ़ाअी समाप्त करने के बाद, जब बालक स्कूल से निकले, तो अुसमें कुछ कमाने की शक्ति आ जानी चाहिये। आज भी गरीबों के बालक अपने-आप अपने माँ-बाप की सहायता करते हैं। अुनके मन में यह खयाल होता है, कि अगर हम अपने माँ-बाप के साथ काम न करेंगे, तो क्या वे खायेंगे, और क्या हमें खिलायेंगे? यही अेक शिक्षा है। अिसी तरह सरकार सात साल की अुमर में बालक को अपने कब्जे में ले, और अुसे कमाअू बनाकर वापस माँ-बाप को सौंप दे। अिस तरीके से आप शिक्षा भी देंगे और साथ ही बेकारी की जड़ को भी काटने चलेंगे। यह आवश्यक है कि किसी-न किसी धन्धे की शिक्षा बच्चों को जरूर दें। अिस मुख्य अुद्योग के आस-पास आप अुस शिक्षा का प्रबन्ध करेंगे, जो बालक के मस्तिष्क, शरीर, साहित्य और कलाभिरुचि के विकास में सहायक होगी। बालक जो कारीगरी सीखेगा, अुसका वह निष्णात भी बनेगा?"

"मान लीजिये कि अेक लड़का खादी-निर्माण की कला और शास्त्र को

सीखना शुरू करता है। तो क्या आप यह समझते हैं कि अुस कला में निष्णात बनने के लिअे अुसे पूरे सात वर्ष लग जायेंगे?'

"जी हाँ; अगर वह यन्त्र की तरह न सीखे, तो सात साल जरूर लगने चाहिये। हम अितिहास के अथवा भाषा के अध्ययन के लिअे सारे वर्ष क्यों खर्च करते हैं? अिन विषयों को अबतक जो बनावटी बड़प्पन दिया जाता है, क्या अुनके मुकाबिले अिस अुद्योग का महत्त्व कुछ कम है?'

"लेकिन आप तो प्रधानतया कताअी और पिंजाअी का विचार करते हैं। अिससे तो अैसा मालूम होता है कि आप अिन स्कूलों को बुनाअीशाला बनाना चाहते हैं। किसी बालक की रुचि बुनाअी की तरफ न हो और दूसरी किसी चीज में हो, तो अुसके लिअे क्या कीजियेगा?"

"सच है; अुस दशा में हम अुसे कोअी दूसरा अुद्योग सिखायेंगे। लेकिन आपको जानना चाहिये कि अेक स्कूल में बहुत से अुद्योग सिखाने का प्रबन्ध न हो सकेगा। खयाल यह है कि हमें हर २५ विद्यार्थियों के लिअे अेक शिक्षक रखना चाहिये; और जितने शिक्षक मिलें, अुतने पचीस-पचीस विद्यार्थियों की कक्षाओं या पाठशालाओं का प्रबन्ध करना चाहिये, और अिनमें से हरअेक पाठशाला में अेक-अेक अलग-अलग अुद्योग का, जैसे, बढ़अीगिरी, लुहारी, चमारी या मोचीगिरी का शिक्षण देना चाहिये। आपको सिर्फ अेक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि अिनमें से हरअेक अुद्योग द्वारा हमें बालकों के मन का विकास करना है। अिसके सिवा अेक दूसरी बात पर भी मैं जोर देना चाहता हूँ—आपको शहरों का खयाल छोड़ देना चाहिये और सारी शक्ति का अुपयोग गाँव में करना चाहिये। गाँव महासागर है और शहर अिस सागर में बूँद की तरह है। अिसीलिअे अिसके सिलसिले में आप अीट वगैरा बनाने का विचार नहीं कर सकते। जो लड़के अिंजीनियर बनना चाहेंगे, वे सात साल की पढ़ाअी के बाद अुच्च और विशिष्ट अध्ययन के लिअे कॉलेजों में जायेंगे।

"अेक और चीज पर भी मैं जोर देना चाहता हूँ। हमारी आदत हो गयी है, कि हम गाँवों के अुद्योग-धन्धों को कोअी चीज नहीं समझते। क्योंकि हमने शिक्षा को शारीरिक श्रम से अलग रखा है। शरीरश्रम को कुछ हलका स्थान दिया गया है, और वर्णसंकरता के प्रचार के कारण आज हम कत्तिनों, जुलाहों,

बढ़ञियों और मोची वगैरा को, हलकी या गुलाम जाति का समझने लगे हैं। चूंकि हमने अुद्योग को कुछ हलका समझा, यानी बुद्धिमानों की शान के कुछ खिलाफ समझा, अिसीलिअे हमारे यहाँ क्राम्पटन और हारग्रीव के समान यंत्रशास्त्री अुत्पन्न न हुअे। यदि हमने अिन धन्धों की स्वतन्त्र प्रतिष्ठा मानी होती, और अिनके दर्जे को विद्वत्ता के समान ही अूँचा समझा होता, तो हमारे कारीगरों में से भी बड़े-बड़े आविष्कार अवश्य पैदा हुअे होते। अिसमें कोअी शक नहीं कि यंत्रों के आविष्कार के साथ-ही-साथ मिलें खड़ी हो गयीं और अुन्होंने हजारों को बेकार बना दिया। मैं मानता हूँ कि यह अेक आसुरी चीज थी। यदि हम अपनी समस्त शक्ति को गाँवों में खर्च करेंगे, तो कला-कारीगरी या दस्तकारियों के अेकाग्र अभ्यास से जो शोधक बुद्धि जाग्रत होगी, वह गाँवों के तमाम लोगों की जरूरतों को पूरा करेगी।"

('हरिजन', १८ सितम्बर, १९३७)

राष्ट्रीय शिक्षकों से—

जो किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं, अुन शिक्षकों से मेरी यह सूचना है कि प्राथमिक शिक्षा के बारे में आजकल मैं जो कुछ लिख रहा हूँ यदि वह अुनके गले अुतरता हो, तो वे यथाशक्ति अुस पर अमल करें, अुसका ठीक-ठीक हिसाब रक्खें, और अपने अनुभव मुझे लिख भेजें। जो मेरी पद्धति के अनुसार पाठशाला चलाने को तैयार हों, अिस समय फुरसत में हों, अथवा जिस काम में लगे हुअे हैं, अुसे छोड़कर अिस तरह की पाठशाला का संचालन करने को तैयार हों, वे भी मुझे लिखें।

मैं मानता हूँ कि प्रायमरी स्कूलों को स्वावलम्बी बनाने के लिअे हमारी पहली नजर कताअी वगैरा के अुद्योग पर ही पड़ती है। अिसमें कपास की चिनाअी से लेकर बेलबूटेदार यानी नक्शीदार खादी बनाने तक की क्रियाओं का समावेश हो जाता है। अिसके लिअे फी घंटा कम-से-कम दो पैसे की मजदूरी गिनी जानी चाहिये। स्कूल का काम पाँच घंटे का रहे, जिसमें चार घंटे मजदूरी

क और अेक घंटा अुस अुद्योग के शास्त्र को और दूसरे विषयों को, जो अुद्योगों के साथ न सिखाये जा सकते हों, सिखाने का रहे। अुद्योग सिखाते समय जो विषय सिखाये जायेंगे, अुनमें अेक हद तक या पूरी हद तक अितिहास, भूगोल और गणित-शास्त्र का समावेश रहेगा। अिसमें भाषा के ज्ञान का, अुसके अंग-रूप व्याकरण का और शुद्ध-शुद्ध अुच्चारण का भी समावेश होगा, क्योंकि शिक्षक अुद्योग को सब प्रकार के ज्ञान का वाहन समझेगा और अुसके द्वारा बालकों की बोली को शुद्ध और स्पष्ट बनायेगा। अिस प्रयत्न में व्याकरण का ज्ञान वह सहज ही करा सकेगा। गिनने की क्रिया तो बालकों को शुरू से ही सीखनी होगी। अर्थात् ज्ञान का आरंभ गणित से होगा। सफ़ाअी और सुघराअी कोअी अलग विषय नहीं रहेंगी। बालकों के प्रत्येक काम में सफ़ाअी और सुघराअी होनी ही चाहिये। साफ-सुथरेपन के साथ ही वे स्कूल में प्रवेश करेंगे। अिसलिअे अिस वक्त मेरी कल्पना में अैसा अेक भी विषय नहीं आता, जो अुद्योग के साथ-साथ बालकों को न सिखाया जा सके।

मेरी यह कल्पना जरूर है कि जिस प्रकार मैंने सीखने के विषयों को अलग-अलग नहीं माना है, बल्कि सबको अेक-दूसरे में ओत-प्रोत समझा है, और सबकी अुत्पत्ति अेक ही चीज से हुअी है, अुसी प्रकार शिक्षक की कल्पना भी अेक ही की है। हरअेक विषय के अलग-अलग शिक्षक नहीं होंगे। अेक ही शिक्षक होगा। हाँ, साल के हिसाब से जरूर अलग-अलग शिक्षक होंगे। यानी अगर सात दर्जे हैं, तो सात शिक्षक रहेंगे। और अेक शिक्षक के पास पच्चीस से ज्यादा लडके न होंगे। अगर शिक्षा अनिवार्य की जाये, तो मैं यह आवश्यक मानूँगा कि शुरू ही से लड़कों और लडकियों की कक्षाअें अलग-अलग रखी जायें। क्योंकि आखिर में सबको अेक ही तरह के धन्धे नहीं सीखने होंगे। अिसलिअे मैं मानता हूँ कि शुरू से अलग-अलग श्रेणियों का रहना अधिक सुविधाजनक होगा।

अिस पद्धति में घंटों की और शिक्षकों की संख्या में, और विषयों की व्यवस्था में परिवर्तन की गुंजाअिश हो सकती है। लेकिन जिस सिद्धान्त को आधार मानकर प्रत्येक शाला का संचालन होगा, अुसे अटल समझकर ही मेरी कल्पना की यह पाठशाला चल सकती है। अिन सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करके किसी प्रकार के मूर्त्त परिणाम अभी तक चाहे न बताये जा सकें

हों, लेकिन जो मंत्री अिस प्रकार की शिक्षा को शुरू करना चाहते हैं, अुनको अिन सिद्धांतों पर अवश्य ही श्रद्धा होनी चाहिये। चूँकि अिस श्रद्धा का आधार बुद्धि होगी, अिसलिअे अिसका स्वरूप अन्ध-श्रद्धा का नहीं, ज्ञानमयी श्रद्धा का होगा। ये सिद्धांत दो हैं —

(१) शिक्षा का वाहन कोअी भी ग्रामोपयोग अुद्योग हो और

(२) सब मिलकर शिक्षा स्वावलम्बी हो, अर्थात् शुरू के अेक-दो साल कुछ कम स्वावलम्बी भले हों, लेकिन सात साल की औसत निकालने पर आमदनी और खर्च का हिसाब बराबर होना चाहिये। मैंने अिस शिक्षा के लिअे सात साल माने हैं, लेकिन अिनमें घट-बढ़ हो सकती है।

(हरिजनबन्धु, १९ सितम्बर, १९३७)

बम्बई में प्राथमिक शिक्षा

अब तक मैंने जो चर्चा की है, वह गाँवों की शिक्षा के विषय में की है, क्योंकि वही सारे हिन्दुस्तान का प्रश्न है। यदि यह सीधी तरह हल हो सके, तो शहरों की कोअी खास कठिनाअी न रह जाये। शहरों के विषय में मैंने अब तक अिसी वजह से कुछ नहीं लिखा। लेकिन शिक्षा में रस लेनेवाले बम्बअी के अेक नागरिक का नीचे लिखा प्रश्न अुत्तर की अपेक्षा करता है :

"प्राथमिक शिक्षा के भारी खर्च का कोअी रास्ता निकालने में अिस समय काँग्रेसी मंत्रिमंडल यत्नशील मालूम होता है। यह सुझाया गया है कि शिक्षा का खर्च शिक्षा ही से निकल सकता है। बम्बअी-जैसे शहर में अिस दिशा में किस तरह और किस हद तक बढ़ा जा सकता है, अिसकी चर्चा आवश्यक मालूम होती है। कहा जाता है कि अिस साल बम्बअी कॉरपोरेशन ने शिक्षा पर करीब ३५–३६ लाख रुपया खर्च करने का बजट बनाया है, और अगर सारे शहर में शिक्षा को अनिवार्य कर दिया जाये, तो अिस खर्च में कअी लाख रुपयों की रकम और बढ़ जाये। शिक्षकों के वेतन में और किराये में क्रमशः बीस लाख और चार लाख से ज्यादा रकम खर्च होती है। फी विद्यार्थी सालाना खर्च की औसत

४० से ४२ रुपये तक आती है। अगर विद्यार्थी अपनी पढाअी के साथ साथ साल में अितने रुपयों का काम भी करके दें, तभी शिक्षा का खर्च शिक्षा से निकल सकता है। लेकिन यह होगा किस तरह?"

मेरा तो दृढ विश्वास है कि अगर बम्बअी के स्कूलों में भी अुद्योग के तत्त्व को स्थान दिया जाय, तो अुससे बम्बअी के बालकों को और बम्बअी शहर को फायदा ही पहुँचेगा। शहर में पले-पुसे बालक तोते की तरह कविता रटेंगे और सुनायेंगे; नाचेंगे; हाव-भाव और अभिनय करके दिखा देंगे; बैंड-बाजे बजा सकेंगे; कसरत-कवायद और कूच करना जानेंगे; अितिहास और भूगोल के प्रश्नों का अुत्तर देंगे और थोड़ा-बहुत अंकगणित भी जान लेंगे। लेकिन अिससे आगे वे न बढ़ सकेंगे। हाँ, अेक बात मैं भूला; वे थोड़ी अंग्रेजी भी जरूर जानते होंगे। लेकिन अेक टूटी हुअी कुर्सी को दुरुस्त करना या फटे हुअे कपड़े को सी लेना अुनके लिअे मुश्किल होगा। वे अिसे नहीं कर सकेंगे। अैसे मामलों में हमारे शहर के लड़के जितने अपंग या निकम्मे पाये जाते हैं, अुतने अपंग लड़के दक्षिण ऑफ्रिका और अिंगलैंड की अपनी यात्राओं में मैंने कहीं नहीं देखे।

अिसलिअे मैं तो मानता ही हूँ कि अगर शहरों में भी अुद्योग द्वारा शिक्षा दी जाये, तो अुससे बालकों को बेहद लाभ होगा। और, पूरे ३५ लाख रुपये नहीं, तो अुनका अेक बड़ा हिस्सा जरूर बच रहेगा। ४२ रु. के बदले फी बालक साल के ४० रु. का खर्च भी मान लें, तो यह कहा जा सकता है कि बम्बअीवाले ८७ ५०० बालकों को पढाते हैं। अगर १० लाख की बस्ती हो, तो बालकों की संख्या कम-से-कम डेढ लाख होनी चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि लगभग ६२,००० बालक बिना शिक्षा के रह जाते हैं। अगर यह मान लें कि ये सब गरीब नहीं हैं, और बहुतेरे खानगी मदरसों में जाते हैं, तब भी ५६,००० बालक रह जाते हैं। अिनके लिअे आज के हिसाब से २२,२४००० रुपयों की जरूरत होगी। बम्बअी कब तो अितने रुपयों का प्रबन्ध करे, और कब अिन सब बालकों को पढावे? और क्या पढावे?

मैं मानता हूँ कि शिक्षा अनिवार्य और मुफ्त होनी ही चाहिये। लेकिन बालकों को अुपयोगी अुद्योग सिखाकर अुसके द्वारा ही अुनके शरीर और मन का विकास किया जाना चाहिये। मैं अिसमें भी पैसे का जो हिसाब लगाता हूँ, वह अनुपयुक्त न समझा जाना चाहिये। अर्थशास्त्र नैतिक और अनैतिक, दोनों

प्रकार का होता है। नैतिक अर्थशास्त्र के दोनों पहलू अेक-से होते हैं, जब कि अनैतिक में जिसकी लाठी अुसकी भैंसवाली बात होती है। अुसके विस्तार का सारा दारोमदार अुसकी ताकत पर है। अनैतिक अर्थशास्त्र जिस तरह घातक है, अुसी तरह नैतिक आवश्यक है। अिसके अभाव में धर्म की परख को और अुसके पालन को मैं असंभव समझता हूँ।

मेरा नैतिक शास्त्र मुझे ज़रूर ही यह सुझाता है कि बम्बअी के बालक हर महीने हँसते-खेलते तीन रुपये का काम करके दें। अगर चार घंटे काम करें और हर घंटे के दो पैसे भी धर लें, तो महीने के २५ दिनों में वे ५० आने का काम करेंगे, यानी हर महीने स्कूल में रहकर रु. ३–२–० कमा लेंगे।

यह मानने की कोअी वजह नहीं मालूम होती कि जब शिक्षा के ढंग पर अुद्योग सिखाया जायेगा, तो बालक काम के बोझ से दब जायेंगे। नाम-मात्र के शिक्षक तो अितिहास, भूगोल-जैसे सरल और दिलचस्प विषयों को भी अैसे ढंग से सिखाते हैं, कि लड़कों का दिल अूबने लगता है। लेकिन मैंने अपनी आँखों देखा है, कि जो सच्चे शिक्षक होते हैं, वे अपने शिष्यों को हँसते-खेलते अुद्योग सिखाते हैं। मैं आशा रखता हूँ कि कोअी मुझसे यह सवाल न करेगा कि अैसे शिक्षक कहाँ से आयेंगे। अेक बार जब किसी चीज को हम करने योग्य मान लेते हैं, तो फिर अुसके करनेवालों को तैयार करना सहज ही अुन व्यक्तियों और संस्थाओं का धर्म हो जाता है, जो अुस चीज को मानती हैं। अिसमें शक नहीं कि अैसे शिक्षकों को तैयार करने में थोड़ा समय चला जायगा। लेकिन आजकल के अनुपयुक्त शिक्षण के निर्माण में और अुनके लिअे शिक्षक तैयार करने में जितना समय खर्च हुआ है, अुसका शतांश भी अिसमें खर्च नहीं होगा। और पैसे का खर्च तो अुसके मुकाबले कम होगा ही। अगर बम्बअी शहर की म्युनिसिपैलिटी का कारोबार मेरे हाथ में हो, तो अैसे शिक्षण-शास्त्रियों की अेक छोटी-सी समिति स्थापित करूँगा, जिन्हें मेरी कल्पना में थोड़ी भी श्रद्धा है, और अुनसे यह आशा रक्खूँगा कि वे अेक महीने के अन्दर अपनी योजना बनाकर दें, ताकि तुरन्त ही अुसे अमल में लाया जा सके। अिसमें यह विश्वास अवश्य आ जाता है कि मुझे अपनी अिस कल्पना की शक्यता में अटल श्रद्धा है। अुधार ली हुअी श्रद्धा से आजतक कोअी अच्छे और बड़े काम नहीं हुअे।

अेक प्रश्न रह जाता है। शहरों में कौन-से अुद्योग सहूलियत के साथ सिखाये जा सकते है? मेरे पास तो अिसका अुत्तर भी तैयार ही है। मैं हिन्दुस्तान के गाँवों को सबल और सुपुष्ट देखना चाहता हूँ। आजकल तो गाँव शहरों के लिअे जीते हैं। अुन पर निर्भर करते हैं। यह अनर्थ है। शहर गाँवों पर निर्भर करने लगें, अपने बल को गाँवों से प्राप्त करें, अर्थात् गाँवों से लाभ अुठाने के बदले स्वयं गाँवों को लाभ पहुँचायें, तो हमारा मतलब सिद्ध हो और अर्थ-शास्त्र नैतिक बने। अैसे शुद्ध अर्थ की सिद्धि के लिअे शहरी बालकों के अुद्योग का देहाती बालकों के साथ सीधा सम्बन्ध होना चाहिये। अिसके लिअे अिस समय, मुझे जो कुछ सूझ रहा है, सो तो पिंजाअी से लेकर बुनाअी तक के अुद्योग हैं। आज भी कुछ अिसी तरह हो रहा है। गाँवों से कपास आती है, और मिलों में कपड़ा बुना जाता है। अिसमें शुरू से आखिर तक धन की बरबादी की जाती है। कपास ज्यों-त्यों बोयी जाती है, जैसे-तैसे बीनी जाती है और अुसी ढंग से साफ भी की जाती है। किसान अिस कपास को अधिकतर घाटा सहकर राक्षसी जीनों में बेचते हैं; वहाँ बिनौले अलग होते हैं, कपास कुचली और अधमरी की जाती है और फिर वह गाठों में बँधकर मिलों में पहुँचायी जाती है। वहाँ वह धुनी जाती है, कतती है और बुनी जाती है। ये सारी क्रियाअें अिस तरह होती हैं, कि कपास के सत्व को जलाकर अुसे निर्जीव बना देती हैं। मेरी अिस भाषा से कोअी द्वेष न करे। कपास में जीव तो है ही। अिस जीव के प्रति मनुष्य या तो कोमलता का व्यवहार करता है या राक्षसी। आजकल के व्यवहार को मैं राक्षसी व्यवहार मानता हूँ।

कपास की कुछ क्रियाअें गाँवों और शहरों, दोनों में हो सकती हैं। अैसा होने पर ही शहर और गाँव का संबंध नैतिक और शुद्ध बन सकता है। अिससे दोनों की वृद्धि होती है, और आजकल की अव्यवस्था, भय, शंका और द्वेष या तो निर्मूल हो जाते हैं, या निस्तेज पड़ जाते हैं। अिस प्रकार गाँवों का पुनरुद्धार हो सकता है। अिस कल्पना को अमली रूप देने में बहुत थोड़े खर्च की जरूरत रहती है। बड़ी आसानी से अिसे मूर्त रूप दिया जा सकता है। परदेशी बुद्धि या परदेशी यंत्रों की आवश्यकता नहीं रहती। देश की अलौकिक या असाधारण बुद्धि भी आवश्यक नहीं होती। देश में अेक ओर घोर गरीबी और दूसरी ओर अमीरी का जो दौर चल रहा है, वह मिट सकता है। दोनों में मेल

हो सकता है। और लड़ाअी-झगडे का व खून-खराबी का जो डर हमेशा हम पर सवार रहता है, वह दूर हो सकता है। लेकिन बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे ? बम्बअी कारपोरेशन का दिल मेरी कल्पना की ओर किस तरह रुजू हो ? बनिस्बत अिसके कि यहाँ सेगाँव में बैठे बैठे मैं अिसका जवाब दूँ, अिस पत्र के लेखक, बम्बअी के यह विद्या-प्रेमी नागरिक ही ज्यादा अच्छी तरह दे सकते हैं।

(हरिजन-बंधु, २६ सितम्बर, १९३७)

स्वावलम्बी पाठशालाअें

"हमारी वर्तमान आर्थिक स्थिति का मुख्य स्वरूप यह है कि देश की साधन-सामग्री पर आधार रखनेवाले लोगों की संख्या का बोझ बढ़ता जाता है। अुदाहरण के लिअे हिन्दुस्तान में अैसे विशाल भू-भाग नहीं हैं, जिनका पता अब तक न लगाया गया हो। अिसी तरह हमारे देश में अुपनिवेशों की और पूँजी की भी अधिकता नहीं है। अिसलिअे हमारी मौजूदा साधन-सामग्री से तैयार माल पैदा करने का काम अुन्हीं लोगों को सौंपा जाना चाहिये, जिन्होंने अिसकी खास शिक्षा पायी हो। अगर १०० आदमी जमीन के सौ अलग-अलग टुकड़ों को जोतते हैं, तो सिर्फ ५० आदमियों की जरूरत को पूरा करनेवाला अनाज पैदा करते हैं। लेकिन अगर ये सभी टुकड़े मिला दिये जायं और २० निष्णात आदमी अिस पर खेती करें, तो यही जमीन १०० आदमियों का निर्वाह कर सकती है। आजकल अैसे आविष्कार हुअे हैं, जिससे मजदूर के गृह-जीवन को अस्त-व्यस्त किये बिना, और अुसकी स्वतन्त्रता को कुचले बिना, अुसकी अुत्पादन-शक्ति बढ़ायी जा सकती है। अिसलिअे अब अिस बात की खास जरूरत पैदा हो गयी है कि अधिक लोगों को काम करने से रोका जाय। ५० साल की अुमर के बाद लोगों को पेंशन दे देने के रिवाज से बहुत नुकसान हो रहा है; क्योंकि साधारण मनुष्य की मानसिक और शारीरिक शक्ति का अिस अुमर के बाद ही अधिकाधिक विकास होता है। अिसलिअे मुनासिब तो यह है कि जबतक लोग पूरी तालीम पाकर तैयार न हो जायें, अुन्हें गृह-जीवन में प्रवेश करने से रोका जाय !

"हिन्दुस्तान की अवनति का मुख्य कारण यह है, कि यहाँ मजदूर अपने जीवन का आरम्भ बहुत ही पहले करते हैं। बढ़ओी अपने लड़के को अपने धन्धे में अितनी जल्दी दाखिल करता है कि लड़का १२ वर्ष की अुमर में अपनी अुपार्जन-शक्ति की चरमसीमा तक पहुँच जाता है। अिसके बाद वह शादी करता है, और कुछ ही समय के अन्दर अपना धंधा शुरू कर देता है। अिसके कारण अुत्पादन और विभाजन के नये तरीके अुसके दिमाग में अुतर ही नहीं पाते। अुसको अिस बात की कोओी तमीज नहीं होती कि आर्थिक दृष्टि से अुनकी मजदूरी का क्या महत्त्व है। कोओी भी आदमी अैसे कारीगर को धोका दे सकता है, और अुसका शोषण कर सकता है। वह अपनी छोटी-सी सकुचित दुनिया में कुअें के मेंढक की तरह जीता है, और किसी तरह अपना गुजर-बसर करने और परिवार को बढ़ाने मे संतुष्ट रहता है। हिन्दुस्तान में जो संकुचितता, सन्तोष-प्रियता, भाग्यवाद, जाति-पाँति के बन्धन और शराब और अफीम के व्यसन पाये जाते हैं, अुन सबकी जड़ में यही चीज है। मैं जब लंका में चाय के बगीचे देखने गया, तो सबसे ज्यादा दुःख मुझे वहाँ बालकों को मजदूरी करते देखकर हुआ। मदरसे तो वहाँ थे, लेकिन माँ बाप का झुकाव लड़कों से मजदूरी कराने की तरफ ज्यादा देखा। बड़ों की पुश्त हमेशा आनेवाली छोटी पुश्त की तरफ के अपने कर्त्तव्य को, बला की तरह सिर से टालना चाहती है। सरकार का काम है, कि वह अुन प्रवृत्तियों को रोके, जो व्यक्तियों के लिअे फायदेमद होते हुअे भी समाज के लिअे नुकसानदेह हों। लंका-जैसे देश में, जहाँ प्राकृतिक साधनों के भण्डारों का पता लगाकर अुनका अुपयोग करने के लिअे लोगों की पर्याप्त आबादी नहीं है बालकों से मजदूरी कराने की प्रथा का बचाव नहीं किया जा सकता: तो हिन्दुस्तान में, जहाँ बालकों से काम लेने पर बड़ों की बेकारी बढ़ती है, अिसका बचाव हो ही कैसे सकता है?

"हमें अिस भ्रम में न रहना चाहिये कि माल तैयार करके बाजार में बेचनेवाली कारखानेनुमा स्वावलंबी पाठशालाअे कभी शिक्षा का काम करेंगी। प्रत्यक्ष व्यवहार में तो वह कानून-संमत बाल-मजदूरी ही सिद्ध होगी। अुदाहरण के लिअे, जब किसी मदरसे में कताओी दाखिल की जायेगी, तो वहाँ चर्खा का चलाना या सूत कातना अेक यान्त्रिक क्रिया बन जायगी। मेरी समझ में यह बात नहीं आती, कि अेक थान के लिअे जितना सूत आवश्यक है, अुस सूत को

गिनने से गणित सीखा जा सकता है; अथवा रुअी के विकास और सुधार को देखकर विज्ञान और भूगोल सिखाया जा सकते हैं। ये चीजें अेकाध बार तो मन को सतेज कर सकती हैं, लेकिन अगर वर्षों तक यही जारी रहें, तो मन की बाढ़ रुक जाये, और वह अेक ठहरी हुअी लीक पर काम करने लग जाय। मैं मानता हूँ कि आँख, कान, हाथ वगैरा की तालीम बहुत जरूरी है, और यह भी मानता हूँ कि शरीर-श्रम को सभी स्कूलों में लाज़िमी कर देना चाहिये। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिये कि जिसे हम हाथ की तालीम कहते हैं, वह असल में दिमाग़ की ही तालीम होती है। किसी भी स्कूल को, जो बच्चों को शिक्षा देना चाहता है, बाज़ार में बिक्री के लिअे माल तैयार करने का विचार छोड़ ही देना चाहिये। अुसका फर्ज है कि वह बच्चों को तरह तरह का कच्चा माल और यंत्र दे, जिन पर प्रयोग करके बालक थोड़ी नुकसानी भी करें तो हर्ज नहीं। बिगाड़ या नुकसान तो होगा ही। श्री. नरहरि पारिख ने हरिजन आश्रम साबरमती की लड़कियों की कताअी के कुछ आँकड़े दिये हैं। सावधानी के साथ अिन आँकड़ों का अध्ययन करने से पता चलता है, कि जो स्कूल अेक ही काम को लेकर बैठ जाता है, और जिसमें बड़ी अुमर के तालीमयाफ्ता बालक होते हैं, अुसमें भी नुकसान तो ठीक-ठीक होता है। अुद्योग-धन्धों की शिक्षा देनेवाले स्कूल वैज्ञानिक कॉलेजों की तरह प्रयोग करने और साधन-सामग्री को बिगाड़ने की जगह हैं। हिन्दुस्तान-जैसे गरीब देश को तो अैसे स्कूल कम-से-कम, और सिर्फ अुतने ही खोलने चाहिये, जितने जरूरी हों, और सो भी कुछ चुने हुअे बड़े-बड़े केन्द्रों में। अगर गोरखपुर और अवध के लड़कों को चुनकर चमड़ा कमाने का काम सीखने के लिअे कानपुर भेजा जाये, तो अुससे राष्ट्र की कोअी हानि न होगी। लेकिन अगर अुद्योग-धन्धे सिखानेवाली असंख्य पाठशालाअें खोली जायेंगी, तो अुससे नुकसान हुअे बिना न रहेगा।

"अेक दूसरे प्रकार का नुकसान भी है, जो आमतौर पर ध्यान में नहीं आता। अेक रतल रुअी से अगर बड़ी अुमर का कुशल मजदूर चार आदमियों के अुपयोग का कपड़ा बना सकेगा, तो अुतनी ही रुअी से अनपढ़ या गँवार मजदूर मुश्किल से दो की जरूरत का कपड़ा बना पायेगा। अिसका मतलब यह हुआ कि हिन्दुस्तान की कपड़े की जरूरत को पूरा करने के लिअे आजकल की अपेक्षा दूनी जगह में कपास की खेती करनी होगी। दूसरे शब्दों में, अिसीको

यों कह सकते हैं, कि अगर अनपढ़ मजदूरों से काम लिया जाये, तो कपड़े की जरूरत को पूरा करने के लिअे हिन्दुस्तान को जितनी जमीन में कपास की खेती करनी पड़ेगी अुतनी जमीन में हिन्दुस्तान की अन्न और वस्त्र, दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करनेवाला अनाज और कपास पैदा हो सकता है, बशर्ते कि सारा काम कुशल मजदूरों या किसानों से कराया जाये।

"अिस नुकसानी का तीसरा पहलू भी ध्यान देने योग्य है। कहा जाता है कि स्कूल में बालक तरह-तरह की सुंदर चीजें बना सकते हैं। कुछ दिनों पहले अेक अुद्योग-शाला में सीखे हुअे लड़के को मैंने 'प्लाय वुड' से खिलौना बनाते देखा था। वह जिस लकड़ी का और जिन औजारों का अुपयोग कर रहा था, सो सब स्वदेशी थे। अैसे अुद्योग परदेशी माल की नअी माँग या खपत हमारे यहाँ पैदा करते हैं। अिस पर कोअी कह सकता है कि हम अपना 'प्लाय वुड' खुद तैयार कर सकते हैं; लेकिन अमेरिका की तरह हिन्दुस्तान में अितनी फाजिल जमीन नहीं है, कि हम अिन झाड़ों को अुगा सकें। अगर कच्चे माल का और पूँजी का अुपयोग बेकार चीजों के बनाने में होता है, तो अुसे रोकना चाहिये, न कि अुत्तेजन देना चाहिये।

"स्कूलों और कॉलेजों में जो सुकुमारमति बालक पढ़ते हैं, वे रुपया, आना, पाअी और नफे-नुकसान की दुनिया मे नहीं, बल्कि विचारों और आदर्शों की सृष्टि में विहार करते हैं। अैसी सुकुमार अवस्था मे अगर अुनके सामने माल पैदा करने, बेचने और पैसा खड़ा करने का आदर्श रखा जायेगा, तो अुससे बच्चों का विकास रुकेगा, और आज संसार में दौलत की अुमड़ती दरिया के बीच लोगों को जिस गरीबी में रहना पड़ता है, वह बहुत अधिक बढ़ जायगी। यहाँ यह जानने योग्य बात है कि श्री रामकृष्ण अुद्योग-धन्धों की शिक्षा को कोअी महत्त्व नहीं देते थे।

"मै तो अिसे भी अेक अजीब-सा भ्रम ही समझता हूँ, कि हम अपने यत्नों से शिक्षा की गति को बढ़ा सकते हैं, यानी बालक जिस चीज को आज सात बरस में सीखता है, अुसे दो वर्ष में सिखा सकते हैं। बच्चों का दिमाग खाली बोतल की तरह नहीं होता कि अुसमें जो कुछ भरना हो, भरा जा सके। जिस चीज को बालक १६ वे वर्ष ही में सीख सकता है, अुसे ८ वें साल में सीखने की कोशिश वह नहीं कर सकता और न अुसे करना चाहिये। यह कहना

ठीक नहीं है कि विदेशी भाषा के कारण अितनी देर लगती है। फिर, जितना लोग समझते हैं, अुतना समय अिस विषय को दिया भी नहीं जाता। निबन्ध लेखन की शिक्षा मस्तिष्क और भावना की शिक्षा है। अिस तरह की शिक्षा धीमी ही हो सकती है। मस्तिष्क का विकास करने के लिअे जिन साधनों और तरीकों का अुपयोग किया जाता है, सम्भव है वे अनुत्पादक, हानिकारक और धीमे मालूम पड़ें। लेकिन याद रखना चाहिये कि शिक्षा का अुद्देश्य मन को बलवान् बनाना और जीवन में अुसे जिस प्रकार के समझौते करने पड़ते हैं, वैसे समझौते करना सिखाना है। हमें यह आशा न रखनी चाहिये, कि हम पाठशालाओं में मनुष्यों के अुपरान्त माल भी पैदा करके दें।

"अिस सबका सार यह है कि जिस नीति से हमारी पाठशालाअें सम्पन्न, किन्तु राष्ट्र दिवालिया बनता है, वह नीति से कुन्ठित दृष्टिवाली है, और अुसका अर्थ-शास्त्र झूठा है।

'अेक अध्यापक'

यह लेख अेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के अेक अध्यापक का है। लेख के साथ जो चिट्ठी आयी है, अुस पर हस्ताक्षर हैं। लेकिन अिस लेख के नीचे अुन्होंने अपना नाम नहीं दिया है, अिसलिअे मैं भी अुनका नाम प्रकट नहीं कर रहा हूँ। पाठकों को लेख से मतलब है, अुसके लेखक से नहीं। यह लेख अिस बात का अेक ज्वलन्त अुदाहरण है, कि जो कल्पनाअें मनुष्य के मन में गहरी जड़ जमा लेती हैं, अुनसे अुनकी दृष्टि कैसी धुँधली पड़ जाती है। प्रस्तुत लेखक ने मेरी योजना को समझने का कष्ट नहीं अुठाया। मेरी कल्पना के मदरसे के विद्यार्थियों की तुलना अुन्होंने लंका के चाय के बगीचोंवाले अुन लड़कों से की है, जो आधों-आध गुलामी में रहते हैं। अैसा करके अुन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन ही किया है। वे भूल जाते हैं कि बगीचों में काम करनेवाले लड़कों को कोअी विद्यार्थी नहीं समझता। अुन्हें जो मजदूरी मिलती है, वह अुनकी शिक्षा का अंग नहीं होती। मैं जिस प्रकार की पाठशालाओं की हिमायत कर रहा हूँ, अुसमें तो लड़के अंग्रेजी छोड़कर वे सब विषय सीखेंगे, जो आज हाअीस्कूलों में सिखाये जाते हैं; अुनके सिवा वे कवायद, संगीत, चित्रकला और निस्सन्देह अेकाध अुद्योग या दस्तकारी भी सीखेंगे। अिन मदरसों को कारखाने कहना हकीकत को समझने से अिनकार करना है। यह तो वही मसल हुअी कि किसी

आदमी ने बन्दर को छोड़ और कोअी प्राणी देखा ही न हो, और चूँकि मनुष्य का वर्णन, कुछ ही अंगों में क्यों न हो, बंदर के वर्णन से मिलता-जुलता है अिसलिअे वह मनुष्य का वर्णन पढ़ने से ही अिनकार कर दे ! मैंने अपनी सूचनाओं द्वारा जिन परिणामों का दावा किया है, अगर ये अध्यापक अुनके खिलाफ़ जनता को चेतावनी देते, और कहते कि वैसे सब परिणाम पाने की वह आशा न रक्खे, तो अुनके कथन में कुछ तो भी तथ्य रहता; लेकिन अैसी चेतावनी भी अनावश्यक होती, क्योंकि मैं खुद अुसे दे चुका हूँ।

मैं मानता हूँ कि मेरी सूचना नअी है। लेकिन नवीनता कोअी अपराध नहीं। मैं यह भी मानता हूँ कि अिसके पीछे विशेष अनुभव नहीं है। लेकिन मेरे साथियों को जो अनुभव प्राप्त हुअे हैं, अुन पर से मुझे यह अनुभव करने में बल मिलता है, कि यदि अिस योजना को निष्ठा के साथ कार्य में परिणत किया जाय, तो यह जरूर सफल होगी। यदि यह प्रयोग असफल हो, तब भी अिसकी आजमाअिश कर लेने में देश की कोअी हानि न होगी। अगर यह प्रयोग कुछ अंशों में भी सफल हो जाय, तो अिससे बहुत ज्यादा लाभ होगा। प्राथमिक शिक्षा को मुफ़्त, लाजिमी और असरदार बनाने का कोअी तरीका नहीं है। अिसमें तो कोअी शक नहीं कि आजकल की जो प्राअिमरी तालीम है, वह अेक फंदा है—भ्रम है।

श्री० नरहरी पारिख के आँकड़े अिसलिअे लिखे गये थे कि अिस योजना का जितना समर्थन अुनसे हो सके वे करें। अिन आँकड़ों से ही किसी अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता, फिर भी अिनसे प्रोत्साहन अवश्य मिलता है। अुत्साही लोगों के लिअे बहुत-सी तथ्य की बातें अिनमें मिलती हैं। सात साल मेरी योजना के अविभाज्य अंग नहीं हैं। हो सकता है, कि मैंने जिस बौद्धिक भूमिका की कल्पना की है, अुस तक पहुँचने में अधिक समय लगे। शिक्षा की अवधि को बढ़ाने से राष्ट्र की कोअी हानि न होगी। मेरी योजना के आवश्यक अंग अिस प्रकार हैं :—

१. कुल मिलाकर देखा जाय तो मालूम होता है कि किसी अेक या अनेक अुद्योगों की शिक्षा लड़कों और लड़कियों के सर्वांगीण विकास का अच्छे-से-अच्छा साधन है। अिसलिअे सारी पढ़ाअी अुद्योग की शिक्षा के आस-पास बैठाअी जानी चाहिये।

२. अिस कल्पना के अनुसार जो प्राथमिक शिक्षा दी जायेगी, वह कुल मिलाकर अवश्य स्वावलम्बी होगी। हो सकता है कि पहले या दूसरे साल की पढ़ाअी तक यह शायद पूरी स्वावलंबी न भी बने। यहाँ प्राथमिक शिक्षा से मतलब अुस शिक्षा का है जिसका वर्णन अूपर किया जा चुका है।

अिन अध्यापकजी को शक है कि अुद्योग द्वारा गणित या दूसरे विषय कहाँ तक सिखाये जा सकेंगे? अुनका यह शक अनुभव की कमी का सूचक है। लेकिन मैं तो अपनी बात अनुभव के बल से कह सकता हूँ। दक्षिण-आफ्रिका के टॉल्सटाय फार्म पर जिन लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के लिअे मैं प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार था, अुनका सर्वांगीण विकास करने में मुझे किसी कठिनाअी का सामना नहीं करना पड़ा था। करीब आठ घंटों का अुद्योग ही वहाँ की शिक्षा का केन्द्र था। अुन्हें अेक अथवा अधिक-से-अधिक दो घंटे लिखने-पढ़ने के लिअे मिलते थे। अुद्योगों में खोदना, रसोअी बनाना, पाखानों की सफाअी करना, झाड़ना-बुहारना, चप्पल बनाना, बढ़अीगिरी और चिट्ठी-पत्री या संदेश लाने ले जाने का काम आदि का समावेश था। बालकों की अुमर ६ से लेकर १६ वर्ष तक की थी। अुसके बाद तो यह अुद्योग बहुत ही फूला-फला है।
(हरिजन, २ अक्तूबर, १९३७)

कोरे विचार नहीं, ठोस कार्य

डॉ० अेरंडेल ने अपने अेक लेख की नकल, जो 'ओरिअेण्ट अिलस्ट्रेटेड वीकली' में छपनेवाला है, मेरे पास पेशगी भेजी है, और अुनके साथ नीचे लिखा पत्र भेजा है।

"आपने यह अिच्छा प्रकट की है, कि अब अिस देश में शिक्षा स्वावलम्बी बननी चाहिये, और अितने वर्षों से जैसी कृत्रिम रही है, वैसी अब न रहनी चाहिये। मैंने हिन्दुस्तान में, शिक्षा के क्षेत्र में, तीस साल से भी अधिक काम किया है। मेरा अेक लेख 'ओरिअेण्ट अिलस्ट्रेटेड वीकली' में छपने जा रहा है; अुसी की अेक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। शायद अिसमें कुछ अैसे विचार हों, जो आपके विचारों से कुछ हदतक मिलते-जुलते हों। मैं निश्चय ही यह

अनुभव करता हूँ कि शिक्षा की अेक राष्ट्रीय योजना होनी चाहिये, और प्रत्येक राष्ट्रीय मंत्री या मिनिस्टर को अपने-अपने प्रान्त में अुस योजना पर अमल करने की पूरी-पूरी कोशिश करनी चाहिये। अिस प्रश्न को कुछ-कुछ हल करने के लिअे अलग-अलग प्रयत्न तो बहुत से हुअे हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि शिक्षा-सम्बन्धी मुख्य सिद्धान्तों की तुरन्त ही घोषणा हो जानी चाहिये, जिससे सब प्रान्तों में अेक-ही-सा प्रयत्न हो, और सरकार और रिआया हिल-मिलकर काम करे।"

अिस लेख से कुछ खास महत्त्व के और अुपयोगी अवतरण मैं नीचे देता हूँ। कार्य का श्रीगणेश कैसे किया जाय, अिसकी चर्चा के बाद लेखक ने लिखा है :

"राष्ट्रीय शिक्षा के मूल में किस प्रकार के सिद्धान्त होने चाहिये, अिनके विवेचन के लिअे मेरे पास स्थान नहीं है। फिर भी, मैं यह आशा रखता हूँ, कि लड़कों और लड़कियों—दोनों की शिक्षा में हम धीरे-धीरे विद्यालय और कॉलेज के हास्यास्पद भेद को मिटा डालेंगे। और हमारी समग्र शिक्षा का मुख्य मंत्र होगा कुछ करना, करके दिखाना!

"विचार कितने ही स्यों न जागें, जब तक वे क्रियात्मक होकर फलप्रद नहीं होते, अुनका कोअी मूल्य नहीं माना जाता। यही बात भावनाओं और अनुभूतियों की शिक्षा के बारे में कही जा सकती है। आजकल की शिक्षण-पद्धतियों में अिसकी बहुत ही अुपेक्षा की गयी है। जरूरत अिस बात की है कि हिन्दुस्तान के नौजवान कर्मठ बनें, और शिक्षा द्वारा अुनका चरित्र अैसा तैयार हो, कि अुनमें कुछ काम करने की, कुछ व्यावहारिक कार्य सिद्ध कर दिखाने की और कुछ सेवा करने की शक्ति पैदा हो। हिन्दुस्तान को अैसे नौजवान नागरिकों की जरूरत है, जो परिस्थितियों और संयोगों के कारण किसी भी क्षेत्र में स्यों न पड़े हों, वहाँ भी कुछ न-कुछ अच्छे काम करके दिखा सकें। शिक्षा या अध्ययन के प्रत्येक विषय का ध्येय सदाचार होना चाहिये। हमारे शिक्षकों को सब विषयों की शिक्षा अैसे ही ढंग से देनी चाहिये, जिससे विद्यार्थी के चारित्र्य का विकास हो। क्योंकि व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के लिअे चारित्र्य ही जीवन का अेकमात्र आधार है।

"जब अेक बार सदाचार जाग्रत हो अुठेगा, तो कुछ करने की सङ्कल्प-शक्ति भी बलवान् बनेगी और स्वावलम्बन तथा आत्मसमर्पण की दिशा में वह जोरों से काम करना शुरू कर देगी। तभी मनुष्य के अन्दर धरतीमाता के अधिक-से-अधिक निकट सम्पर्क में आने की, खेती द्वारा अुसे पूजने की, और सादगी तथा शुद्ध आचरण द्वारा अुस पर कम-से-कम बोझ-रूप होने की अिच्छा पैदा होगी। मेरा तो निश्चित मत है कि धरती-माता के किसी भी बालक को अैसा असमर्थ नहीं होना चाहिये कि वह सीधे अुससे अपना पोषण ग्रहण न कर सके। अिसलिअे मैं शिक्षा में प्रकृति या धरती के साथ के सम्बन्ध को कुछ हद तक जरूर दाखिल करना चाहूँगा। शहरी मदरसे भी अिसके अपवाद न रहेंगे। शिक्षा की जिन रूढ़ियों के कारण आजकल की शिक्षा अेक बड़ी हद तक निरर्थक सी बन गयी है, अुनका हमें त्याग कर देना चाहिये। आज के शुभ अवसर पर, जबकि देश में राष्ट्रीय यानी काँग्रेसी मंत्रिमण्डल काम कर रहे हैं, हमें सच्ची शिक्षा-पद्धति का मंगलाचरण कर देना चाहिये। यह नअी शिक्षा निरी किताबी पढ़ाअी न होगी। हम पुराने जमाने की शिक्षा के संकुचित बन्धनों से जकड़े हुअे हैं, अतअेव गांधीजी ने स्वावलम्बी शिक्षा की जो योजना सुझायी है, अुसका मैं हृदय से समर्थन करता हूँ। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि अुनकी बतायी हुअी हद तक हम जा सकेंगे। अुनकी अिस बात से तो मैं पूरी तरह सहमत हूँ, कि सात वर्ष की शिक्षा के बाद लड़के को अिस योग्य बनकर निकलना चाहिये कि वह खुद अपनी जीविका कमा सके। मैं तो यह भी अनुभव करता हूँ कि शिक्षा द्वारा प्रत्येक मनुष्य को अपने अन्दर रही हुअी सृजन-शक्ति का बहुत-कुछ खयाल हो जाना चाहिये। क्योंकि हरअेक मनुष्य अेक विकास-मान अीश्वरीय अंश है, और अुस अीश्वर की जो परम शक्ति, अर्थात् पैदा करने की जो शक्ति है, वह अुसमें भी मौजूद है। अगर अुसमें यह शक्ति जाग्रत न हो, तो फिर शिक्षा किस काम की? अुस दशा में वह कोरी पढ़ाअी तो कही जा सकती है, शिक्षा कदापि नहीं।

"दिमाग का सम्बन्ध जितना सिर से है, अुतना ही हाथ से भी है। अेक लम्बे अर्से से हमने मस्तिष्कगत बुद्धि को अीश्वर-रूप माना है। बुद्धि ने हम पर अत्याचार किया है, अुसने जिधर हमें हांका है, हम अुधर ही हँक गये हैं। आज नअी परिस्थिति अुत्पन्न हुअी है, अुसमें अिस बुद्धि का स्थान अेक सेवक का

स्थान होना चाहिये। और हमें सादगी को, प्रकृति के सादे सौंदर्य को हाथ के कलाकौशल को, अर्थात् कलाकार, कारीगर, किसान आदि के हाथ-पैरों के परिश्रम को अुच्च और अुन्नत मानना सीखना चाहिये।

"मैं जानता हूँ कि अगर मुझे अिस तरह की शिक्षा मिली होती, तो मेरा जीवन अधिक सुखी और अधिक शक्तिशाली बना होता।"

जो बात मैं अेक दुनियादार की हैसियत से अपने दुनियादार पाठकों को कहता आया हूँ, वही डॉ० अेरंडेल ने अेक शिक्षा-शास्त्री के नाते शिक्षा-शास्त्रियों को और जिनके हाथ में आज देश के नौजवानों को बनाने बिगाड़ने की सत्ता है, अुनको लक्ष्य करके कही है। स्वावलम्बी शिक्षा के विचार के बारे में अुन्होंने जैसी सावधानी से काम किया है, अुससे मुझे कोअी आश्चर्य नहीं हुआ है। मेरी दृष्टि में तो वही खास चीज है। मुझे दुःख केवल अेक ही बात का है, कि जो चीज पिछले चालीस वर्षों से धुंधली धुंधली-सी दिखाअी देती थी, वही अब परिस्थिति के कारण दीपक की भाँति साफ-साफ दिखाअी देने लगी है।

१९२० में मैंने वर्तमान शिक्षा-पद्धति के विरुद्ध कड़ी-से कड़ी बातें कही थीं। अब मुझे अवसर मिला है, कि अिस बारे में सात प्रांतों के मन्त्रियों पर थोड़ा ही क्यों न हो लेकिन कुछ असर डाल सकता हूँ। अिन मन्त्रियों ने देश की स्वतन्त्रता के युद्ध में मेरे साथ काम किया है, और मेरी ही तरह कष्ट सहे हैं। अिसलिअे अिस बात को कि आजकल की शिक्षा-पद्धति सिर से पैर तक बहुत ही दूषित है, सिद्ध कर देने की अैसी जोरदार अिच्छा मन में पैदा होती है, कि मैं अुसे रोक नहीं सकता। और, जिस चीज को मैं अिस पत्र में बहुत ही अपूर्ण सी भाषा में व्यक्त करने का यत्न कर रहा था, बिजली की भाँति मुझे अुसका दर्शन अेकाअेक हो गया है, और अब अुस सत्य की प्रतीति मुझे प्रतिदिन अधिकाधिक होती जाती है। अिसलिअे देश के जिन शिक्षा-शास्त्रियों को अपना कोअी स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है, और जिनके मन नये विचारों को ग्रहण करने के लिअे तैयार हैं, अुनसे मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि वे मेरी दोनों सूचनाओं पर विचार करें, और प्रचलित शिक्षा-प्रणाली के सम्बन्ध में लम्बे अर्से से जिन विचारों ने अुनके अन्दर जड़ जमा ली है, अुनको अपनी बुद्धि के स्वतंत्र प्रवाह में बाधक न होने दें। यह सोचकर कि मैं शिक्षा के शास्त्रीय

और बुद्धिमान्य रूप से बिलकुल ही अपरिचित हूँ, मैं जो कुछ कहता या लिखता हूँ, अुसके खिलाफ वे पहले ही से अपने विचारों को स्थिर न कर लें और बिना मेरी बातों पर पूरा विचार किये अुन्हें ठुकराने की चेष्टा न करें। लोग कहते हैं, कि अकसर बालक के मुँह से भी ज्ञान की बातें प्रकट हो जाती हैं—बालादपि सुभाषितम्। यह शायद कवि की अतिशयोक्ति हो, लेकिन अिसमें तो कोअी शक नहीं कि ज्ञान बालकों के मुख से प्रकट होता है, और निष्णात या धुरधर विद्वान् अुस पर चमक चढाते हैं, और अुसे शास्त्र-शुद्ध रूप देते हैं। अिसलिअे मेरा निवेदन है, कि वे मेरी सूचनाओं पर केवल गुण-दोष की दृष्टि से ही विचार करें। मैं अिन सूचनाओं को यहाँ फिर दोहराये देता हूँ। पहले अिसी पत्र में जिस रूप में अिन्हें दे चुका हूँ, अुस रूप में नहीं देता, बल्कि अिन पंक्तियों को लिखते समय जो भाषा मुझे सूझ रही है, अुसी भाषा में लिखता हूँ।

१. आज प्राथमिक, मिडिल और हाअीस्कूल की शिक्षा के नाम से जो शिक्षा प्रचलित है, अुसका स्थान सात या सात से अधिक सालवाली प्राथमिक शिक्षा को ग्रहण करना चाहिये। अिस शिक्षा में अंग्रेजी को छोड़कर मैट्रिक तक के सब विषयों का और अुनके अतिरिक्त अेकाध अुद्योग का ज्ञान दिया जाना चाहिये। ज्ञान के सभी क्षेत्रों में और लड़कियों के मन का विकास सिद्ध करने के लिअे जरूरी है कि सारा ज्ञान किसी अुद्योग के द्वारा ही दिया जाय।

२. कुल मिलाकर, मैं समझता हूँ कि अिस तरह की शिक्षा स्वावलम्बी हो सकती है—होनी ही चाहिये—क्योंकि असल में स्वावलम्बन अुसकी यथार्थता की कसौटी है।

(हरिजन, २ अक्तूबर, १९३७)

कुछ आलोचनाओं का अुत्तर

सरकारी शिक्षा-विभाग के अेक अुच्च अधिकारी ने, जो अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते, प्राथमिक शिक्षा की मेरी योजना पर अेक विस्तृत और विचार पूर्ण आलोचना लिखी है, जिसे अुन्होंने हम दोनों के अेक मित्र द्वारा मेरे पास भेजी है। स्थानाभाव के कारण अुनकी सभी दलीलों को मैं यहाँ नहीं दे सकूँगा। अुनमें कोअी नअी बात भी नहीं है: फिर भी चूँकि लेखक ने बहुत मेहनत के साथ अपना लेख तैयार किया है, अिसलिअे अुसका जवाब देना अुचित मालूम होता है।

मेरी सूचनाओं के आशय को लेखक ने अिन शब्दों में व्यक्त किया है।

"१. प्राथमिक शिक्षा का आरंभ और अन्त अुद्योग-धंधों से होना चाहिये और शुरू-शुरू में साधारण विषयों की शिक्षा गौण रूप से दी जानी चाहिये। वाचन और लेखन द्वारा अितिहास, भूगोल और गणित का जो नियमित शिक्षण दिया जाता है, अुसका क्रम बिलकुल अन्त में आना चाहिये।

"२. प्राथमिक शिक्षा आरम्भ ही से स्वावलम्बी होनी चाहिये। अगर सरकार स्कूलों से अुनका तैयार माल खरीद लिया करे और जनता के हाथ अुसे बेचे, तो स्कूल स्वावलम्बी बन सकते हैं।

"३. प्राथमिक शिक्षा में मैट्रिक तक की पूरी पढ़ाअी का समावेश हो; अलबत्ता अँग्रेजी अुसमें शामिल न की जाये। युवकों और युवतियों से प्रायमरी स्कूलों में अनिवार्य रूप से शिक्षक का काम लेने का विचार अध्यापक शाह ने सुझाया है, अुसकी पूरी जाँच की जाये और सम्भव हो तो अुस पर अमल भी किया जाये।"

अिसके बाद लेखक तुरन्त ही कहने लगते हैं:

"यदि हम अुक्त कार्यक्रम का विश्लेषण करके देखें, तो पता चलेगा कि अुसकी तह में कुछ तो मध्ययुग के विचार हैं, और कुछ दूसरे विचारों के गर्भ में अैसी मान्यता रही है, जो बारीकी से जाँच करने पर टिक नहीं सकती! शुरू की

कलम नम्बर तीन में पदार्थों का जो स्टैण्डर्ड सुझाया गया है, वह शायद बहुत अूँचा कहा जा सकता है।"

अच्छा होता, अगर मेरे लेखों का आशय देने के बदले लेखक मेरे शब्दों को ही अुद्धृत करते; क्योंकि पहली कलम में मेरे आशय को समझाते हुअे अुन्होंने जो बातें कही हैं, अुनमें से अेक में भी सचाअी नहीं है। मैंने यह नहीं कहा कि शिक्षा का आरंभ अुद्योग से होना चाहिये और बाकी चीजें गौण रहनी चाहिये। बल्कि मैंने तो यह कहा है, कि सारी सर्व-साधारण शिक्षा अुद्योग द्वारा दी जाये, और साथ-साथ वह आगे बढ़े। लेखक ने जो चीज मुझसे कहलवायी है, अुससे यह बिल्कुल अलग चीज है। मध्ययुग में क्या होता था, मैं नहीं जानता। लेकिन मैं अितना जरूर जानता हूँ कि क्या मध्ययुग में, और क्या किसी दूसरे युग में अुद्योग द्वारा मनुष्य के सर्वांगीण विकास को सिद्ध करने का आदर्श कभी रक्खा नहीं गया था। यह विचार नया और मौलिक है। अगर यह झूठ भी साबित हो जाये, तब भी अिसकी मौलिकता में कोअी फ़र्क नहीं पड़ता। फिर जब तक किसी मौलिक विचार को बड़े पैमाने पर आजमाकर देखा न गया हो, अुस पर सीधा हमला करना अुचित नहीं: बिना आजमाये ही अुसे असम्भव कह देना कोअी दलील नहीं।

फिर मैंने यह भी नहीं कहा कि वाचन-लेखन द्वारा दी जानेवाली शिक्षा बिलकुल आरम्भ ही से शुरू होती है; क्योंकि बालक के सर्वांगीण विकास का वह अेक अविभाज्य अंग है। निस्सन्देह मैंने यह कहा है, और फिर कहता हूँ कि वाचन कुछ देर से शुरू किया जाये और लेखन अुसके बाद। लेकिन यह सारा क्रम पहले साल में अवश्य ही पूरा हो जाना चाहिये। मतलब यह है, कि मेरी कल्पना की प्राथमिक पाठशाला में आजकल की पाठशालाओं की अपेक्षा बालकों को अेक साल के अन्दर जो सामान्य ज्ञान मिलेगा, वह पहले से कहीं अधिक होगा। मेरी पाठशाला का बालक शुद्ध-शुद्ध बोल और पढ़ सकेगा: और आजकल के बालक जैसे टेढ़े-मेढ़े अक्षर लिखते हैं, अुनके मुकाबिले वह शुद्ध और सुन्दर लिखना जानेगा। साथ ही, पहले साल में वह सादा जोड़-बाकी और सादे पहाड़े-पट्टी भी जान चुकेगा, और यह अुस दस्तकारी के मारफ़त और अुसके साथ-साथ सीखेगा, जिसे वह खुद अपनी अिच्छा से चुनेगा। अुदाहरण के लिअे, मैं मानता हूँ कि वह कताअी के जरिये अिन सब चीजों को सीख सकेगा।

दूसरी कलम में दिया गया आशय भी पहली की तरह अपूर्ण है; क्योंकि मैंने कहा तो यह है कि जो सात वर्ष मैंने सुझाये हैं अुन सात वर्षों के अन्दर, अुद्योग द्वारा दी जानेवाली शिक्षा स्वावलम्बी बननी चाहिये। मैंने साफ तौर से कहा है; कि पहले दो वर्षों में अेक हद तक घटी भी हो सकती है।

सम्भव है, मध्ययुग खराब रहा हो, लेकिन महज अिसलिअे कि अेक चीज मध्ययुग की है, मैं अुसको त्याज्य ठहराने को तैयार नहीं। चर्खा अवश्य ही मध्ययुग की चीज है, लेकिन मैं तो समझता हूँ कि वह सदा के लिअे कायम रहेगा। चर्खा तो वही है, जो पहले था; लेकिन अेक जमाने में ईस्ट अिंडिया कम्पनी के आगमन के बाद, जिस तरह वह गुलामी का प्रतीक बन गया था, अुसी तरह अब स्वतन्त्रता और अेकता का प्रतीक बना है। हमारे पुरखों ने सपने में भी जिस अर्थ की कल्पना न की होगी, अुससे कहीं गहरा और सच्चा अर्थ आजकल के हिन्दुस्तान को अिस चर्खे से प्राप्त हुआ है। अिसी तरह, दस्तकारी या हाथ के अुद्योग-धन्धे किसी समय कारखानों की मजदूरी के प्रतीक भले रहे हों, लेकिन अब वे पूरे-पूरे और सच्चे-से-सच्चे अर्थ में शिक्षा के प्रतीक और अुसके साधन बन सकते हैं। अगर कॉंग्रेसी मन्त्रियों में पर्याप्त कल्पना-शक्ति और साहस होगा, तो वे अिन विचारों की आजमाअिश किये बिना न रहेंगे: अुन टीका और आलोचनाओं के रहते भी, जो शिक्षा-विभाग के बड़े-बड़े अधिकारी और दूसरे लोग सद्भाव के साथ करेंगे, और खासकर जब अिस तरह की टीकाअें कुछ काल्पनिक विश्वासों के आधार पर की जायंगी।

अिन लेखक ने अिस बात को मंजूर तो किया ही है कि युवकों और युवतियों से अनिवार्य सेवा लेने की जो योजना अध्यापक शाह ने सुझायी है, वह अच्छी है। लेकिन बाद में, मालूम होता है, अुन्हें अपने अिस कथन पर पछतावा हुआ है, क्योंकि वे कहते हैं:

अिस तरह शिक्षक के काम अनिवार्य बना देना हमारे खयाल से अेक अत्याचार है। मदरसों में, जहाँ छोटे बालक पढ़ने आते हैं, अैसे ही स्त्री पुरुष होने चाहिये, जिन्होंने अिन धन्धे के पीछे संसार में जितना स्वार्थ-त्याग हो सकता है अुतना स्वार्थ त्याग करके अपना सारा जीवन अिसीमें खर्च कर डाला हो, और जिनमें यह शक्ति हो कि स्कूलों में अुत्साह और अुमंग का वातावरण पैदा कर सकें। हमने अपने युवकों और युवतियों पर बहुत ज्यादा, शायद जरूरत से ज्यादा

प्रयोग किये हैं लेकिन अिस नये प्रयोग के जो परिणाम हो सकते हैं, अुनके कारण हम अैसे गड्ढे में गिर पड़ेंगे कि फिर कम-से-कम पचास साल तक अुसमें से अुबरना सम्भव न रहेगा। अिस सारी योजना के पीछे शायद यह कल्पना रही है कि अध्यापन की कला अेक अैसी कला है, जिसके लिअे पहले से किसी प्रकार की तैयारी या तालीम की जरूरत नहीं: और शायद यह भी, कि हरअेक मर्द-औरत पैदाअिशी शिक्षक और शिक्षिका होती है। समझ में नहीं आता कि अध्यापक शाह जैसे विख्यात पुरुष अैसे विचार क्यों रखते हैं? ये विचार अेक निरी धुन है कि जिसका अगर अमल किया गया, तो नतीजा बहुत ही बुरा होगा। फिर, यह कैसे हो सकता है कि हरअेक आदमी बच्चों को अुद्योग आदि की शिक्षा भी दे सके?"

अध्यापक शाह अपनी बात का समर्थन करने और टीकाओं का अुत्तर देने में स्वयं समर्थ हैं। लेकिन मैं अिन लेखक को यह याद दिलाना चाहता हूँ कि आजकल के शिक्षक कोअी स्वयंसेवक नहीं होते; वे तो अपनी जीविका के लिअे काम करनेवाले चिट्ठी के चाकर या निरे नौकर होते हैं। अध्यापक शाह की योजना में यह कल्पना तो रही ही है, कि अनिवार्य अध्यापन के लिअे जिन स्त्री-पुरुषों को चुना जाये, अुनमें पहले ही से स्वदेश-प्रेम, स्वार्थ त्याग की भावना, कुछ अच्छे-अच्छे संस्कार और दस्तकारी का ज्ञान अितनी बातें अवश्य होनी चाहिये। अुनकी यह कल्पना बहुत ही ठोस, बिलकुल सम्भाव्य और व्यावहारिक है; वह अिस योग्य है कि अुस पर पूरा-पूरा विचार किया जाय। अगर स्वयम्भू शिक्षकों के मिलने तक हमें राह देखनी हो, तब तो कयामत के दिन तक अुनकी प्रतीक्षा करनी होगी! मैं यह कहना चाहता हूँ कि शिक्षकों और शिक्षिकाओं को, जहाँ तक हो सके, कम-से-कम समय में और बड़े पैमाने पर तालीम देकर तैयार करना होगा। जब तक आजकल के शिक्षित युवकों और युवतियों को समझा-बुझाकर अुनकी सेवा अिस काम के लिअे प्राप्त न की जायगी, तब तक यह न हो सकेगा। अिन लोगों की ओर से जब तक स्वेच्छायुक्त सहयोग न मिलेगा, सिद्धि अिस काम से दूर ही रहेगी। सत्याग्रह-युद्ध में विद्यार्थियों ने, कितना ही कम क्यों न हो, मगर हिस्सा जरूर लिया था। अब, जब कि केवल अपने गुजारे-भर को वेतन लेकर रचनात्मक कार्य में सहयोग देने की पुकार अुठेगी, क्या वे जवाब देने से अिनकार कर देंगे?

अिसके बाद लेखक पूछते हैं :

"१. क्या हमें अिसका खयाल न रखना चाहिये कि जब छोटे बच्चे कच्चे माल का अुपयोग करेंगे तो अुसमें बहुत-कुछ नुकसानी भी होगी ?

"२. जो कोअी केन्द्रीय संस्था तैयार माल की बिक्री का प्रबन्ध करेगी, अुसका खर्च कैसे चलेगा ?

"३. क्या जनता को बाध्य किया जायेगा कि वह अिन नये भण्डारों से ही चीजें खरीदे ?

"४. जो पेशेवर लोग आज अिस तरह की चीजें बनाते हैं, अुनका क्या होगा ? अुनपर अिसका कैसा असर पड़ेगा ?"

मेरे जवाब अिस प्रकार हैं :

१. बेशक कुछ नुकसानी तो होगी; लेकिन पहले साल के अन्त में आशा है कि हरअेक बालक कुछ मुनाफा करके दिखायेगा।

२. बहुतेरी चीजें तो सरकार अपनी जरूरतों के लिअे खरीद लेगी।

३. राष्ट्र के बच्चों द्वारा बनायी हुअी चीजें खरीदने के लिअे किसी को बाध्य नहीं किया जायेगा, लेकिन यह आशा जरूर की जायेगी कि अपने बच्चों द्वारा बनायी गयी चीजों को राष्ट्र अपने अुपयोग के लिअे बड़े गर्व के साथ, देश-प्रेम की भावना से, और खुशी-खुशी खरीदेगा।

४. गाँवों में हाथ के अुद्योगों द्वारा जो चीजें तैयार होंगी, अुनमें होड़ का प्रश्न क्वचित् ही अुत्पन्न होगा। अिस बात का ध्यान रक्खा जायेगा कि स्कूलों में खास कर वे ही चीजें बनायी जायें जो गाँवों में बननेवाली दूसरी चीजों के साथ अनुचित होड़ न करें। अुदाहरण के लिअे, आज गाँवों में खादी, हाथ के बने कागज और ताड़ या खजूर के गुड़ का कोअी हरीफ या प्रतिद्वन्द्वी है ही नहीं !

(हरिजन, २ अक्तूबर, १९३७)

अनपढ़ बनाम पढ़े-लिखे

बम्बअी से अेक सज्जन लिखते हैं :

"कॉरपोरेशन को मौजूदा सरकार ने सलाह दी है कि वह अपने मताधिकारी के क्षेत्र को बढावे। आज अुन बालिगों को मत देने का हक है, जो हर महीने पॉच रुपया किराया देते हैं। सिफारिश यह की गयी है, कि जो पढ़ना-लिखना जानते हैं, अुनको भी मताधिकार दिया जाय। अब प्रश्न यह है कि 'कॉन्स्टीट्यूअेण्ट असेम्बली' के लिअे बालिगों को मताधिकार देने की शर्त है; अैसी दशा में यदि महासभा के सदस्य शिक्षितों के मताधिकार से ही सन्तुष्ट हो जायें तो अिससे महासभा के सिद्धान्त का त्याग न होगा? मेरी तरह कुछ लोग अैसे हैं जो मानते हैं कि अिस समय शिक्षितों के मताधिकार तक ही बढ़ने में भलाअी है। अुनका क्या धर्म हो सकता है?"

जहॉ तक अिस प्रश्न का सम्बन्ध कॉग्रेस के अनुशासन से है वहॉ तक अिस पर राय देने का मुझे कोअी हक नहीं। हॉ अेक पत्रकार के नाते मेरे किये हुअे अर्थ को जो महत्त्व प्रश्नकर्ता देंगे, अुसमे अधिक महत्त्व मैं अिसे न दूंगा। अिसके लिअे तो, कॉग्रेस के सभापति जो कहेंगे, वही पर्याप्त और लाजिमी होगा। लेकिन अेक पुराने अनुभवी के नाते अिस सम्बन्ध में अपनी जो राय मैं रखता हूँ अुसे प्रश्नकर्ता के लिअे और अुनके जैसे दूसरे लोगों के लिअे यहॉ देता हूँ। मं मानता हूँ कि जिनमें कॉग्रेस द्वारा सुझाये हुअे सभी कामों को करने की ताकत नहीं है, या जो समझते हैं कि सब कामों के लिअे यह अनुकूल नहीं है, वे महासभा की दिशा में चलते हुअे जितना आगे बढ सकें, निःसंकोच बढें। अिस तरह आगे कदम बढाना अुनका धर्म है और अिसमें किसी भी प्रकार से अनुशासन भंग नहीं होता!

गुण-दोष की दृष्टि से सोचते हुअे मुझे अैसा प्रतीत होता है, कि मताधिकार के क्षेत्र को बढाते समय अुसे शिक्षितों तक ही मर्यादित रखना जरा भी अुचित नहीं है। हो सकता है कि २१ वर्ष का अेक सुशिक्षित नौजवान बिलकुल ही मताधिकार के लायक न हो; जब कि ५० वर्ष का अेक अनुभवी और दाना, लेकिन अनपढ मनुष्य मताधिकार के महत्त्व को समझता हो; और यह भी सम्भव है कि अुसके मत द्वारा, जो कुछ मिल सके, वह महत्त्वपूर्ण हो। अैसा प्रतिदिन

हो भी रहा है। महासभा ने बालिग मताधिकार की जो हिमायत की है, अुसमें भी कअी बातें गर्भित हैं। मेरा दृढ विश्वास है कि बालिग होते हुअे भी वे लोग मताधिकार का अुपभोग नहीं कर सकते, जो बहरे, गूँगे, घोरअज्ञानी, पागल, गुप्त या खानगी रूप से अपराध करनेवाले और असाध्य रोगों से पीड़ित हैं।

फिर यह मान लेने की कोअी वजह नहीं है कि जिन्होंने लिखने-पढने की योग्यता प्राप्त की है, अुन्होंने कोअी खास पुरुषार्थ किया है। मैं यह कहने को तैयार नहीं हूँ कि जो आजतक पढ नहीं सके, अपने अज्ञान के लिअे वे स्वयं ही जिम्मेदार हैं। असल मे तो अिन करोड़ों के अज्ञान की जड़ मध्यम श्रेणी के लोगों की अुपेक्षा मे है। अुन्होंने आजतक अपने धर्म का पालन नहीं किया। अिसीसे हिन्दुस्तान में अपनढों की संख्या बहुत ज्यादा रही है। अिसलिअे मेरी दृष्टि में तो यह दुगुना दोष है, कि सरकार की कृपा से अब तक जो शिक्षा पा सके हैं, अुनको तो मताधिकार दिया जाय और जो अुसकी अकृपा से शिक्षा नहीं पा सके; अुन्हें मताधिकार से वंचित रक्खा जाये! जिन अनपढों को मताधिकार दिया जायेगा अुनको जल्दी-से-जल्दी पढाना सरकारी अधिकारियों का धर्म हो जायेगा। अिससे अेक ओर तो जिन्हें पहले से ही मताधिकार मिल जाना चाहिये था, अुनको वह अधिकार न देने का प्रायश्चित हो जायेगा, और दूसरी ओर अिस बात का प्रोत्साहन मिलेगा कि जिन्हे मताधिकार मिला है, अुन्हें पढा-लिखाकर अिस योग्य बना दिया जाये कि वे अपने मत का अच्छी तरह अुपयोग कर सकें।

(हरिजन-बन्धु ३ अक्टूबर, १९३७)

प्राथमिक शिक्षक बनने के अिच्छुकों से—

राष्ट्रीय शिक्षकों को लक्ष्य करके मैंने जो लेख लिखा था, अुसके अुत्तर में, सन्तोष की बात है कि, मेरे पास हर रोज कअी चिट्ठियाँ आने लगी हैं। अिन चिट्ठियों पर से मैं यह देख रहा हूँ, कि लिखनेवालों ने मेरी प्रार्थना के मतलब को समझा नहीं है। अैसे शिक्षकों की जरूरत नहीं है जिन्हें किसी अुपयोगी दस्तकारी के जरिये शिक्षा देने की बात में पूरी-पूरी श्रद्धा न हो, और

जो अिस काम को केवल प्रेम-पूर्वक और जीविका-निर्वाह के लिअे आवश्यक-वेतन-मात्र लेकर करने को तैयार न हों। जो अिस क्षेत्र में आना चाहते हैं, अुन सबको मेरी सलाह है कि वे कताअी की कला को और अुससे पहले सब क्रियाओं को अच्छी तरह सीख लें: अुनमें निष्णात बन जायें। अिस बीच जिनके नाम मेरे पास आयेंगे, अुन्हें मैं अपने पास नोट करके रक्खूँगा। मेरी योजना के अमल में जो तरक्की होगी, अुसकी सूचना अिन पत्रलेखकों के पास मेरी ओर से यथा-समय पहुँचती रहेगी। मेरी यह कोशिश अुस माँग की पूर्ति के लिअे है जो सात प्रान्तों की सरकारें मुझसे तब करेंगी जब वे मेरी योजना को मानने और अुसका प्रयोग करने को प्रेरित होंगी।

(हरिजन ९ अक्टूबर, १९३७)

उद्योग द्वारा शिक्षा के समर्थन में

यद्यपि विनोबा और मैं केवल पाँच मील अन्तर पर रहते हैं, फिर भी चूंकि दोनों अपने-अपने काम में लगे हुअे हैं, और दोनों का स्वास्थ्य भी कुछ गिरा हुआ है, अिसलिअे हम क्वचित् ही अेक-दूसरे से मिल पाते हैं। अतअेव बहुत-कुछ काम पत्र-व्यवहार से कर लेते हैं।

"आपके शिक्षा-विषयक ताजे विचार मुझे बहुत ही रुचे हैं। मेरे विचार अिसी दिशा में काम कर रहे हैं। 'अुद्योग शिक्षण' अिस तरह की द्वैत भाषा मुझे अच्छी ही नहीं लगती। मैं तो 'अुद्योग शिक्षण' के अद्वैती समीकरण में विश्वास रखता हूँ। निःसंदेह मैं यह मानता हूँ कि शिक्षा स्वावलम्बी हो सकती है। मैं तो समझता हूँ कि जिनमें स्वावलम्बन नहीं, ग्रामों की दृष्टि से, अुसे हम शिक्षा कह ही नहीं सकते। अिस विषय में आपके विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ, अिसलिअे अिसपर विशेष रूप से कुछ लिखने की अिच्छा नहीं होती। हाँ, अिसका प्रयोग करने की अिच्छा होती है। कुछ किया भी है, और अीश्वर की मर्जी हुअी तो अिस विषय का अन्तिम निर्णय करने की भी आशा रखता हूँ।"

ये विचार विनोबा के अैसे ही अेक पत्र से मैंने लिअे हैं। मेरी दृष्टि में अिनका बहुत महत्त्व है, क्योंकि अिस दिशा में जो प्रयोग विनोबा ने किये हैं, अुतने जहाँ तक मैं जानता हूँ, मैंने या मेरे दूसरे साथियों में से किसी ने नहीं किये हैं। तकली की गति में जो क्रान्तिकारी वृद्धि हुअी, अुसकी जड़ में विनोबा की प्रेरणा और अुनका अथक श्रम रहा है। बड़ी संस्था का संचालन करते हुअे भी अुन्होंने आठ-आठ, दस-दस घंटे चर्खे और तकली पर काम किया है, और शिक्षण में अिस अुद्योग को अुन्होंने शुरू से महत्त्व का स्थान दिया है। अतअेव जिसे मैं अपनी मौलिक शोध मानता हूँ—मेरा मतलब अुद्योग द्वारा स्वावलम्बी शिक्षा से है—अुससे विनोबा सहज ही पूरी तरह सहमत हैं। यह चीज मेरे लिअे तो बहुत ही अुत्साह वर्धक है। मैंने अुनका यह मत अिसलिअे यहाँ दिया है कि जो विनोबा को पहचानते हैं, वे अिससे अपनी श्रद्धा को बलवान् बनायेंगे, अथवा जिनमें श्रद्धा नहीं हैं, वे श्रद्धालु बनेंगे।

श्री विनोबा का समर्थन मेरे लिअे कोअी नअी बात नहीं है, और 'हरिजन-बन्धु' के पाठकों को भी अिसमें कोअी नयापन नहीं मालूम होगा। लेकिन अुनके समर्थन का न मिलना मेरे लिअे बड़ी दुविधा की बात हो जाती है। जिस चीज को मैं अपने पुराने-से-पुराने साथियों को न समझा सकूँ, अुसे जनता को समझाने की कोशिश, न सिर्फ मेरी मूर्खता, बल्कि धृष्टता भी समझी जायेगी। लेकिन श्री० मनु सूबेदार का जो नीचे लिखा पत्र मिला है, अुससे मुझे अवश्य ही सानन्द आश्चर्य हुआ है। अुनके साथ मैं शिक्षा, शराब-बन्दी आदि विषयों के अपने विचारों के बारे में पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। नीचे का पत्र अिसी का परिणाम है। अिस पत्र को पढ़कर पाठक भी खुश होंगे। अिस पत्र के साथ अुन्होंने अंग्रेजी में कुछ सूचनायें भेजी थीं, जिन्हें मैं 'हरिजन' में तो प्रकाशित कर चुका हूँ। वह लिखते हैं :

"मैं यह सोच ही रहा था कि विद्यार्थी अपनी शिक्षा का बोझ किस हद तक खुद अुठायें, कैसे अुनका भविष्य अुज्ज्वल बने, अुनके शरीर को व्यायाम मिले और अुद्योग-प्रधान कामों से जो अनुशासन आदि पैदा होते हैं अुनसे कैसे अुनके मन का विकास हो, कि अितने में मुझे खबर मिली कि आप शिक्षा-परिषद् के अध्यक्ष बन रहे हैं। अिसलिअे मैंने सोचा कि अिस सम्बन्ध के जो नोट्स मैंने तैयार किये हैं, अुन्हें आपके पास भेज दूं।

"गृह-अुद्योग की और शाला-अुद्योग की योजनाओं में कुछ भी फर्क नहीं है, अगर है तो केवल यही कि शाला-अुद्योग के लिअे कच्चे माल का प्रबन्ध करना ही होगा; जबकि गृह-अुद्योग के लिअे भी किया जाय तो अच्छा ही है। लेकिन यह हमेशा हो नहीं सकता।

"सम्भवतः सरकार को सब प्रकार के साँचे और हाथ के यन्त्र बनानेवाली संस्थाअें खोलनी होंगी : क्योंकि किफायत से काम लेने की जरूरत अभी वर्षों तक रहेगी। शायद अिसके लिअे जेलखानों का अुपयोग किया जा सकेगा।

"शुरू में अेक सामान्य योजना तैयार करके हरअेक शहर और जिले में भेजनी होगी और तहसील से अिस बात का पता लगाना होगा, कि वहाँ क्या-क्या सहूलियतें हैं और किस प्रकार का कच्चा माल आसानी से बिल्कुल सस्ती कीमत में मिलता है। शहरों में तो बहुत-सी सहूलियतें मिल जायेंगी। गाँवों में क्या हो सकता है, अिसका विचार वे लोग करेंगे, जो अुनके विषय में मुझसे ज्यादा जानते हैं।

"जिस गाँव में स्कूल या मदरसे का नाम नहीं है, वहाँ के लिअे तो यह बहुत ही आसान है कि शुरू से अैसे शिक्षकों को नियुक्त किया जाय, जो खुद काम कर सकें और दूसरों से भी करवा सकें। अगर शिक्षक ही कारीगर भी हों, और शिक्षा के साथ-साथ वे अुद्योग-धन्धा भी सिखा सकें, तो फिर क्या पूछना है?

"जब शुरू में आपने यह बात कही, तो बहुत दुष्कर मालूम हुअी थी। लेकिन कुछ ही विचार करने पर अब यह प्रतीत होने लगा है कि अुद्योग-धन्धों के बेकारी के और शिक्षा के अिन तीन बड़े सवालों को संगठन द्वारा किस प्रकार अेक ही साथ हल किया जा सकता है। पिछली १८ तारीख के 'हरिजन' में अेक अध्यापक का लेख पढ़कर मुझे कुछ अैसा लगा कि शिक्षा में भी 'वेस्टेड अिण्टरेस्ट' यानी स्वार्थ-प्रेमियों का प्रभुत्व कायम हो गया है और यह जैसा कि आपने कहा है, अुन भ्रमपूर्ण विचारों का परिणाम है, जो शुरू से कुछ लोगों के बन गये हैं। ज्ञानेश्वर महाराज ने कहा है कि तोता जिस सींक या डंडी पर बैठता है, अुसे खुद ही पकड़कर रखता है, और फिर कहता है मैं तो बन्धन में पड़ा हूँ!

"गरीब देश में शिक्षा और अुद्योग को अेक-दूसरे से अलग रखना लाभदायक नहीं है। जब हमारी चादर छोटी है तो तन को अच्छी तरह ढकने के लिअे हमें थोड़ा सिकुड़कर सोना चाहिये। किफायत का मार्ग हमेशा तकलीफ का रहा है। विदेशी सरकार ने यह तकलीफ खुद नहीं अुठायी, क्योंकि अुसके जैसा विदेशी ही यह कह सकता है कि अगर पैसे कम हैं तो शिक्षा भी कम दो। कॉंग्रेस के राज्य में तो जो जिस बोझ को अुठा सकता है, वह बोझ अुसे अुठा लेना चाहिये। विद्यार्थी कितना बोझ अुठा सकते हैं, अिसकी ठीक-ठीक जाँच होने से पता चलेगा कि अगर सुव्यवस्था से काम चले, तो वे अपनी शिक्षा के खर्च में बहुत ज्यादा हाथ बँटा सकते हैं और अुससे अितना कुछ सीख सकते हैं, कि बड़े होने पर अपनी जीविका खुद चला सकें।"

(हरिजन-बंधु, १० अक्तूबर, १९३७)

शराब-बन्दी और शिक्षा

श्रीयुत जे० वी० गिलसन क्रिश्चियन हाअी अेण्ड टेक्निकल स्कूल, बालासोर के मंत्री और अे० बी० बी० ओ० मिशन के अुद्योग, कला और धन्धों की शिक्षा के शिक्षा विभाग के संचालक हैं। गाँवों में पानी, पाखाना, पेशाब आदि की व्यवस्था पर प्रकाश डालनेवाला कुछ साहित्य भेजते हुअे वे लिखते हैं :

"शिक्षा और शराब-बन्दी के बारे में जो थोड़ी चर्चा पिछले कुछ महीने से 'हरिजन' में छपने लगी है, अुस पर टीका के रूप में कुछ लिखने का मेरा अिरादा है। यह चर्चा मुझे बहुत ही दिलचस्प और विचारों को जाग्रत करने-वाली मालूम होती है; और मेरा यह आग्रह है कि हमारे मदरसों के सभी शिक्षक अिसे पढ़ें और अिस पर चर्चा करें। सब मिलाकर तो, मैं आपके निर्णयों से बहुत-कुछ सहमत होता हूँ। मुझे यह देखकर खुशी हुअी कि आपने अिस चीज को अितने सुस्पष्ट रूप से प्रकट किया कि अगर शारीरिक श्रम उचित रीति से कराया जाये तो वह बौद्धिक विकास का अेक अच्छे-से-अच्छा साधन हो सकता है। मैंने देखा है कि शिक्षकों को यह समझाना बहुत ही कठिन है

3576

कि पाठ्य पुस्तकों भाषणों और परीक्षा के लिअे रटी जानेवाली चीजों के सिवा भी दूसरे किसी साधन से बुद्धि का विकास हो सकता है। आपने अिस चीज का जो विवेचन किया है, अुससे सबको अिससे स्पष्ट ज्ञान हो जाना चाहिये। हिन्दुस्तान की कुछ मिशनरी पाठशालाओं ने अपने यहाँ दस्तकारी की तालीम को दाखिल करके जो रास्ता दिखाया है, मुझे यह देखकर खुशी हुअी कि आपने अुसकी कद्र की है।

"दूसरी ओर आप जो यह कहते हैं कि विद्यार्थियों के काम द्वारा शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जा सकता है या बनाना चाहिये, अुससे मैं सहमत नहीं हो सकता। यह हो कैसे सकता है, अिसका कोअी स्पष्टीकरण अब तक की चर्चा में कहीं मेरे देखने में नहीं आया। बालकों के काम से आर्थिक लाभ की आशा नहीं रक्खी जा सकती। संसार के प्रत्येक देश में बालकों का शोषण करनेवाले लोग अिसी तरह मुनाफा कमाते हैं; अिसके लिअे वे बालकों से प्रायः अैसे ही काम कराते हैं, जिन्हें फिर-फिर यंत्र ही की तरह करना पड़ता है; और जिनमें कुशलता की बहुत ही कम जरूरत रहती है। अगर बालकों से अिस तरह का काम हर रोज चार घंटे स्पर्धापूर्ण वातावरण में कराया जाये, तो बालक न सिर्फ अपना खर्च निकालेंगे, बल्कि जो लोग अुनके काम की निगरानी रक्खेंगे, अुनका खर्च भी निकालकर देंगे। लेकिन शिक्षा की दृष्टि से अैसे काम का कोअी मूल्य न होगा? जिस तरह पाठ्य पुस्तकों के रटने और भाषणों के सुनने से बुद्धि मन्द हो जाती है, अुसी तरह अैसे कामों से भी हो जायेगी।

"शिक्षा की दृष्टि से बालकों के काम को अुपयोगी बनाने के लिअे आवश्यक है कि अुन्हें तरह-तरह का काम दिया जाये और जब वे किसी अेक को अच्छी तरह सीख लें, तो दूसरा नया काम अुन्हें सीखने को दिया जाये। अपने विचारों के अनुसार प्रयोग करने का मौका और नअी-नअी डिजाअिनें तैयार करने की संधि अुन्हें मिलनी चाहिये। अगर किसी सुयोग्य व्यक्ति की निगरानी में अुनको अिस तरह का काम करने का मौका दिया जाये, जो विचार-पूर्ण प्रश्न पूछकर और प्रोत्साहित करके अुन्हें हमेशा जाग्रत रक्खे, तो अिससे बच्चों में कअी अच्छी आदतें और शक्तियों का विकास हो सकता है। लेकिन मुझे यह सम्भव नहीं मालूम होता कि अुनकी बनायी चीजों से स्कूल का खर्च निकल सकता है। हाँ, यह हो सकता है कि स्कूल के खर्च में वे थोड़ी मदद पहुँचायें।

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि हम क्यों अैसी आशा रक्खें, कि पाठशालाअे स्वावलम्बी बनें ? बच्चों को शिक्षा देना और प्रौढ़ अुमर में बड़ों की शिक्षा को जारी रखना तो समाज का अेक कर्त्तव्य है, और, मैं तो यह महसूस करता हूँ कि हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत में जनता के धन का सबसे बड़ा खर्च अिसी काम के लिअे होना चाहिये।

"मैं देखता हूँ, कि अिस चर्चा में शराब-बन्दी और शिक्षा को अेक साथ जोड़ दिया गया है और दुःख की बात यह है कि अमेरिका की स्थिति को बिना समझे ही कुछ लोगों ने अमेरिका के प्रयोग की बात कही है। आपकी चर्चा में यह मुद्दा काफी स्पष्टता के साथ रक्खा जा चुका है, कि शराब की दूषित आमदनी के सिवा दूसरे कअी तरीकों से भी शिक्षा के लिअे धन मिल सकता है। जब अमेरिका का दृष्टान्त दिया जाता है, तो अुसके साथ यह भी कहना चाहिये कि वह जितने दिन शराब-बन्दी का अमल रहा, शिक्षा के लिअे कभी धन का अभाव नहीं पाया गया। बल्कि हकीकत यह रही कि अिस समय के अन्दर वहाँ की पाठशालाओं में बड़े वेग से सुधार हुअे। जन-साधारण की हालत को सुधारने में अमेरिका का शराब-बन्दी आन्दोलन कभी असफल नहीं हुआ। हाँ, बड़े-बड़े शहर भले ही अिसके अपवाद रहे हों। क्योंकि अिन शहरों में अधिकतर आबादी अुन लोगों की थी, जिनका जन्म यूरोप में हुआ था, और अुनका लोकमत शराब-बन्दी के क़ानून का अमल नहीं होने देता था। अिन शहरों के बाहर अमेरिकन जनता का बहुत ही बड़ा हिस्सा शराब से दूर रहता है। और हिन्दुस्तान की तरह ही वहाँ भी शराब का पीना सामाजिक और नैतिक दृष्टि से लज्जाजनक माना जाता है। अथवा यों कहिये, कि सन् १९३३ तक तो जरूर ही माना जाता था। पिछले चार वर्षों में अिस दिशा में जो अतिरेक हुआ है, अुसके खिलाफ जनता के अन्दर सख्त नाराजी पैदा होने लगी है। अमेरिका में राजनैतिक दृष्टि से शराब-बन्दी की असफलता का अेक कारण तो था, वहाँ के शहरों की राजनैतिक सत्ता; दूसरा कारण यह था कि शराब बनानेवाले लोग और शराब के व्यापार से लाभ अुठानेवाले लोग, अखबारी 'प्रोपैगेण्डा' में करोड़ों डालर खर्च करने को तैयार थे जबकि जन-साधारण, जिनकी दृष्टि में अिस प्रश्न का कोअी महत्त्व न रहा था, अिस ओर से बिलकुल ही अुदासीन थे। शहर के धनवान् लोग गाँवों को जिस तरह चूसते हैं, अुसका यह अेक अुदाहरण है। हिन्दुस्तान में

भी शराब-बन्दी के आन्दोलन को सफल बनाने के पहले आपको अिन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

"मुझे यह जानकर दुःख होता है कि कुछ लोगों का यह खयाल हो गया है कि ओसाओी लोग शराब-बन्दी के विरोधी हैं। श्री० फिलिप ने अैसे खयालात की वजह समझायी है और कहा है कि अिस देश में रोमन कैथलिकों को छोड़कर दूसरे बहुत-से ओसाओी शराब-बन्दी के पक्ष में हैं। अुनके अिस कथन में मैं अितना और जोड़ देना चाहता हूँ (और मैं मानता हूँ कि वे अिसे स्वीकार करेंगे) कि हिन्दुस्तान में जो अमेरिकन पादरी आते हैं, वे प्रायः निरापद रूप से अैसे समाजों से आते हैं जिनमें मदिरा-सेवन बुरा माना जाता है। वे स्वयं कभी मदिरा का स्पर्श तक नहीं करते। मदिरा-त्याग का वे धार्मिक सिद्धान्त के रूप में अुपदेश और प्रचार करते हैं; और अपने स्थापित गिरजाघरों में जो लोग नये-नये ओसाओी धर्म की दीक्षा लेने अुनके पास आते हैं, अुनसे भी मदिरा-त्याग की प्रतिज्ञा करवाते हैं। मैं मानता हूँ कि जिन ओसाओी-समाजों का अैसे मिशनों के साथ सम्बन्ध है, वे शराब-बंदी के आन्दोलन का अवश्य ही जोरदार समर्थन करेंगे।

"सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों में अमेरिकन पादरियों ने कॉंग्रेस के शराब बंदी आन्दोलन मे खुल्लमखुल्ला हाथ नहीं बँटाया था, अिससे यह न समझा जाना चाहिये कि वे शराब-बंदी के पक्ष ही में न थे। अिससे तो केवल यह सिद्ध होता है कि वे सत्याग्रह के पक्ष में न थे, अथवा अुसमें शामिल होने को राजी न थे। मैं समझता हूँ कि कानून से शराब-बंदी करवाने का जो आन्दोलन अिस समय चल रहा है, आप विश्वास रखिये कि अुसमें अिन लोगों का हार्दिक सहयोग आपको मिलेगा।"

श्रीयुत गिलसन को अुद्योग द्वारा दी जानेवाली अुस शिक्षा के, जिसका लक्ष्य विद्यार्थी का मानसिक विकास भी है, पूरी तरह स्वावलम्बी होने में जो शंका है, अुनका मुझे कोओी आश्चर्य नहीं होता। अिस प्रश्न की चर्चा मैंने अिसी अंक के अेक दूसरे लेख में की है। हाँ, अमेरिका की शराब-बन्दी के बारे में श्री० गिल्सन ने जो प्रमाण पेश किये हैं, पाठक अुन्हें दिलचस्पी के साथ पढ़ेंगे। (हरिजन, १६ अक्तूबर, १९३७)

नई योजना

अिस लेख में 'सरकार' से मतलब सात प्रान्तों में कॉंग्रेस की सरकार से
है। लेकिन अिससे वह समझने का कोअी कारण नहीं है कि कॉंग्रेस की सरकार
बनने से जो मनोवृत्ति महासभावादी लोगों की कमी नहीं थी, वह अेकाअेक पैदा
हो गयी। यद्यपि कॉंग्रेस का रचनात्मक कार्यक्रम सन् १९२० के महान् परिवर्तन
के समय से ही जारी है, तो भी अुसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि
कॉंग्रेसवालों में अुसके संबंध का जीवित वातावरण पैदा हो गया है। फिर, जो
कॉंग्रेस से बाहर हैं, अुनका तो पूछना ही क्या? दूसरे. यद्यपि संहारक (अगर
संहारक विशेषण का अहिंसक रचना के सम्बन्ध में प्रयोग करना अनुचित न हो
तो) अथवा निषेधात्मक कार्यक्रम जितना लोकप्रिय हुआ, अुतना रचनात्मक
अथवा अुत्पादक कार्यक्रम न हो सका, तो भी कॉंग्रेस सन् १९२० से अुसको
सही अर्थात् मानती आयी है। कांग्रेस ने कभी अुसको रद्द नहीं किया, और
कांग्रेसवालों ने भी अुसे ठीक-ठीक संख्या में अपना लिया है। अिसलिअे अिस
क्षेत्र में जो कुछ हो सका है, कॉंग्रेसवादियों द्वारा ही हो सका है, और प्रगति
की आशा भी वहीं की जा सकती है, जहाँ कांग्रेस की सरकार बनी हैं। लेकिन
रचनात्मक कार्य में श्रद्धा रखनेवाले लोग यह सोचकर कि अब तो हुकूमत
कॉंग्रेस के हाथ में है अपने प्रयत्नों को ढीला न करें, गफलत में न रहें। कॉंग्रेस
की सरकार के होने से तो अुनका धर्म यह हो गया है कि वे पहले से ज्यादा
जाग्रत, ज्यादा अुद्यमी और ज्यादा अध्ययनशील बनें। जब अैसा होगा, तभी जो
आशाअें कॉंग्रेस सरकार से रखी गयी हैं वे सफल होंगी। कॉंग्रेस-सरकार का
अर्थ है, लोकमत के प्रति अुत्तरदायी सरकार। अगर लोकमत अिस सरकार को
आज हटाना चाहे, तो हटा सकता है। लोकमत की अिच्छा और सत्ता पर ही
यह सरकार टिकी हुअी है। अिसलिअे अगर महासभावाले चाहें, तो वे रचनात्मक
कार्यक्रम को मन्जूर ही नहीं, बल्कि अुसपर अमल भी करा सकते हैं। अिसका यही
अेक रास्ता है। अिस सरकार के पास कोअी स्वतंत्र शक्ति अर्थात् तलवार की
शक्ति नहीं है। कॉंग्रेस ने अिसका सोच-समझकर त्याग किया है। यह शक्ति
ब्रिटिश सरकार के पास है। जिस दिन कॉंग्रेसी सरकार को ब्रिटिश हुकूमत का
यानी तलवार के बल का अुपयोग करना पड़ेगा, अुस दिन समझिये कि तिरंगे

झंडे का पतन हो गया, यानी कॉंग्रेसी सरकार मिट गयी। लेकिन अगर लोग कॉंग्रेसी-सरकार की बात को न मानें, अथवा अुसमें अहिंसा का प्रवेश न हो तो जो सरकार आज तेजस्वी दिखायी देती है, वह कल निस्तेज हो जायेगी।

अिसलिअे जिन कॉंग्रेसवादियों को रचनात्मक कार्य में श्रद्धा है, वे होशियार हो जायें। मैंने शिक्षा की जो योजना रखी है, वह भी रचनात्मक कार्य का अेक बड़ा अंग है। अुसे जो रूप मैं अिस समय दे रहा हूँ, मेरे कहने का मतलब यह नहीं है, कि कॉंग्रेस ने अुसको मंजूर कर लिया है। लेकिन आज मैं जो कुछ लिख रहा हूँ वह सन् १९२० से राष्ट्रीय शालाओं के विषय में मैंने जो कुछ कहा और लिखा है, अुसकी जड़ में छिपा ही हुआ था। मेरा यह दृढ विश्वास है, कि आज मौका मिलते ही यह चीज अिस तरह अेकाअेक प्रकट हो गयी।

अब अगर प्राथमिक शिक्षा अुद्योग द्वारा ही दी जाने को है तब तो अिस समय यह काम अुन्हीं लोगों से हो सकता है, जिन्हें खासतौर पर चर्खे में तथा दूसरे ग्राम-अुद्योगों मे विश्वास है। क्योंकि चर्खे का अुद्योग ग्राम-अुद्योगों में मुख्य है, और अिस अुद्योग के बारे मे चर्खा-संघ ने काफी जानकारी अिकट्ठा कर रखी है। दूसरे अुद्योगों के बारे मे ग्राम-अुद्योग-संघ जानकारी अिकट्ठा कर रहा है। 'असलिअे मुझे अैसा प्रतीत होता है, कि तत्काल जो भी रचना हो सकती है, वह चर्खे आदि के अुद्योग द्वारा ही हो सकती है। लेकिन जिन्हें चर्खे में श्रद्धा है वे सभी शिक्षक नहीं होते। हरअेक बढअी बढअीगिरी का अुस्ताद या शास्त्री नहीं होता। जो अुद्योग के शास्त्र को नहीं जानता, वह अुद्योग द्वारा सामान्य शिक्षा नहीं दे सकता। अिसलिअे जिन्हें शिक्षा के शास्त्र से प्रेम है, और चर्खे वगैरा से दिलचस्पी है वे ही प्राथमिक शिक्षा में मेरे सुझाये हुअे काम को दाखिल कर सकेंगे। अिस विचार से कि अैसे लोगों की थोड़ी सहायता मिलेगी मैं नीचे श्री दिलखुश दीवानजी का वह पत्र दे रहा हूँ, जो अुन्होंने मेरे नाम भेजा है।

"स्वावलम्बन और अुद्योग द्वारा शिक्षा के बारे में 'हरिजन' और 'हरिजन-बंधु' में आप जिन सुन्दर विचारों और अनुभवों को प्रकाशित कर रहे हैं, अुनसे मुझे अपने यहाँ के अिसी दिशा के कार्य में अितना प्रोत्साहन और अुत्तेजन मिल रहा है, कि मैं यह पत्र लिखने के लिअे मजबूर-सा हो गया हूँ,

और आपकी समस्त योजना कितनी अुपयुक्त है, अिस बारे में अपना अुत्साह आप पर प्रकट करने के लोभ को रोक नहीं सक रहा हूं। यह देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है, कि दो साल से मैं यहाँ जो छोटी-सी अुद्योग-शाला चला रहा हूं, अुसके अनुभव आपके विचारों से खूब मेल खाते हैं। अिसलिअे आप जिन क्रान्तिकारी विचारों को व्यक्त कर रहे हैं, अुनका मैं सम्पूर्ण रूप से स्वागत करता हूं, और अुनसे अपनी पूरी-पूरी सहमति प्रकट करना चाहता हूं। आप अिस बात को समझ सकेंगे कि यह सहमति या स्वीकृति मेरी अन्धश्रद्धा का परिणाम नहीं, बल्कि अनुभवजन्य श्रद्धा की प्रतीक है। आप अेक अैसी शास्त्र-सम्मत और सम्पूर्ण योजना का विचार कर रहे हैं जो सारे देश के लिअे अुपयोगी हो सकेगी। मैं यहाँ जो काम कर रहा हूं, अुसमें अभी पूर्णता और शास्त्रीयता की काफी गुंजाअिश है; और मैं अुसी दिशा में यत्नशील भी हूं। अिस चीज को अधिक-से-अधिक पूर्ण बनाने में हृदय बहुत ही आनन्द और अुत्साह का अनुभव करता है। परन्तु अिन दो साल से मुझे जो अनुभव हो रहे हैं, अुसके बारे में अुत्पन्न होनेवाले प्रश्नों पर जिस प्रकार का चिन्तन, मनन और चर्चा आज चल रही है, अुसपर से मुझे आपके स्वावलम्बी और अुद्योगी-शिक्षा के विचार बहुत ही अुपयुक्त प्रतीत होते हैं, और अनुभव से सिद्ध हो सकने योग्य दिखते हैं। आपके विचारों और मुद्दों को मैं जिस तरह समझ सका हूं, अुसके अनुसार मेरा भी यह अनुभव हो जाता है कि :

"१. अुद्योग को सभी प्रकार की शिक्षा का वाहन बनाने से सचमुच ही विद्यार्थी को सर्वोत्तम शिक्षा मिल जाती है। पुरुषार्थ और सदाचार के संस्कार अिस अुद्योगमयी शिक्षा के बहुमूल्य अुपहार बन जाते हैं, अतअेव हिन्दुस्तान-जैसे गरीब देश की शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने की जो अनहद शक्ति अिसमें पड़ी हुअी है, अुसके सिवा शुद्ध शिक्षा शास्त्र की दृष्टि से भी अुद्योग को वाहन बनाने से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास बहुत सरल बन जाता है।

"२. अुद्योग को शिक्षा का माध्यम बनाने से प्राथमिक शिक्षा अवश्य ही और आसानी से स्वावलम्बी बन सकती है। हिन्दुस्तान-जैसे गरीब देश की शिक्षा का प्रश्न शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने से ही छूट सकता है। सिवा अिसके, हमारी आर्य संस्कृति के लिअे भी यही पद्धति विशेष अनुकूल पड़ती है। मुझे तो चर्खे का अुद्योग बहुत रुच गया है। अैसा प्रतीत होता है कि

यही सर्वव्यापक हो सकता है। अिसलिअे दो वर्षों के मेरे अनुभव में चर्खे के अुद्योग से जो आमदनी हुअी है, अुसीके आंकड़े पड़े हुअे हैं। आपने जितना सोचा है, अुतना व्यवस्थित रूप अभी मेरे शिक्षण कार्य को प्राप्त नहीं हुआ है, अर्थात् अुससे जो अनुभव हुअे हैं, अुनमें प्रगति के लिअे अभी बहुत ही गुंजाअिश है। अगर आपकी आज्ञा हुअी, तो ये आँकड़े और अिनके सम्बन्ध के अपने विचार मैं सेवा में भेज दूँगा।

"३. अँग्रेजी को छोड़ देने से और प्राथमिक शिक्षा को विशेष व्यापक दृष्टि से देखने से, अुद्योग के लिअे ज्यादा समय देते हुअे भी, मुझे तो साफ-साफ दिखायी दे रहा है कि अिस पद्धति द्वारा हम कुछ ही वर्षों में अपने विद्यार्थियों का अधिक-से-अधिक विकास कर सकेंगे। आजकल की शिक्षा से जुड़े हुअे पाण्डित्य, विद्वत्ता, कौशल्य आदि के भ्रम-पूर्ण विचारों को जब हम छोड़ देंगे, तभी अुद्योग द्वारा शिक्षा के गर्भ में रहे हुअे सर्वतोमुखी शक्ति के विकास को हम पहिचान सकेंगे।

"४. पहली क्रांति यह होगी कि पाठशालाओं के कुल समय का तीन-चौथाअी समय अुद्योग को दिया जायेगा। अुसके बाद शिक्षा की पद्धति में दूसरी क्रांति यह करनी होगी कि वाचन, लेखन, समय-पत्रक परीक्षा और विषय-वार शिक्षा आदि के वर्तमान साधनों को दूर करके अुद्योग द्वारा शिक्षा के लिअे नीचे लिखे जो साधन बहुत ही अुपयोगी और सरल सिद्ध हो रहे हैं, अुनका प्रचार किया जाय।

"(अ) श्रुत-शिक्षण : पुस्तकों पर आधार रखने के बदले अगर शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के सामने सजीव पुस्तक बनकर बैठ जाय तो चलते-फिरते, बातों-ही-बातों से, लेकिन बड़े व्यवस्थित रूप से और थोड़े समय के अन्दर, विद्यार्थी अितना ज्ञान प्राप्त करते चलते हैं, कि शिक्षक के अुत्साह और विद्यार्थियों की जिज्ञासा के परिणाम-स्वरूप अुस सजीव पुस्तक में रोज-रोज नये-नये अध्यायों की वृद्धि होती ही जाती है। अिस प्रकार के श्रुत-शिक्षण से पुस्तकों पर होनेवाले खर्च का लगभग लोप ही हो जाता है।

"(आ) शिक्षक का साहचर्य : अुद्योग द्वारा शिक्षा का यह अेक बिलकुल अनिवार्य साधन है। जहाँ शिक्षक के हृदय में विद्यार्थियों के लिअे

प्रेम और अुत्साह अुमड़ता रहता है, वहाँ यह साहचर्य बहुत ही सहज, (रसप्रद) और परस्पर विकास-साधक सिद्ध होता है। ऐसा शिक्षक, शिक्षक होते हुअे भी सनातन विद्यार्थी रहता है।

"(अि) अुद्योगों द्वारा राष्ट्रीय और सामाजिक आन्दोलनों में बराबर हाथ बँटाते रहने के कारण विद्यार्थी-वर्ग बचपन ही से जन-समाज की अथवा सरकार की सहायता करने लगता है। लेकिन जैसा कि आपने लिखा है, अगर कोअी कुशल और अुत्साही शिक्षक जीवन के आरम्भ ही से विद्यार्थियों को शराब-बन्दी, हरिजन-सेवा और गाँवों की सफाअी के कामों में बराबर शामिल होने का अवसर देता रहे, तो वह अुन्हें सेवा की और समाज के परिचय की बहुत ही श्रेष्ठ, व्यावहारिक और सजीव शिक्षा देता है। अुद्योगों द्वारा शिक्षा का हमारा यह नया साधन हमारी समस्त शिक्षा को अत्यन्त व्यवहारिक, सजीव और सफल बना देता है। अिस बारे में जितना ही अधिक सोचता हूँ, अुतना ही मुझे अधिकाधिक स्पष्ट प्रतीत होता जाता है, कि स्वराज्य-सञ्चालन की हमारी खादी, ग्रामोद्योग, शराबबंदी, हरिजन-सेवा, और गाँवों की सफाअीवाली प्राण-पोषक प्रवृत्तियों के लिअे अुद्योग-प्रधान प्राथमिक पाठशालाअें बहुत ही सहायक सिद्ध होंगी। विद्यार्थी ही राष्ट्र का सच्चा निर्माण कर सकते हैं; अिस सूत्र का नअी योजना द्वारा कितना सुन्दर प्रयोग होनेवाला है!

"(अी) माता-पिता और गुरुजनों के साथ का अत्यन्त निकटवर्ती और अधिक सजीव सम्बंध हमारी नअी प्राथमिक शिक्षा के लिअे यह साधन बहुत ही शक्तिशाली सिद्ध होनेवाला है। आजकल की शिक्षा माता पिताओं और विद्यार्थियों के बीच के अंतर को बढ़ाती रहती है। रजिस्टर पर सही करने और फीस देने के सिवा माँ-बाप को बच्चों की पढ़ाअी में और कोअी दिलचस्पी नहीं होती। स्कूलों की पढ़ाअी किताबी होती है, अिससे विद्यार्थी गृह-जीवन की बातों से दूर-ही-दूर रहते हैं, और पारिवारिक प्रेम शिथिल हो जाता है। पुरानी वर्ण-व्यवस्था के कारण कृषि और अुद्योग की परंपरागत जंजीर की जो कड़ियाँ परस्पर जुड़ी हुअी थीं, वे शिक्षा की दिशा में अिस तरह

अुलझ और जो गयी हैं, कि शुद्ध वर्ण-व्यवस्था का लोप हो रहा है। फलतः आज देश की खेती का और देहाती अुद्योग-धन्धों का ह्रास हो रहा है। जब हमारी शिक्षा अुद्योगमय होगी, तो अुसका सम्बन्ध गाँवों के अुद्योगों से अर्थात् माता-पिता के धन्धों से सीधा और घनिष्ट हो जायेगा। अिसलिअे माँ-बाप को अुससे बड़ी दिलचस्पी हो जायेगी। अुन्हें विश्वास रहेगा, कि अुनके लड़के-लड़की पढ़-लिखकर निरुद्योगी नहीं, बल्कि घर के काम में और घरेलू अुद्योग-धन्धों में सहायक होंगे। अिस प्रकार प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रश्न अधिक सरल हो जायेगा। अुस दशा में अनिवार्य शिक्षा के पीछे दण्ड या जुरमाने की ताकत नहीं रहेगी। बल्कि माता-पिता का अुत्साह-पूर्ण सहयोग ही अुसकी सच्ची ताकत होगा।

"(अु) यह बिलकुल ही अुचित है कि आप प्राथमिक शिक्षा के विचार को व्यापक रूप देना चाहते हैं। मेरे पास गुजराती चौथे दर्जे तक की शिक्षा पाये हुअे विद्यार्थी आये हैं। अुनका जो अनुभव मुझे हो रहा है, अुससे पता चलता है कि चौथे दर्जे के बाद के देहाती छात्रों को सम्पूर्ण प्रश्न नवीन और क्रान्तिकारी अुपायों की अपेक्षा रखता है। अनुभव यह हो रहा है कि चौथे दर्जे के बाद गाँव के विद्यार्थी अंग्रेजी के मोह के कारण शहरी मदरसों की तरफ ही ज्यादा खिंचते हैं। शहर की शिक्षा खर्चीली होने से कभियों के लिअे अुसके दरवाजे बन्द रहते हैं। अुनकी शिक्षा बीच ही में रुक जाती है। जो लड़-झगड़कर आगे बढ़ते भी हैं, वे विलासी, और परोपजीवी शिक्षा पाकर अपने आपको, अपने माता-पिता को और गाँवों के हित को नुकसान ही पहुँचाते हैं। यदि लोगों को गाँवों में अुद्योग-शालाअें कायम करके पढ़ाया जाय, तो अिससे माता-पिता का, विद्यार्थियों का, और गाँवों का अपार लाभ हो सकता है। मेरा यह अनुभव बराबर दृढ़ होता जा रहा है, कि चार घण्टों के अुद्योग और दो घण्टों की पढ़ाअीवाले मदरसों में विद्यार्थियों को बहुत आसानी से और बहुत ही थोड़े समय में मैट्रिक तक का ज्ञान कराया जा सकता है।"

(हरिजन-बन्धु, १७ अक्तूबर, १९३७)

एक अध्यापक का समर्थन

आपकी अिस सूचना के साथ मैं सहमत हूँ, कि बालक को कोअी भी अेक दस्तकारी शास्त्रीय और संस्कारी ढंग से सिखाया जाये और जिस क्षण से अुसकी शिक्षा का आरम्भ हो, अुसी क्षण से अुसे कोअी अुपयोगी चीज पैदा करना या बनाना सिखाया जाये। मैं अिससे न केवल सहमत हूँ, बल्कि अिसका साग्रह समर्थन भी करता हूँ। अिसमें सन्देह नहीं कि यह अेक क्रान्तिकारी सूचना है। फिर भी मैं अिससे शत-प्रतिशत सहमत हूँ। सदाचार, संस्कार और आर्थिक लाभ की दृष्टि से व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के लिअे, अिसका बहुत ज्यादा महत्त्व है। अिससे बालक न केवल शरीर-श्रम के गौरव को समझेंगे, बल्कि अुनमें स्वावलंबन की भावना का विकास होगा और वे जीवन में सृजन की अुपयुक्तता और अुसके महत्त्व को ठीक-ठीक समझ सकेंगे। हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि बुद्धि, शरीर, नीति और अुद्योग के मामलों में बालक की जो आवश्यकताअें हैं, अुनकी पूर्ति की जाये और अुसकी शक्तियों का विकास किया जाये। अुद्योग की अिस शिक्षा में बालक को अुत्पादन की सभी क्रियाओं के सर्व-सामान्य सिद्धान्त सिखाये जायेंगे और साथ ही बालकों अथवा नौजवानों को सब अुद्योगों के सादे-से-सादे औजारों के अुपयोग की व्यावहारिक शिक्षा भी मिलेगी। हमारा आदर्श यह होना चाहिये, कि हम अगली पीढ़ी के बालकों को पढ़ाअी के साथ-साथ अैसे काम सिखायें, जिनमें कुछ-न-कुछ सृजन की आवश्य-कता हो। अिसका मतलब यह है कि साधारण शिक्षा के साथ शारीरिक काम को जोड़ दिया जाये; और अिसका ध्येय यह है, कि बालक को अुद्योग की अुन सब शाखाओं का साधारण ज्ञान करा दिया जाये, जिनके साथ शारीरिक काम का सुमेल सिद्ध किया जा सके। बौद्धिक और नैतिक यत्नों के साथ जुड़े हुअे अिस शारीरिक श्रम को हमारी शिक्षा में मुख्य स्थान मिलना चाहिये, अर्थात् दिमाग का काम हाथ-पैर के काम से अलग न किया जाना चाहिये।

"प्राथमिक शिक्षा की अपनी पद्धति में हमें नीचे लिखे विषयों का समावेश करना चाहिये :

१. जन्मभाषा या मातृभाषा

२. अंकगणित

३. प्राकृतिक विज्ञान

४. समाज-शास्त्र

५. भूगोल और अितिहास

६. शारीरिक श्रम का अथवा अुद्योग-धंधों का ज्ञान

७. कसरत

८. कला और संगीत

९. हिन्दुस्तानी

"अब सवाल होता है कि बालक की शिक्षा का आरम्भ किस अुमर से किया जाय। यदि पाच या छः वर्ष की अुमर से शिक्षा का आरम्भ किया जाय, तो क्या अिस अुमर में बच्चों को कोअी अुपयोगी दस्तकारी सिखायी जा सकती है? फिर अिसके सिखाने में जो खर्चा होगा, वह कहाँ से आयेगा? यह चीज न साक्षरता के प्रचार से किसी कदर सरल होगी और न कम खर्चीली या सस्ती ही। मैं चाहूँगा कि आठ या दस वर्ष की अुमर से दस्तकारी सिखाना शुरू किया जाय; क्योंकि औजारों का अुपयोग करने के लिअे जरूरी है कि बालक के हाथ शक्तिशाली हों; तौल या दृढ़ता से युक्त हों। लेकिन मैं मानता हूँ कि प्राथमिक शिक्षा का आरम्भ कम-से-कम पाँचवें या छठे वर्ष में हो जाना चाहिये। अिससे अधिक अुमर तक बालक की शिक्षा को रोका नहीं जा सकता। हम जिस तरह का अुद्योग बालकों को सिखाना चाहते हैं, अुसके सिवा अुन्हें मैट्रिक तक की योग्यता करा देने के लिअे हमारे पास दस साल का पाठ्यक्रम होना चाहिये। किंतु अिन बालकों द्वारा—विशेषकर बहुत छोटी अुमर के बालकों द्वारा—बनायी गयी चीजों के आर्थिक मूल्य के विषय में मैं अवश्य ही थोड़ा सशंक हूँ। जिस देश में व्यापार-विषयक कोअी प्रतिबंध नहीं हैं, जहाँ रोज-रोज नअी-नअी फैशनें निकलती हैं, और जहाँ बच्चों की बनायी हुअी चीजें टिकाअू अथवा सफाअीदार नहीं होती, वहाँ अुनका बिकना मुमकिन नहीं मालूम होता। अगर राज्य अिन चीजों को खरीदता है, अथवा किसी प्रकार की सेवा या सहायता के बदले में अिन्हें लेता है, तो लेकर वह अिन चीजों का क्या करेगा? अिससे अच्छा तो यह है कि राज्य सीधे तौर पर शिक्षा में अपना पैसा खर्च

करे। हाँ, बड़ी अुम्र के, यानी १२ से १६ वर्ष के लड़के बाजार में बिकने योग्य चीजें बना सकते हैं, और अुनसे काफी आमदनी भी हो सकती है।

"मैं तो स्वावलम्बिता के प्रश्न का विचार दूसरे ढंग से करना चाहता हूँ और यदि अिसके लिअे नये कर लगाने या खर्च बढ़ाने की जरूरत पड़े, तो अुसके लिअे खुशी-खुशी तैयार हूँ। अुपयोगी दस्तकारी के विचार को प्राथमिक शिक्षा के अूँचे दर्जों में अथवा माध्यमिक शिक्षा में ठीक-ठीक बढ़ाया या विकसित किया जा सकता है। मैं मानता हूँ कि दस्तकारी को कम-से-कम अेक खास हद तक स्वावलम्बी बनाने का यत्न किया जाना चाहिये और अनुभव-प्राप्ति के बाद, अुत्पन्न की गयी चीजों के मूल्य के आधार पर, जहाँ तक हो सके, अुसे सम्पूर्ण रूप से स्वावलम्बी बनाना चाहिये। यहाँ केवल अेक खतरे से हमें बचना होगा और वह यह कि शरीर, मन और आत्मा के संस्कार की शिक्षा कहीं आर्थिक अुद्देश्य और पाठशाला की आर्थिक व्यवस्था के सामने बिल्कुल ही गौण न हो जाये।

"आजकल के मैट्रिक के कोर्स से अंग्रेजी को निकालकर प्राथमिक शिक्षा को मैट्रिक तक बढ़ाने की आपकी सूचना भी मुझे मंजूर है। मैं तो चाहता हूँ कि अुसमें हिन्दुस्तानी की शिक्षा को भी बढ़ाया जाये। अिसका अर्थ यह है कि आप प्राथमिक शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा का भी समावेश करते हैं। आपका अिरादा स्कूल की पढ़ाअी को अेक सम्पूर्ण घटक बना देने का है और मैं समझता हूँ कि यह घटक दस साल का हो सकता है। अिसमें अितनी बात और बढ़ाना चाहूँगा कि यह सारी शिक्षा मातृभाषा छोड़ और किसी भाषा द्वारा न दी जाये। अिससे बालक के मन का स्वतंत्र निर्माण होगा; अुसके मन में ज्ञान के और जीवन के प्रश्नों के विषय में गहरी दिलचस्पी पैदा होगी; और अुसके अन्दर सृजन की शक्ति और दृष्टि अुत्पन्न होगी।

"मैं मंजूर करता हूँ कि मध्ययुग में शिक्षा अधिकतर स्वावलम्बी थी और यदि हमारी सामाजिक, आर्थिक अेवं राजनैतिक व्यवस्था और दृष्टि मध्ययुगीन ही रहे, तो आज भी साधारणतया हमारी शिक्षा जरूर ही स्वावलम्बी बनायी जा सकती है। मध्ययुगीन से मेरा मतलब है, वर्गों और वर्गों की अर्थ-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्था के पुराने और संकुचित विचारों से चिपटी रहनेवाली। लेकिन आज, जबकि हम पर प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद और समाजवाद की कल्पनाअें

अपना प्रभाव डाल रही हैं, हमारी शिक्षा स्वावलंबी नहीं बन सकती। शासन-बल और साधन-सामग्री से संपन्न और संगठित जो अेकमात्र शक्ति आज समाज के पास है, वह शासन या सरकार की शक्ति है। अिसलिअे अिस काम का जिम्मा अुसीको अपने सर लेना होगा। शक्ति के पुराने चक्रों या समूहों में, यानी जातियों, वर्गों, संघों, पाठशालाओं, पंचायतों, और धर्म-संघों आदि में आजकल शक्ति का, शासन-बल का, अथवा साधन-सामग्री का अभाव है; और पुराने जमाने में जिस व्यापक अर्थ में अिसका अस्तित्व था, वह अब नहीं रह गया है। लोगों को भी अब अिन पर कोअी श्रद्धा नहीं रही। समाज की सारी शक्ति अब राजनैतिक समूहों के हाथ में चली गयी है। और हिन्दुस्तान में भी राजनैतिक शक्ति ही आर्थिक और सामाजिक शक्ति बन गयी है। अिसलिअे दो आदर्श—अेक मध्ययुगीन और दूसरा अर्वाचीन—साथ-साथ नहीं चल सकते। पुराने समय में न तो व्यापक शिक्षा थी, न प्रजासत्तात्मक शासन था और न सबको समान समझनेवाली राष्ट्रीय दृष्टि थी।

"शिक्षा के कार्य के लिअे नवयुवकों से अनिवार्य सेवा लेने का विचार अब कोअी नया विचार नहीं रहा। लेकिन यह जरूरी है कि अिसे कार्य-रूप में परिणित किया जाय। कॉंग्रेस और अुसके प्रांतीय मंत्री अपने अधिकार-बल से देश के सुशिक्षित वर्गों से प्रार्थना करें, और अुनको अिस बात का न्योता दें, कि अुनमें से जिन्हें सर्व-साधारण की शिक्षा से प्रेम है, अुसके लिअे दिल में लगन है; वे सब जनता को साक्षर और सस्कारी बनाने में और अुसमें शिक्षा का प्रचार करने में सरकार की सहायता करें। अिनसे सर्व-साधारण के साथ अुनका नये ही प्रकार का सपर्क केवल आर्थिक और राजनैतिक विषयों का ही न रहेगा; बल्कि अुसके द्वारा जनता की सामूहिक शक्ति और बुद्धि को जाग्रत करने, अुन्हे संगठित और व्यवस्थित बनाने का हमारा अुच्चतम हेतु भी सिद्ध होगा।"

जब मैंने पहली बार स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षा के बारे में लिखा था, तभी शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवाले अपने साथियों से प्रार्थना की थी, कि वे अुसपर अपनी सम्मति लिखकर भेजें। जिनकी संमतियाँ सबसे पहले आयी अुनमें हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री. पुन्तावेकर भी थे। अुन्होंने लंबा और दलीलों से भरा हुआ अेक पत्र भेजा था। लेकिन स्थानाभाव के कारण मैं अुसे अबतक अिस पत्र में न दे सका था। अूपर मैंने अुनके पत्र का प्रस्तुत अंश

ही दिया है। सक्षेप की दृष्टि से साक्षरता और कॉलेज की शिक्षा से सम्बन्ध रखनेवाले अंश दिये हैं। क्योंकि अिस महीने की २२ वीं और २३ वीं तारीख को जो परिषद् होनेवाली है, अुसमें चर्चा का मुख्य विषय होगा—अुद्योग द्वारा स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षा!

(हरिजन, अक्तूबर, १९३७)

अतीत का फल और भविष्य का बीजारोपण

आजकल की शिक्षा-प्रणाली की यह अेक विचित्रता ही है कि सब कहीं अुसीकी चाह होते हुअे भी कोअी अुसका समर्थन नहीं करता। विद्यार्थी अुसीकी तरफ दौड़ते हैं, माँ-बाप अुसीको चाहते हैं, दानी धन अुसीके प्रचार के लिअे देते हैं, फिर भी अचरज यह है कि ये सब कहते हैं: 'अिस शिक्षा में कोअी सार नहीं।' तब सवाल अुठता है कि आखिर यह चलती कैसे है? अिसे अैसा कौन-सा वरदान मिला है कि सबका आन्तरिक विरोध होते हुअे भी यह बराबर बढ़ती ही जा रही है। आमतौर पर माना यह जाता है कि 'राजा कालस्य कारणम्' के अनुसार सरकार की मान्यता ही अिसे टिकाये हुअे है लेकिन यह ख्याल भी पूरी तरह सही नहीं मालूम होता। आज छोटे-बड़े सभी अधिकारी अुन्हे दिल से शिक्षा की व्यर्थता की बातें करते हैं। फिर भी न जाने क्यों, कोअी अिसे छोड़ने को तैयार नहीं?

तो अिस शिक्षा-पद्धति का जीवनाधार क्या है? सचमुच यह अेक पहेली ही है कि जिस शिक्षा के कारण बेकारी जरूर ही पल्ले पड़ती है अुसीके पीछे लोग अितने दीवाने क्यों हैं?

अिसका अेक कारण तो यह मालूम होता है कि अिस पद्धति के जो छोटे-मोटे लाभ हैं, अुन्हें छोड़ने के लिअे लोग तैयार नहीं। दूसरे, यह मालूम होता है कि कदाचित् अिस शिक्षा-प्रणाली की यान्त्रिकता मनुष्य के स्वभाव की जड़ता को प्रिय लगती है; अथवा अिस शिक्षा के द्वारा जो जीविका और प्रतिष्ठा मिलती है, अुसकी तह में कोअी अैसा पाप छिपा हुआ है, जिसे छोड़ने का विचार तक

मन में नहीं आता! अथवा, परिवर्त्तन के लिअे सब तरह की अनुकूलता होते हुअे भी सिर्फ हिम्मत की कमी के कारण परिवर्त्तन का आरम्भ नहीं होता।

जो लोग सामाजिक अन्यायों से लाभ अुठाते हैं अुनकी अेक विशेषता यह पायी जाती है, कि किसी दूषित प्रथा को सुधारने का अुपाय जब अुन्हें बताया जाता है, तो वे अुस अुपाय को अंशतः स्वीकार कर लेते हैं, और यों जाहिरा जनता के आंसू पोंछने का दिखावा करके अन्याय को जैसे का तैसा कायम रहने देते हैं। हमारी यह दूषित शिक्षा-प्रणाली अभी तक बदल नहीं रही है, अिसकी वजह भी शायद यही है। अगर दोषों का असर अेक छोर पर पड़ गया है, और अिलाज दूसरे छोर से किया जाता है, तो वह अिलाज भी दूषित हो जाता है। अिसलिअे हर बात में, हर चीज के, गुण और दोष दोनों देखने की जरूरत रहती है। यदि गलती करना और अुससे होनेवाली हानि सहकर ही कुछ सीखना है, तब तो सोचने-समझने की कोअी जरूरत ही नहीं रहती। जड़-जीवन में कअी परिवर्त्तन यों ही हो जाते हैं; लेकिन मनुष्य के जीवन का विकास सोच-समझकर और जान-बूझकर किये परिवर्त्तनों से ही होता है।

आजकल की शिक्षा-प्रणाली के दोषों को पहचानकर अुन्हें सुधारने की कोशिश कअी जगह हुअी है। शिक्षा-सुधार के नाम से और कहीं-कहीं राष्ट्रीय शिक्षा के नाम से, कुछ छोटे-मोटे प्रयोग भी किये गये हैं। अिन सब प्रयोगों की अेक खूबी यह रही है कि साहस के साथ सुधार करते हुअे भी किसी प्रचलित शिक्षा-प्रणाली के साथ पग-पग पर समझौता करने का अिरादा रहता आया है; क्योंकि अिस राजमान्य शिक्षा-प्रणाली का संबंध जीविका से है। फिर भी आश्चर्य अिस बात का है कि अिस प्रणाली का बड़ा-से-बड़ा दोष भी यही बताया जाता है कि अिससे जीविका का यह सवाल ही हल नहीं होता!

अत में, अब गांधीजी ने अिस दिशा में हिम्मत के साथ कदम बढाया है। जबसे वे हिन्दुस्तान आये हैं, तब से अिस शिक्षा के प्रति अपना असंतोष व्यक्त करते रहे हैं। शिक्षा-सुधार के अनेक प्रयोगों को अुनके आशीर्वाद और अुनकी सहायता मिली है। लेकिन अिस तरह के प्रयोगों का सीधा बोझ अुन्होंने अबतक अपने अूपर नहीं लिया था और यही कारण था कि शिक्षा के विषय में अुन्होंने अपनी कोअी नीति (क्रीड) देश के सामने साफ़तौर से नहीं रक्खी थी।

आज जबकि हमारे देश की राजनैतिक परिस्थिति ने पलटा खाया है, और कॉंग्रेस ने देश के शासन की बागडोर को हाथ में लेने का निश्चय किया है गाधीजी ने भी शिक्षा के प्रश्न को फिर से अपने हाथ में लिया है। अगर देश को सर्वनाश से बचना है, तो जरूरी है कि गरीब जनता के सिर पड़े हुअे आर्थिक बोझ को कम किया जाय। जिसे पेट भर खाने को नहीं मिलता, वह सरकार को पैसा कहा से दे व क्यों दे? प्रिन्सिपल पराजपे ने असहयोग आंदोलन के जमाने में गाधीजी से कहा था कि अगर शराब-बन्दी करोगे और आबकारी की आमदनी छोड़ बैठोगे तो शिक्षा के लिये धन कहाँ से पाओगे? गाधीजी को अुनकी यह बात बराबर खटकती रही है। अुनका खयाल है कि शिक्षा के अिस नशे को पिलाने के लिअे हमें आम रिआया को शराब पिलानी पड़ती है: और अुनके विचार में, यह स्थिति असह्य है। अगर मजदूरों और किसानों को, हरिजनों और कारीगरों को शराब पिलाकर ही हम अपने मध्यमवर्ग को सुरक्षित और सुसस्कृत बना सकते हैं, तो प्रश्न अुठता है, कि अैसी शिक्षा कहा तक हमारे काम की है?

अगर शराब-बंदी का कार्यक्रम सफल हुआ और आबकारी की आमदनी बंद हो गयी, तो फिर आमदनी का दूसरा रास्ता निकलने तक जरूरी होगा कि शिक्षा का काम किफायत से चलाया जाय। यह अेक अैसा अुपाय है, जो हर किसी के ध्यान में तुरन्त आ सकता है। लेकिन गाधीजी के सोचने का तरीका कुछ और ही है। वे हरअेक सवाल की तह तक पहुंचकर अुसपर विचार करते हैं। शराब-बंदी के सिलसिले में, शिक्षा के आर्थिक पहलू पर विचार करते हुअे भी जब अुपाय का प्रश्न सामने आया, तो शराब को और अुससे होनेवाली आमदनी को भूलकर ही, बिलकुल स्वतन्त्र रूप से अुन्होंने अुसपर विचार किया।

जो देश दूसरे देशों को लूटकर अुनका धन अपने यहा लाना नहीं चाहता और अपने देश को दूसरों से लुटवाने का काम भी किसी गैर के हाथ में सौपना नहीं चाहता, अुस देश की शिक्षा-प्रणाली का स्वरूप स्वतन्त्र ही हो सकता है— होना चाहिये। जहाँ करोड़ो की संख्या में बड़ों को और बच्चों को पढ़ाना है, वहाँ जरूरी है कि विद्या यथासम्भव स्वावलम्बी हो। लोगों पर कर का बोझ लादकर अुसकी आमदनी से अुनके बच्चों को मुफ्त में पढ़ाने से कहीं बेहतर है कि शिक्षा का बोझ शिक्षा पानेवाले विद्यार्थी और अुन विद्यार्थियों के शिक्षक

मिलकर अुठा लें। जो शिक्षक या अध्यापक अपनी गुजर-बसर के लिअे जितनी कम तनख्वाह लेता है, अुतनी ही वह देश को आर्थिक सहायता पहुंचाता है। अिसी तरह अगर विद्यार्थी भी अपनी पढ़ाअी के दिनों में कोअी अुत्पादक काम कुशलता-पूर्वक करना सीख लें, तो वे भी अपनी शिक्षा के खर्च का बहुत-कुछ बोझ खुद अुठा सकेंगे। अिस प्रकार गुरु और शिष्य दोनों मिलकर कम-से-कम शिक्षा के बारे में तो सारे समाज को निर्भर और निश्चित कर सकेंगे।

शिक्षा-शास्त्र की दृष्टि से देखा जाय, तो भी अब वह समय आ गया है, जब शिक्षा-प्रणाली मे व्यापक क्रान्ति की आवश्यकता का अनुभव होने लगा है। अबतक शिक्षा की जिस पद्धति का दौरदौरा रहा है, अुसमें सारा जोर किताबी पढ़ाअी पर डाला जाता है और अुसके जरिये दूसरों के अनुभवों, दूसरों की कल्पनाओं और दूसरों के तर्कों को रटाने की रीति ही प्रचलित है। अिसमें मानवजीवन का और अुसकी परिस्थितियों का कोअी ध्यान नहीं रक्खा जाता। अिने-गिने वैज्ञानिकों ने भले ही कुछ अद्भुत आविष्कार किये हों, लेकिन सर्व-साधारण की शिक्षा का आधार तो किताबें ही रही हैं। जिस अवस्था में बालकों की सब शक्तियों का विकास होता है, सदाचार की नींव डाली जाती है, अुसी अवस्था में परावलम्बी और पराश्रित शिक्षा प्राप्त करने से आज राष्ट्र की कितनी हानि हो रही है, अिसका कोअी विचार नहीं करता।

निजी प्रयोगों की और मेहनत-मजदूरी करके जीवन में अुद्योग को प्रधान स्थान देने की बात तो समाज ने मान ली, लेकिन शिक्षा का आधार वही पुराना तरीका बना रहा, जिसमें कअी-कअी विषयों के अध्ययन को दृष्टि के सामने रखकर सिर्फ किताबें-ही-किताबें पढ़ाअी जाती हैं। शिक्षा में अुद्योग को स्थान देने की बात बहुत पहले सर्व-सम्मत हो चुकी है। अिस कथन मे भी अब कोअी नवीनता नहीं रही, कि शिक्षा का आधार निरीक्षण और परीक्षण ही होना चाहिये। लेकिन राष्ट्रीय जीवन की समग्र और महान् प्रवृत्ति का अेक हिस्सा बनकर, अुसी राष्ट्रीय जीवन के लिअे किसी अुत्पादक अुद्योग या व्यवसाय द्वारा सारी शिक्षा प्राप्त करने का विचार, अेक बिलकुल नया विचार है। अिस पद्धति में अुद्योग या व्यवसाय शिक्षा का अेक विषय न रहकर संपूर्ण शिक्षा का अेक प्रधान माध्यम या वाहन बन जाता है, और अुसीके द्वारा शिक्षा का खर्च निकालने की जिम्मेवारी आ जाने से अुद्योग निरा खेल नहीं रह जाता, बल्कि अेक पारमार्थिक और वास्तविक

तथ्य बन जाता है। अुद्योग का वह रूप अैसा है कि अिसके द्वारा अेक नअी अहिंसात्मक संस्कृति की नींव डाली जा सकती है; और अिस तरह शिक्षा में अुद्योग की यह दृष्टि निश्चय ही अेक नअी दृष्टि सिद्ध होती है।

मै मानता हूँ, कि यदि पूरी-पूरी श्रद्धा के साथ गांधीजी की अिस शिक्षा पद्धति का प्रयोग किया जाय, और अुसे पूरा-पूरा मौका दिया जाय, तो आशा है कि अेक या दो पीढ़ियों के अंदर ही हमारे समाज की सारी सूरत ही बदल जायेगी।

अब हम यह देखें कि गांधीजी की अिस योजना में किन किन तत्वों का समावेश हुआ है।

१. जबतक अपने देश की शिक्षा-प्रणाली पर हमारा कोअी अंकुश या अधिकार न था, तबतक राष्ट्रीय शिक्षा का अर्थ वह शिक्षा ही हो सकता था, जिसका सरकार से कोअी सम्बंध न हो। देश के नेता राष्ट्र के हित के लिअे जिस शिक्षा-पद्धति को अच्छी समझते थे, वही राष्ट्रीय शिक्षा थी। अिस राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति का निश्चय तीन दृष्टियों से किया जा सकता था। (१) राष्ट्र की अैतिहासिक परम्परा: (२) राष्ट्रीय जीवन के वर्तमान आदर्श, (३) राष्ट्र की वर्तमान आवश्यकताअें।

२. राष्ट्रीय दृष्टि को सामने रखकर अिस प्रकार की शिक्षा के प्रयोग हमारे देश मे पिछले ५० वर्षों से होते आये हैं। करीब-करीब सभी प्रान्तों में अिस प्रकार के प्रयोग हुअे हैं। असहयोग के जमाने में गुजरात, बिहार, सयुक्त प्रांत आदि प्रांतों मे राष्ट्रीय विद्यापीठ भी कायम हुअे। ये संस्थाअें राष्ट्रीय दृष्टि से और राष्ट्रीय संगठन की शक्ति से चलती थीं, और मानना होगा कि देश ने अिसके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में, बहुत-कुछ अनुभव भी प्राप्त किया। अिन संस्थाओं के प्रयत्नों और प्रयोगों के फलस्वरूप भविष्य के कार्य की दिशा भी कुछ-कुछ स्पष्ट हो गयी। अिन प्रयोगों के परिणाम स्वरूप जनता के सामने शिक्षा के क्षेत्र में जो आदर्श न्यूनाधिक स्पष्टता के साथ रक्खे गये हैं, और जिनमें से बहुतों को समाज ने स्वीकार भी किया है, अुनमें से कुछ अिस प्रकार हैं:

शिक्षा में मातृभाषा की प्रधानता हो। अन्तर्प्रान्तीय विचार-विनिमय और सगठन के लिअे अपने देश की अेक राष्ट्रभाषा हो, और वह हिन्दी हिन्दुस्तानी हो। शिक्षा मे अस्पृश्यता को कहीं भी स्थान न दिया जाय। प्राथमिक शिक्षा

केंद्रित कर रहे हैं। अुनके विचार में शिक्षा की यह योजना अुनकी आज तक की समस्त सेवा का सत्त्व है। अुनका विश्वास है कि अहिंसा के सिद्धान्त का उत्कृष्ट प्रयोग अिस योजना द्वारा ही किया जा सकेगा।

स्थूल रूप में अुनकी योजना की रूप-रेखा अिस प्रकार है :—

१. किसी-न-किसी राष्ट्रोपयोगी अुद्योग को केंद्र में रखकर ही सारी शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय।

२. प्राथमिक शिक्षा को ही राष्ट्र की सर्व-सामान्य और सम्पूर्ण शिक्षा का रूप दिया जाय।

३. विद्यार्थियों के अुद्योग से शिक्षकों के वेतन का खर्च निकालने का प्रयत्न किया जाय; अर्थात् अुद्योग द्वारा अपनी पढाअी की गुरु-दक्षिणा देने का मार्ग राष्ट्र के युवकों और युवतियों को सुझाया जाय।

४. प्राथमिक शिक्षा का माध्यम शुरू से आखिर तक विद्यार्थी की मातृ-भाषा या प्रान्तीय भाषा ही रहे। अिस प्राथमिक शिक्षा में अंग्रेजी को कहीं भी स्थान न दिया जाय।

५. प्राथमिक शिक्षा के अन्त में राष्ट्र-भाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी नागरी या अुर्दू लिपि के द्वारा अनिवार्य रूप से पढाअी जाय।

६. यदि पाठशाला में बननेवाली चीजें स्थानीय बाजार में न बिक सकें, तो अुन्हें अुचित कीमत देकर खरीद लेने की जिम्मेदारी सरकार की मानी जाय।

७. सरकार की दूसरी जिम्मेवारी यह हो कि जो नवयुवक प्राथमिक शिक्षा पूरी करके निकलें अुन्हें कम-से-कम १५ रु. मासिक का काम दे।

गांधीजी की यह योजना अिन सात सिद्धान्तों पर निर्भर है। अपनी अिस योजना की चर्चा वे देश के शिक्षा प्रेमी सज्जनों के साथ करना चाहते थे। मध्यप्रान्त और बरार के शिक्षा-मन्त्री और शिक्षा-विभाग के अधिकारियों के साथ वे अिस विषय पर विचार-विनिमय कर ही रहे थे, कि अितने में मारवाड़ी-शिक्षा मंडल की रजत जयंती का आयोजन नवभारत विद्यालय, वर्धा द्वारा आरम्भ हुआ और अिसी सिलसिले में अखिल भारत शिक्षा परिषद् का विचार भी परिपक्व हो गया।

अिस परिषद् का रूप जान-बूझकर छोटा और अवैध रक्खा गया। परिषद् में प्रधानतया वही लोग बुलाये गये, जिन्हें या तो राष्ट्रीय शिक्षा का अनुभव था या गांधीजी की नअी योजना से खास दिलचस्पी थी। अिस तरह परिषद् का अुद्देश्य परिमित होने के कारण, और गांधीजी की अस्वस्थता के कारण, अिस परिषद् में सब किसीको बुलाया नहीं जा सका।

शिक्षा के नव-विधान पर सोचनेवाले कॉंग्रेसी शिक्षा-मंत्रियों को अिस परिषद् में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। मंत्रियों में सीमाप्रांत के मंत्री की और मद्रास के प्रधान मंत्री श्री राजगोपालाचार्य की अनुपस्थिति खटकती थी। गांधीजी अिस परिषद् के अध्यक्ष थे और सौ० सौदामिनी मेहता के शब्दों में परिषद् की सारी कार्रवाअी अेक पारिवारिक जलसे की भांति अतिशय शांत और स्निग्ध वातावरण में हुअी थी। अिसका यह मतलब नहीं, कि परिषद् में मतभेद, सिद्धान्त-भेद और शंकाअें पैदा ही न हुअीं। परिषद् ने और अुसकी विषय-विचारणी सभा ने दो दिन में जिन प्रश्नों पर विचार किया, वे अिस प्रकार थे :

१. अिस शिक्षा-प्रणाली का अहिंसा के साथ अविभाज्य संबन्ध है या नहीं ?

२. यंत्र-युग के अिस जमाने में हाथ की कारीगरी को प्रधानता देने में कुछ भूल तो नहीं हो रही है ?

३. गांधीजी की यह योजना अेकदम नअी है या पहले के आचार्यों ने भी अिसपर सोचा है ?

४. अिस योजना को हम स्वावलम्बी कहाँ तक कह सकते हैं ?

५. विद्यार्थियों के परिश्रम से सात साल में भी अध्यापकों का खर्च निकल सकेगा या नहीं ?

६ जब देश के करोड़ों बालक अेक आदर्श परिस्थिति में माल तैयार करेंगे तो देश के दूसरे कारीगर अिस होड़ में कहाँ तक टहर सकेंगे ?

७. मदरसों में तैयार होनेवाले माल को सरकार कहाँ तक खरीद सकेगी ?

८. बाजार भाव से ज्यादा मजदूरी देने की ताकत राज्य में कैसे लायेंगे ?

९. किसी अेक अुद्योग को बीच में रखकर शिक्षा के सब विषयों को अुसके अिर्द-गिर्द बैठाया जा सकेगा या नहीं ?

१०. विद्यार्थियों की मजदूरी के साथ शिक्षक के वेतन को जोड़ देना कहाँ तक ठीक होगा ?

११. अगर अपना पूरा वेतन निकलवाने के लिअे शिक्षक विद्यार्थी से सिर्फ मजदूरी-ही-मजदूरी कराये, तो अुसका प्रतिकार कैसे किया जा सकेगा ?

१२. अिस शिक्षा की सफलता के लिअे नअी पाठ्य-पुस्तकों और नये अध्यापकों की जो जरूरत पैदा होगी, वह कैसे पूरी की जायेगी ? क्या अिस योजना का प्रयोग कुछ चुने हुअे क्षेत्रों में ही किया जाय ?

१३. भूखे छात्रों से कोअी काम नहीं लिया जा सकता। अुनकी अिस भूख का अिलाज हम कहाँ तक कर सकेंगे ?

१४. अिस योजना में शिक्षिकाओं का अुपयोग किस हद तक हो सकेगा ?

१५. प्राथमिक शिक्षा किस अुम्र से शुरू होगी ?

१६. अिस प्राथमिक शिक्षा की अवधि कितने वर्षों की होगी ?

१७. सात वर्ष से छोटे बालकों की अर्थात् शिशुओं की शिक्षा का क्या प्रबन्ध किया जायेगा ?

१८. प्राथमिक शिक्षा में अंग्रेजी का क्या स्थान रहेगा ? वह वैकल्पिक होगी, अनिवार्य होगी या वर्ज्य होगी ?

१९. प्राथमिक शिक्षा और कॉलेज की अुच्च शिक्षा के बीच में दोनों को जोड़नेवाला कोअी पाठ्यक्रम होगा या नहीं ?

(अ) अगर होगा तो कितने साल का ?

(आ) और कितने विभागों में विभक्त होगा ?

२० प्राथमिक शिक्षा की यह नअी योजना केवल गाँवों के लिअे होगी या शहरों के लिअे भी ?

२१. स्त्री-शिक्षा का प्रबन्ध अलग रहेगा, या यह सहशिक्षा का रूप लेगा ?

२२. राष्ट्रभाषा की पढ़ाअी कब से और किस तरह होगी ?

२३. अिस शिक्षा-प्रणाली को व्यावहारिक रूप देने के लिअे अेक स्थायी समिति नियुक्त की जाय या नहीं ?

२४. अिसके पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा का कोअी स्थान रहे या न रहे?

२५. अिस शिक्षा के साथ खेती का सम्बन्ध कहाँ तक रहेगा?

२६. अक्षर-ज्ञान का प्रारम्भ कब से और किस ढंग से होगा?

२७. प्राथमिक, माध्यमिक और अुच्च शिक्षा की सम्पूर्ण योजना क्या होगी?

२८. अिस नअी योजना को हम बेकारी का बीमा या अिलाज—अिन्श्युरेन्स अगेन्स्ट अन्अेम्प्लॉयमेण्ट'—माने या नहीं?

अिस योजना के साथ ही मध्यप्रांत और बरार के शिक्षा-मंत्री माननीय श्री रविशंकर शुक्ल की 'विद्या-मंदिर-योजना' भी परिषद् के सामने विचारार्थ रक्खी गयी थी।

परिषद् के लगभग सभी सदस्यों की विचार-समिति ने, २२ अक्तूबर की रात को जो प्रस्ताव स्वीकार किया था, वही दूसरे दिन परिषद् के सामने विचारार्थ रक्खा गया और केवल अेक सदस्य के आंशिक विरोध के साथ वह सर्वस्वीकृत हुआ।

अिसके बाद गांधीजी ने तुरन्त ही अिस प्रस्ताव के अनुसार शिक्षा की नअी योजना तैयार करने के लिअे अेक समिति कायम की। अिस समिति में अधिकतर वे ही सज्जन चुने गये जो या तो गांधीजी से अुनकी योजना को समझ चुके थे या आसानी के साथ अुनसे समय-समय पर मिल सकते थे, और सलाह ले सकते थे।

जिन्हें अिस योजना के कअी हिस्सों से मतभेद था, और अुनकी अुपयोगिता पर सन्देह भी था, अुनके दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर, अुनकी सहायता प्राप्त करने के विचार से प्रोफेसर शाह से निवेदन किया गया कि वे अिस समिति की सदस्यता स्वीकार करें।

अिस परिषद् की कार्रवाअी में सिर्फ दो देवियों ने भाग लिया था। अुन्होंने प्रस्तुत विषय की चर्चा में काफी योग्यता और दिलचस्पी के साथ हिस्सा और अपनी स्वतन्त्र राय से परिषद् को प्रभावित किया।

अिसमें तो कोअी सन्देह नहीं कि गांधीजी की अिस योजना का वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली पर काफी प्रभाव पड़ेगा। यही कारण है कि आज सारे देश में अिस योजना की चर्चा हो रही है और लोग अिसका प्रयोग देखने के लिअे अुत्सुक हैं। यदि प्रयोग गांधीजी की श्रद्धा से किया गया तो मैं मानता हूँ कि अिसके कारण हमारे राष्ट्र के जीवन में अेक बड़ी ही शान्त और अद्भुत क्रांति हो जायेगी; और अुसका प्रभाव संसार की दूसरी जातियों पर भी अवश्य ही पड़ेगा।

वर्धा
१७–१२–३७

—दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

बुनियादी तालीम की योजना और अहिंसा

डा० डी० जॉन वोर दक्षिण भारत में अेक शिक्षा संस्था के संचालक हैं। अपनी लम्बी छुट्टी पर जाने से पहिले वे वर्धा आये थे। अुन्होंने वर्धा की शिक्षा-योजना पर बहुत ध्यानपूर्वक अध्ययन और विचार किया है। गांधीजी से कुछ मिनट बातचीत करने की अुन्हें ख्वाहिश थी। अुन्होंने कहा कि यह शिक्षण योजना तो अुन्हें बहुत अच्छी लगी, क्योंकि अुसकी जड़ में अहिंसा है। पर अुन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पाठ्यक्रम में अहिंसा को अितना कम स्थान दिया गया है।

"आपको वह जिस वजह से अितनी पसंद आयी सो बिल्कुल ठीक है।" गांधीजी ने कहा, "किन्तु सारा पाठ्यक्रम अहिंसा पर केंद्रित नहीं किया जा सकता। यह काफी है कि वह अेक अहिंसक दिमाग से निकली है। पर अुसमें यह नहीं मान लिया गया है कि जो अिसको स्वीकार करेंगे वे अहिंसा को भी मानेंगे। अुदाहरणार्थ, समिति के सारे सदस्य अहिंसा को बतौर ध्येय के नहीं मानते हैं। जैसे अेक निरामिष भोजी आदमी का अहिंसक होना जरूरी नहीं है, वह स्वास्थ्य के कारण भी निरामिष-भोजी हो सकता है। अिसी प्रकार यह जरूरी नहीं कि जो भी कोअी अिस योजना को पसंद करें अहिंसा में अुनका विश्वास होना ही चाहिये।

डा० बोर—"मैं कुछ अैसे शिक्षा-शास्त्रियों को जानता हूँ, जो अिस योजना को महज अिसलिअे स्वीकार नहीं करेंगे कि अुसका आधार अहिंसात्मक जीवन-दर्शन पर है।"

गांधीजी—"मैं जानता हूँ। पर यों तो मैं भी अैसे कअी नेताओं को जानता हूँ जो खादी को अिसीलिअे ग्रहण नहीं करते कि अुसका आधार मेरा जीवन-दर्शन है। पर अिसका क्या अिलाज है? अहिंसा तो सचमुच अुस योजना का हृदय है और यह मैं बड़ी आसानी से सिद्ध कर सकता हूँ। पर मैं जानता हूँ कि यदि मैं अैसा करूं तो अुसके विषय में लोगों का अुत्साह बहुत कम हो जायेगा। आज तो जो लोग अिस योजना को पसंद करते हैं वे अिस तथ्य को मानते हैं कि करोड़ों लोग जिस देश में भूखों मर रहे हों, वहाँ दूसरी किसी तरह बच्चों को पढ़ा ही नहीं सकते। और यदि अिस चीज को जारी कर दिया जायगा, तो देश में अपने आप अेक नअी अर्थ-व्यवस्था अुत्पन्न हो जायगी। मेरे लिअे तो अितना भी काफी है, जैसे कि कॉंग्रेसवाले अहिंसा को अपना जीवन सिद्धांत मानने के बजाय अुसे स्वाधीनता प्राप्ति की नीति भी मान लेते हैं तो मैं अुतने ही से सन्तोष मान लेता हूँ। अगर सारा हिन्दुस्तान अुसे अपना ध्येय या जीवनादर्श मान ले तो हम तो आज ही यहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य कायम कर सकते हैं।"

डा० बोर—"मैं समझ गया पर अेक बात और है जो मेरी समझ में नहीं आ रही है। मैं अेक साम्यवादी हूँ और अहिंसा में भी मेरा विश्वास है। अब अेक अहिंसावादी की हैसियत से तो आपकी योजना मुझे बहुत पसन्द है। पर जब मैं साम्यवादी की दृष्टि से अुस पर विचार करता हूँ तो अैसा लगता है कि वह हिन्दुस्तान को संसार से अलग कर देगी। हमें तो संसार के साथ घुलमिल जाना है। और यह बात साम्यवाद जितनी अच्छी तरह से कर सकता है अुतना और कोअी चीज नहीं कर सकती।"

"मुझे तो अिसमें कोअी कठिनाअी नहीं मालूम पड़ती," गांधीजी ने कहा, "क्योंकि हम कोअी सारी दुनिया से नाता थोड़े ही तोड़ना चाहते हैं। हम तो सभी राष्ट्रों के साथ खुला आदान-प्रदान रक्खेंगे। लेकिन जबरदस्ती से लादा हुआ आदान-प्रदान तो बन्द करना ही पड़ेगा। हम यह नहीं चाहते कि कोअी

हमारा शोषण करे, न हम खुद ही किसी दूसरे राष्ट्र का शोषण करना चाहते हैं। अिस योजना के द्वारा तो हम सब बालकों को अुत्पादक बनाकर सारे राष्ट्र की शक्ल बदल देना चाहते है, क्योंकि अिससे हमारा सारा सामाजिक ढाँचा ही बदल जायगा। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं है कि हम सारी दुनिया से ही नाता तोड़कर सबसे अलग हो जाना चाहते हैं। अैसे राष्ट्र भी होंगे जो कुछ चीजें अपने यहाँ न कर सकने के कारण दूसरे राष्ट्रों के साथ आदान-प्रदान करना चाहेंगे। अिसमें कोअी शक नहीं कि अुन्हें अुन चीजों के लिअे दूसरे राष्ट्रों पर अवलम्बित रहना पडेगा, लेकिन जो राष्ट्र अुनकी जरूरतें पूरी करें अुन्हें अुनका शोषण नहीं करना चाहिये।"

"लेकिन अगर आप अपने जीवन को अिस हद तक सादा बना लें कि दूसरे देशों की बनी किसी चीज की आपको जरूरत ही न हो तो आप अपने को अुनसे अलग कर लेंगे, जबकि मैं चाहता हूँ कि आप अमेरिका के लिअे भी जिम्मेदार हों।"

"अमेरिका के लिअे जिम्मेदार तो हम अिसी तरह हो सकते हैं कि न तो हम किसी का शोषण करें और न अपना ही शोषण किसी को करने दें। क्योंकि जब हम अैसा करेंगे, तो अमेरिका भी हमारा अनुसरण करेगा; और तब हमारे बीच खुले आदान-प्रदान में कोअी कठिनाअी नहीं होगी।"

"लेकिन आप तो जीवन सादा बनाकर अुद्योगीकरण को खत्म कर देना चाहते हैं।"

"अगर मैं तीस करोड के बजाय ३० हजार आदमियों से काम कराकर अपने देश की सारी जरूरतें पूरी कर सकूँ, तो मुझे अुसमें कोअी आपत्ति न होगी, बशर्ते कि अुसके कारण ३० करोड़ आदमी बेकार और काहिल न बन जायँ। मैं यह जानता हूँ कि समाजवादी लोग अिसे अिस तरह पर ले जायेंगे कि जिसमें रोज अेक-दो घण्टे से ज्यादा काम करने की जरूरत ही न रहे, लेकिन मैं अैसा नहीं चाहता।"

"क्यों? अिससे तो अुन्हें अवकाश मिलेगा।"

"लेकिन अवकाश किसलिअे? क्या हॉकी खेलने को?"

"न सिर्फ अिसलिअे, बल्कि अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियों जैसे कामों के लिअे भी।"

"अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियों में लगाने के लिअे तो मैं अुनसे कह ही रहा हूँ। लेकिन यह अुन्हें आठ घंटे रोज अपने हाथ से काम करके करना होगा।"

"तब तो निश्चय ही आप समाज को अैसी स्थिति पर नहीं ले जाना चाहते जबकि हरअेक घर में रेडियो हो और हरअेक के पास अपनी मोटर गाड़ी रहे। अमेरिकन राष्ट्रपति हूवर ने यह तजवीज सोची थी। वह तो चाहते थे कि हरअेक घर में अेक ही नहीं दो रेडियो हों और हरअेक के पास दो-दो मोटर-गाड़ियाँ रहें।"

"अगर अितनी अधिक मोटरें हमारे पास हो जायँ तो फिर पैदल घूमने-फिरने के लिअे बहुत कम जगह रह जायगी" गाधीजी ने कहा।

"मैं आप से सहमत हूँ। हमारे यहाँ हर साल ही अेक्सीडेंटों से लगभग ४०,००० आदमी मरते हैं, और अिससे तिगुने तो अंगभंग हो जाते हैं।"

"वह दिन देखने के लिअे मैं जीवित नहीं रहूँगा, जब हिन्दुस्तान के हर-अेक गांव में रेडियो पहुँच जायेंगे।"

"पंडित जवाहरलाल के ध्यान में, मालूम होता है पैदावार की अिफरात की बात रहती है।"

"मैं जानता हूँ। पर अिफरात से क्या आशय है? क्या लाखों टन गेहूँ नष्ट कर देने की क्षमता तो नहीं, जैसा कि आप लोग अमेरिका में करते हैं?"

"वह पूँजीवाद का प्रतिशोध है। वे अब गेहूँ नष्ट नहीं करते, बल्कि गेहूँ पैदा करने के लिअे अुन्हें सजा दी जा रही है। अब तो लोग वहाँ अेक-दूसरे पर अंडे फेंककर मन-बहलाव करते हैं, क्योंकि अंडों की कीमत अब गिर गयी है।"

"यही तो हम चाहते नहीं हैं। अिफ़रात से अगर आपका यह मतलब है कि हरेक आदमी के पास खाने-पीने और पहनने के लिये पर्याप्त भोजन और वस्त्र हों, अपनी बुद्धि शिक्षित और सुसंस्कृत बनाने के लिअे काफी साधन हों तो मुझे संतोष हो जाना चाहिये। पर जितना मैं हजम कर सकता हूँ अुससे ज्यादा भोजन अपने पेट में ठूंसना मैं पसन्द नहीं करूँगा, और जितनी चीजों का मैं अच्छी तरह अुपयोग कर सकूंगा अुनसे ज्यादा चीजें मुझे अपने पास रखनी नहीं

चाहिये। पर मैं हिन्दुस्तान में न गरीबी या मुफलिसी चाहता हूँ, न मुसीबत, न गंदगी।"

"लेकिन पंडितजी ने तो अपनी 'आत्मकथा' में यह लिखा है कि आप दरिद्रनारायण की पूजा करते हैं और दरिद्रता की खातिर ही आप दरिद्रता की सराहना करते हैं।"

"मुझे मालूम है" गांधीजी ने हँसते हुअे कहा।

'हरिजन सेवक' १२ फरवरी १९३८

शिक्षकों का व्रत

[२१ अप्रैल सन् १९३८ को वर्धा में विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल का अुद्घाटन करते हुअे गांधीजी ने नीचे लिखा भाषण दिया:]

"आज विद्यामंदिर के छात्रों ने पवित्र व्रत लिया है। यह व्रत बहुत कठिन है। अिसका पूरा होना बड़ा दुश्वार है। १५ रुपये माहवार लेकर २५ बरस तक लगातार सेवा करने का यह व्रत है। पाँच हजार से अधिक अर्जियों का आना यह जाहिर करता है कि हमारे देश में बेकारी हद दर्जे तक पहुँच गयी है। कुछ लोग अुच्च अुद्देश्य से काम करते हुअे दाल-भात तक प्राप्त नहीं कर सकते। बहुत से अपना पेट पालने के लिअे कोअी काम तक नहीं पा रहे हैं। आपका यह व्रत आत्मत्याग का है। अगर आप अपनी प्रतिज्ञा में धनी साबित हुअे, तो आप दुनिया के सामने अेक नया आदर्श अुपस्थित करेंगे। असफल हुअे, तो जगत् में मेरी और श्री रविशंकर शुक्ल की निंदा की जायगी। अिसलिअे यह ज्यादा अच्छा होगा कि ढीले-ढाले लोग अभी से अलग हो जायँ।

यह योजना पूरी तरह से भारतीय योजना है। अिसके आदर्श का जन्म सेगाँव में हुआ है। असली हिन्दुस्तान तो सात लाख गाँवों में बसता है, जो सेगाँव से भी बहुत हीन दशा में है। मैं चाहता हूँ कि आप लोग अिन गाँवों से निरक्षरता को दूर भगा दें, ग्रामनिवासियों के लिअे अन्न और वस्त्र के साधन

जुटावें, और सत्य और अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने का संदेश गाँवों में पहुँचावें। यह जिम्मेवारी आपके अूपर है। आपका यह धर्म है कि आप अिस भावना को लेकर काम करें। मैंने तो काफी मनन के बाद अपनी यह योजना पेश की है। यदि यह योजना असफल हुअी तो अिसके लिअे अध्यापक दोषी ठहराये जावेंगे। दस्तकारी के जरिये भूमिति, अितिहास, भूगोल और गणित की शिक्षा दी जायगी, और छात्रों के शरीरश्रम से स्कूल का खर्च निकालने का प्रयत्न किया जायगा।

हर हिटलर तलवार के बल पर अपना अुद्देश्य पूरा कर रहा है; मैं आत्मा के द्वारा पूरा करना चाहता हूँ। विदेशी विचारों और आदर्शों का आवरण निकाल फेंकिये, अपने-आपको ग्रामवासियों के साथ समरस बना दीजिये।

पाश्चात्य जगत् विनाशक शिक्षा दे रहा है; हमें अहिंसा के जरिये रचनात्मक शिक्षा देनी है। मंगलमय भगवान् आपको शक्ति दे, जिससे आप वांछित अुद्देश्य को सफल बना सकें, और आज जो प्रण लिया है, अुसे पूरा कर सकें।"

'हरिजन' २१ अप्रैल, १९३८

अुद्योग द्वारा शिक्षा

अिधर कअी बातों के सिलसिले में गांधीजी ने विस्तारपूर्वक समझाया कि शिक्षा की यह नअी योजना अुनके दिमाग में किस तरह आयी और अुद्योग तथा शिक्षा का मेल, जो कि अुनकी दृष्टि में है, किस प्रकार हो सकता है। अुन्होंने कहा, "अेक नअी पद्धति की आवश्यकता मैं बहुत दिनों से महसूस कर रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि आधुनिक शिक्षा-पद्धति निष्फल साबित हुअी, और यह पता मुझे जब मैं दक्षिण आफ्रिका से लौटा, तब बहुत-से विद्यार्थी जो मुझसे मिलने आते थे अुनके द्वारा लगा। अिसलिअे मैंने आश्रम में दस्तकारियों की शिक्षा दाखिल करके अिसका आरम्भ किया। निस्सन्देह, दस्तकारियों के सिखाने पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि

औद्योगिक शिक्षा से बच्चे जल्दी दिक आ गये और अुन्होंने यह खयाल किया कि हम साहित्यिक शिक्षा से वंचित किये जा रहे हैं। अुनकी यह गलती थी, क्योंकि थोड़ा-सा भी अुन्होंने वहाँ जो ज्ञान प्राप्त किया था, वह भी अुससे तो कहीं ज्यादा ही था, जो कि साधारणतया बच्चे पुराने ढर्रे पर चलनेवाले स्कूलों में प्राप्त करते हैं। पर अिस चीज ने मुझे विचार में डाल दिया और मैं अिस नतीजे पर पहुँचा कि औद्योगिक के साथ साहित्यिक शिक्षा नहीं, बल्कि औद्योगिक शिक्षण के द्वारा साहित्यिक शिक्षा देनी चाहिये। अैसा करने पर वे औद्योगिक तालीम को अेक जलील मशक्कत नहीं समझेंगे, और साहित्यिक शिक्षा में अेक नया सन्तोष और नअी अुपयोगिता आ जायगी। कॉंग्रेस ने जब मन्त्रिपद ग्रहण किया तब मुझे लगा कि अपने विचार को राष्ट्र के सामने रखना चाहिये, और मुझे खुशी है कि कअी जगह अिसका स्वागत हुआ है।"

अिसके बाद अुन्होंने कहा—"हमने यह निश्चय किया कि अंग्रेजी को कोर्स से निकाल देना चाहिये, क्योंकि हम जानते थे कि बच्चों का अधिकांश समय अंग्रेजी के शब्दों और वाक्यों के रटने में चला जाता है। और फिर भी वे जो कुछ सीखते हैं अुसे अपनी भाषा में जाहिर नहीं कर सकते, और अध्यापक अुन्हें जो सिखाता है अुसे ठीक-ठीक समझ नहीं सकते। अुलटे, अपनी मातृ-भाषा को, महज अुपेक्षा के कारण, भूल जाते हैं। अैसा प्रतीत हुआ कि औद्योगिक तालीम के द्वारा शिक्षा दी जाय, तभी अिन दोनों बुराअियों से बच सकते हैं।

"मुझे शिक्षण देने का आरम्भ करना हो तो मैं तो अिस तरह करूँगा: जिस दिन बच्चे मेरे पास आवेंगे सबसे पहिले मैं यह देखूँगा कि अुनका दिमाग कहाँ तक विकसित हुआ है, वे पढ़ना और लिखना और थोड़ा-बहुत भूगोल जानते हैं या नहीं, और तब मैं तकली दाखिल करके अुनकी तैयारी बढ़ाने की कोशिश करूँगा।

"आप शायद मुझसे पूछेंगे कि अितनी तमाम दस्तकारियों में से मैंने तकली ही को क्यों चुना? क्योंकि सर्वप्रथम हमने जिन दस्तकारियों की शोध की थी, अुनमें अेक तकली की भी दस्तकारी है, और जो अितने युगों से चली आ रही है। प्राचीन काल में हमारा तमाम कपड़ा तकली के सूत का ही बनता था। चर्खा तो पीछे आया। फिर बढ़िया-से-बढ़िया अंक का सूत चर्खे पर

क्त भी नहीं सकता, अिसलिअे हमें पुनः तक्ली की ही शरण लेनी पड़ी। तक्ली ने मनुष्य की अन्वेषणात्मक बुद्धि को अितनी अूँचाअी तक पहुँचा दिया कि जिस अूँचाअी तक वह पहिले कभी नहीं पहुँची थी। अिसमें अुँगलियों की कार्यकुशलता का सर्वश्रेष्ठ अुपयोग हुआ। पर चूंकि तक्ली अैसे कारीगरों तक ही सीमित रही, जिन्होंने कि शिक्षा को कभी प्राप्त किया ही नहीं था, अिसलिअे अुसका अुपयोग लुप्त-सा हो गया। अगर हम तक्ली का अुद्धार करके अुसे आज फिर अुसी गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखना चाहते हैं, अगर हमें अपने ग्रामजीवन का पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण करना है, तो हमें बच्चों की शिक्षा का श्रीगणेश तक्ली से ही करना चाहिये।

“अिसलिअे दूसरा पाठ मेरा यह चलेगा: लड़कों को मैं यह सिखाअूँगा कि हमारे प्रतिदिन के जीवन में तक्ली को क्या स्थान प्राप्त था। अिसके बाद मैं अुन्हें थोड़ा-सा अितिहास दूंगा और यह भी बताअूँगा कि अुसका पतन कैसे हुआ। फिर भारतवर्ष के अितिहास के संक्षिप्त क्रम पर आअूँगा—आरम्भ अीस्ट अिंडिया कम्पनी से या अुससे भी पहिले मुसलमान काल से करूंगा, अुन्हें तफ़सीलवार यह बताअूँगा कि अीस्ट अिंडिया कम्पनी की तिजारत ने किस प्रकार हमारे देश का शोषण किया है, और हमारी अिस मुख्य दस्तकारी का दम किस तरह बाकायदा तरीके से घोंटा गया और अंत में अिसका खात्मा कर डाला गया। अिसके बाद तक्ली के यंत्र-शास्त्र का, अिसकी बनावट का संक्षिप्त कोर्स चलेगा। शुरू-शुरू में मिट्टी की या आटे की छोटी-सी गोली बनाकर और अुसके ठीक मध्य में बाँस की सींक डालकर तक्ली बनायी जाती होगी। बिहार और बंगाल के कुछ भागों में अब भी अिस किस्म की तक्ली देखने में आती है। अिसके बाद मिट्टी की गोली की जगह अींट की चकती ने ले ली, और अब आज अींट की चकती की जगह लोहे या फौलाद और [illegible] की चकती ने तथा बाँस की सींक की जगह फौलाद के तार ने ले ली है। [illegible] के काफ़ी प्रश्न सोच सकते हैं—जैसे चकती और तार का [illegible] रखा गया है, अिससे ज्यादा या कम क्यों नहीं? [illegible] से व्याख्यान दिये जायेंगे, जैसे कपास जाकर [illegible] होता है, अुसकी कितनी किस्में हैं, किन देशों और [illegible] में वह अुगाया जाता है, वगैरा-वगैरा।

"कपास की खेती के बारे में और अुसके लिअे कौन-सी जमीन सबसे अुपयुक्त हो सकती है, अिस विषय में भी कुछ ज्ञान दिया जा सकता है। अिससे हम थोड़ा खेती-बाड़ी के बारे में भी जान लेंगे।

"आप देखेंगे कि अपने विद्यार्थियों को अिस प्रकार का शिक्षण देने के पहिले शिक्षक को खुद काफी परिपक्व ज्ञान प्राप्त करना होगा। कताअी के तारों की गिनती गजों में निकालना, सूत का नंबर मालूम करना, लच्छियाँ बनाना बुनकर के लिअे अुसे तैयार करना, कपड़े की अमुक बुनावट में कितने गज सूत लगेगा आदि बातों के द्वारा पूरा प्रारंभिक गणित सिखाया जा सकता है। कपास अुगाने से लेकर—कपास तोड़ना, ओटना, धुनना, कातना, माड़ी लगाना, बुनना,—तक की तमाम क्रियाओं का अपना-अपना संबंधित यंत्र-शास्त्र, अितिहास और गणित है।

"मुख्य कल्पना यह है कि बच्चों को जो भी दस्तकारी सिखायी जाय अुसके द्वारा अुन्हें पूरी तरह से शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शिक्षा दी जाय। अुद्योग की तमाम क्रियाओं के द्वारा आपको बच्चों के अन्दर जो भी अच्छी चीज है, अुस सबको विकसित करना है, और आप अितिहास, भूगोल और गणित के जो पाठ सिखायेंगे वे सब अुस अुद्योग से संबंधित होंगे।

अगर अिस प्रकार की शिक्षा बच्चों को दी जाय, तो परिणाम यह होगा कि वह शिक्षा स्वावलंबी हो जायगी। लेकिन सफलता की कसौटी अुसका स्वाश्रयी रूप नहीं बल्कि यह देखकर सफलता का अंदाज लगाना होगा कि वैज्ञानिक रीति से अुद्योग की शिक्षा द्वारा मनुष्यत्व का पूर्ण विकास हुआ है या नहीं। सचमुच में अैसे अध्यापक को कभी नहीं रक्खूंगा जो चाहे जिन परिस्थितियों में शिक्षा को स्वाश्रयी बना देने का वचन दे देगा। स्वावलंबी अंग अिस बात का न्यायसिद्ध परिणाम होगा कि विद्यार्थियों ने अपनी प्रत्येक कार्यशक्ति का ठीक-ठीक अुपयोग करना सीख लिया है। अगर अेक लड़का तीन घंटे रोज काम करके किसी दस्तकारी से निश्चयपूर्वक अपनी जीविका लायक पैसा कमा लेता है, तो जो अपनी विकसित बुद्धि और आत्मा लगाकर अुस काम को करेगा वह कितना अधिक नहीं कमा लेगा?"

'हरिजन' ११ जून, १९३८

नई तालीम

हाल ही में स्थापित हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की अेक बैठक में गांधीजी
ीन शिक्षा-पद्धति का आतरिक अर्थ और अुद्देश्य बतलाया था। आप
ोचे-समझे मेरी बातों को न मान लें। आप तो सिर्फ अुन्हीं बातों को
र करें जो आपके गले अुतर सकें और आपको सन्तोष दिला सकें। लेकिन
रा भरोसा है कि हम अगर दो स्कूल भी ठीक तरह से चला सकें तो मैं तो
र्य के नाच अुठूंगा।

बातचीत के शुरू में अुन्होंने बिना किसी सन्देह के अपने विचारों को जाहिर
हुअे कहा—"हम तो अिस अध्यापन मंदिर को अेक अैसा विद्यालय बना
चाहते हैं, जिसके जरिये हम आजादी हासिल कर सकें और अपनी तमाम
ायों को जिनमें कि हमारे कोअी झगड़े भी हैं, हमेशा के लिअे सुलझा
अिसके लिअे हमें अहिंसा पर अपना सारा ध्यान केंद्रित करना होगा।
र और मुसोलिनी के स्कूलों का मूल अुद्देश्य हिंसा है। पर हमारा अुद्देश्य
ग्रेस के अनुसार अहिंसा है। अिससे हमें अपनी तमाम समस्याओं को
ा के जरिये ही हल करना है। अपने गणित को, अपने विज्ञान को, अपने
हास को हम केवल अहिंसा की दृष्टि से देखेंगे और अिन विषयों से
त समस्याअें अहिंसा के ही रंग में रंगी होंगी। तुर्किस्तान की सुप्रसिद्ध
ा बेगम खालिदा खातून ने जब जामिया मिलिया अिस्लामिया में अपने
ा दिये थे तब मैंने कहा था कि अितिहास अभी तक राजाओं का और
युद्धों का वर्णन मात्र रहा है, पर भविष्य में जो अितिहास बनेगा वह
ता का होगा। वह अितिहास अहिंसा का ही हो सकता है, और है। फिर
ाहरों के अुद्योग-धंधों को छोड़कर ग्राम-अुद्योगों की ओर सारा ध्यान देना
। मतलब यह कि अगर हम अपने सात लाख गाँवों को जीवित रखना
हैं, तो हमें गाँवों की दस्तकारियों का पुनरुद्धार करना होगा, और आप
रखें कि अगर अिन अुद्योगों के जरिये हम शिक्षा दे सकें, तो हम
्रांति पैदा कर सकते हैं। हमें अपनी पाठ्य पुस्तकें भी अिसी अुद्देश्य को
रखकर तैयार करनी होंगी।

मैं चाहता हूँ कि मैं जो कुछ कहता हूँ अुस पर आप अच्छी तरह गौर करें, और जो बात आपको ठीक न जँचें अुसे छोड़ दें। मेरी बातें हमारे मुसलमान भाअियों को ठीक न जँचें तो वे अुन्हें खुशी से त्याग सकते हैं। मैं जो अहिंसा चाहता हूँ वह सिर्फ अंग्रेजों के साथ के युद्ध तक ही सीमित नहीं है। मैं चाहता हूँ कि वह हमारे तमाम भीतरी सवालों और समस्याओं पर भी लागू हों। सच्ची और सक्रिय अहिंसा तो तभी होगी जब कि वह हिन्दू और मुसलमानों की जीवित अेकता को जन्म दे सकेगी—अैसी अेकता नहीं जो अपना आधार किसी आपसी भय पर रखती हो, मसलन, हिटलर और मुसोलिनी के दरम्यान हुअी संधि या पैक्ट।"

'हरिजन' ७ जुलाअी १९३८

उच्च शिक्षा

अुच्च शिक्षा के बारे में कुछ समय पूर्व मैंने डरते-डरते संक्षेप में जो विचार प्रकट किये थे अुनकी माननीय श्री. श्रीनिवास शास्त्री ने नुक्ताचीनी की है, जिसका अुन्हें पूरा हक है। महान्, देशभक्त और विद्वान के रूप में मेरे हृदय में अुनके लिये बहुत अूँचा आदर है। अिसलिअे जब मैं अपने को अुनसे असहमत पाता हूँ, तो मेरे लिअे हमेशा ही वह बड़े दुःख की बात होती है। अितने पर भी कर्त्तव्य मुझे अिस बात के लिअे बाध्य कर रहा है कि अुच्च शिक्षा के विषय में मेरे जो विचार हैं, अुन्हें मैं पहले से भी अधिक पूर्णता के साथ फिर से व्यक्त कर दूँ, जिससे कि पाठक खुद ही मेरे और अुनके विचारों के भेद को समझ लें।

अपनी मर्यादाओं को मैं स्वीकार करता हूँ। मैंने विश्वविद्यालय की कोअी नाम लेने योग्य शिक्षा नहीं पायी है। मेरा स्कूली जीवन भी औसत दर्जे से अधिक अच्छा न रहा। मैं तो यही बहुत समझता था कि किसी तरह अिम्तहान में पास हो जाअूँ। स्कूल में डिस्टिंक्शन (यानी विशेष योग्यता) पाना अैसी बात थी जिसकी मैंने कभी आकांक्षा भी नहीं की। मगर फिर भी शिक्षा के

विषय में जिसमें कि वह शिक्षा भी शामिल है, जिसे अुच्च शिक्षा कहा जाता है, आम तौर पर, मैं दृढ विचार रखता हूँ। और देश के प्रति मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि मेरे विचार स्पष्ट रूप से सबको मालूम हो जायँ और अुनकी वास्तविकता सबके सामने आ जाय। अिसके लिअे मुझे अपनी अुस भीरुता या संकोच भावना को छोडना ही पडेगा जो लगभग आत्मदमन की हदतक पहुँच गयी है। अिसके लिअे न तो मुझे अुपहास का भय करना चाहिये न लोकप्रियता या प्रतिष्ठा की ही चिन्ता होनी चाहिये। क्योंकि अगर मैं अपने विश्वास को छिपाअूँगा तो निर्णय की भूलों को भी कभी दुरुस्त न कर सकूँगा। लेकिन मैं तो हमेशा अुन्हें ढूंढने और अुससे भी अधिक अुन्हें सुधारने के लिअे अुत्सुक हूँ।

अब मैं अपने अुन निष्कर्षों को बता दूँ जिन पर कि मै कअी बरसों से पहुंचा हूं, और जब भी मौका मिला है अुसको अमल में लाने की कोशिश की है।

(१) दुनिया में प्राप्त हो सकनेवाली अूँची-से-अूँची शिक्षा का भी मैं विरोधी नहीं हूँ।

(२) राज को जहाँ भी निश्चित रूप से अिसकी ज्यादा जरूरत हो वहाँ अिसका खर्च अुठाना चाहिये।

(३) साधारण आमदनी द्वारा सारी अुच्च शिक्षा का खर्च चलाने के मैं खिलाफ हूँ।

(४) मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे कालेजों मे साहित्य की जो अितनी सारी तथाकथित शिक्षा दी जाती है वह सब बिल्कुल व्यर्थ है और अुसका परिणाम शिक्षित वर्गो की बेकारी के रूप में हमारे सामने आया है। यही नहीं बल्कि जिन लडके-लडकियों को हमारे कालेजों की चक्की में पिसने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है अुनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी अिसने चौपट कर दिया है।

विदेशी भाषा के माध्यम ने, जिसके जरिये कि भारत में अुच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुंचाया है। अभी हम अपने अिस जमाने के अितने नजदीक हैं कि अिस नुकसान का निर्णय नहीं कर सकते। और फिर, अैसी शिक्षा पानेवाले हम को ही अिसका शिकार और न्यायाधीश दोनों बनना है, जो कि लगभग असम्भव काम है।

अब मेरे लिअे यह बतलाना आवश्यक है कि मैं अिन निष्कर्षों पर क्यों पहुँचा। यह शायद अपने कुछ अनुभवों के द्वारा ही मैं सबसे अच्छी तरह बतला सकता हूँ।

१२ बरस की अुम्र तक मैंने जो शिक्षा पायी वह अपनी मातृभाषा गुजराती में पायी थी। अुस वक्त गणित, अितिहास और भूगोल का मुझे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान था। अिसके बाद मैं अेक हाअीस्कूल में दाखिल हुआ। अिसमें भी पहिले तीन साल तक तो मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम रही। लेकिन स्कूल मास्टर का काम तो विद्यार्थियों के दिमाग में जबरदस्ती अंग्रेजी और अुसके मनमाने हिज्जों तथा अुच्चरण पर काबू पाने में लगाया जाता था। अैसी भाषा का पढ़ना हमारे लिअे अेक कष्टपूर्ण अनुभव था। जिसका अुच्चारण ठीक अुसी तरह नहीं होता जैसी कि वह लिखी जाती है। हिज्जों को कण्ठस्थ करना अेक अजीब-सा अनुभव था। लेकिन यह तो मैं प्रसंगवश कह गया, वस्तुतः मेरी दलील से अिसका कोअी सम्बन्ध नहीं है। मगर पहिले तीन साल तो तुलनात्मक रूप में ठीक ही निकल गये।

जिल्लत तो चौथे साल से शुरू हुअी। अलजबरा (बीजगणित), केमिस्ट्री (रसायनशास्त्र), अेस्ट्रोनॉमी (ज्योतिष), हिस्ट्री (अितिहास), ज्योग्रफी (भूगोल) हरेक विषय मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी में ही पढना पड़ा। कक्षा में अगर कोअी विद्यार्थी गुजराती, जिसे कि वह समझता था, बोलता तो अुसे सजा दी जाती। हॉं, अंग्रेजी को, जिसे न तो वह पूरी तरह समझ सकता था और न शुद्ध बोल सकता था, अगर वह बुरी तरह बोलता तो भी शिक्षक को कोअी आपत्ति नहीं होती थी। शिक्षक भला अिस बात की फिक्र क्यों करे? क्योंकि खुद अुसकी ही अंग्रेजी निर्दोष नहीं थी। अिसके सिवाय और हो भी क्या सकता था? क्योंकि अंग्रेजी अुसके लिअे भी अुसी तरह विदेशी भाषा थी जिस तरह कि अुसके विद्यार्थियों के लिअे। अिससे बड़ी गड़बड़ होती। हम विद्यार्थियों को अनेक बातें कण्ठस्थ करनी पड़तीं, हालांकि हम अुन्हें पूरी तरह नहीं समझ सकते थे और कभी-कभी तो बिलकुल ही नहीं समझते थे। शिक्षक के हमें ज्योमेटरी (रेखागणित) समझाने की भरपूर कोशिश करने पर मेरा सिर घूमने लगता। सच तो यह है कि यूक्लिड (रेखागणित) की पहली पुस्तक के १३ वें साध्य तक जब तक न पहुँच गये, मेरी समझ में ज्यामेटरी बिलकुल नहीं आयी। और पाठकों के

सामने मुझे यह मंजूर करना ही चाहिये कि मातृभाषा के अपने सारे प्रेम के बावजूद आज भी मैं यह नहीं जानता कि ज्यामेट्री, अलजबरा आदि की पारिभाषिक बातों को गुजराती में क्या कहते हैं। हाँ, यह अब मैं जरूर देखता हूँ कि जितनी गणित, रेखा गणित, बीजगणित, रसायनशास्त्र और ज्योतिष सीखने में मुझे चार साल लगे अगर अंग्रेजी के बजाय गुजराती में मैंने अुन्हें पढ़ा होता तो अुतना मैंने अेक ही साल में आसानी से सीख लिया होता। अुस हालत में मैं आसानी और स्पष्टता के साथ अिन विषयों को समझ लेता। गुजराती का मेरा शब्द-ज्ञान कहीं समृद्ध हो गया होता, और अुस ज्ञान का मैंने अपने घर में अुपयोग किया होता। लेकिन अिस अंग्रेजी के माध्यम ने तो मेरे और मेरे कुटुम्बियों के बीच, जो कि अंग्रेजी स्कूलों में नहीं पढ़े थे, अेक अदम्य खायी खड़ी कर दी। मेरे पिता को यह कुछ पता न था कि, मैं क्या कर रहा हूँ। मैं चाहता तो भी अपने पिता की अिस बात में दिलचस्पी पैदा नहीं कर सकता था कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। क्योंकि यद्यपि बुद्धि की अुनमें कोअी कमी नहीं थी, मगर वह अंग्रेजी नहीं जानते थे। अिस प्रकार अपने ही घर में मैं बड़ी तेजी के साथ अजनबी बनता जा रहा था। निश्चय ही मैं औरों से अूँचा आदमी बन गया था। यहाँ तक कि मेरी पोशाक भी अपने-आप बदलने लगी। लेकिन मेरा जो हाल हुआ वह कोअी साधारण अनुभव नहीं था, बल्कि अधिकांश का यही हाल होता है।

हाअी स्कूल के प्रथम तीन वर्षों में मेरे सामान्य ज्ञान में बहुत कम वृद्धि हुअी। यह समय तो लड़कों को हरेक चीज अंग्रेजी के जरिये सीखने की तैयारी का था। हाअीस्कूल तो अंग्रेजों की सांस्कृतिक विजय के लिअे थे। मेरे हाअी-स्कूल के तीन सौ विद्यार्थियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया वह तो हमीं तक सीमित रहा। वह सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिअे नहीं था।

अेक दो शब्द साहित्य के बारे में भी: अंग्रेजी गद्य और पद्य की कअी किताबें हमें पढ़नी पड़ी थीं। अिसमें शक नहीं कि यह सब बढ़िया साहित्य था। लेकिन सर्वसाधारण की सेवा या अुनके सम्पर्क में आने में अुस ज्ञान का मेरे लिअे कोअी अुपयोग नहीं हुआ है। मैं यह कहने में असमर्थ हूँ कि मैंने अंग्रेजी गद्य और पद्य न पढ़ा होता तो मैं अेक बेशकीमत खजाने से वंचित रह जाता। अिसके बजाय, सच तो यह है कि अगर ये सात साल मैंने गुजराती पर प्रभुत्व

प्राप्त करने में लगाये होते और गणित, विज्ञान तथा संस्कृत आदि विषयों को गुजराती में पढ़ा होता, तो अिस तरह प्राप्त किये हुअे ज्ञान में मैंने अपने अड़ोसी-पड़ोसियों को आसानी से हिस्सेदार बनाया होता। अुस हालत में मैंने गुजराती साहित्य को समृद्ध किया होता, और कौन कह सकता है कि अमल में अुतारने की अपनी आदत तथा देश और मातृभाषा के प्रति अपने बेहद प्रेम के कारण सर्वसाधारण की सेवा में मैं और भी अधिक अपनी देन क्यों न दे सकता?

यह हर्गिज न समझना चाहिये कि अंग्रेजी या अुसके श्रेष्ठ साहित्य का मैं विरोधी हूँ। 'हरिजन' मेरे अंग्रेजी प्रेम का पर्याप्त प्रमाण है। लेकिन अुसके साहित्य की महत्ता भारतीय राष्ट्र के लिअे अुससे अधिक अुपयोगी नहीं, जितनी कि अुसके लिअे अिंग्लैंड की समशीतोष्ण जलवायु या वहाँ के सुन्दर दृश्य हैं। भारत को तो अपने ही जलवायु, दृश्यों और साहित्य में तरक्की करनी होगी फिर चाहे ये अंग्रेजी जलवायु, दृश्यों और साहित्य से घटिया दर्जे के ही क्यों न हों। हमें और हमारे बच्चों को तो अपनी खुद की ही विरासत बनानी चाहिये, अगर हम दूसरों की विरासत लेंगे तो अपनी नष्ट हो जायगी। सच तो यह है कि विदेशी सामग्री पर हम कभी अुन्नति नहीं कर सकते। मैं तो चाहता हूँ कि राष्ट्र अपनी ही भाषा का कोष भरे और अिसके लिअे संसार की अन्य भाषाओं का कोष भी अपनी ही देशी भाषाओं में सचित करे। रवीन्द्रनाथ की अनुपम कृतियों का सौन्दर्य जानने के लिअे मुझे बंगाली पढ़ने की कोअी ज़रूरत नहीं क्योंकि सुंदर अनुवादों के द्वारा मैं अुसे पा लेता हूँ। अिसी तरह टाल्सटाय की सक्षिप्त कहानियों की कद्र करने के लिअे गुजराती लड़के-लड़कियों को रूसी भाषा पढ़ने की कोअी जरूरत नहीं, क्योंकि अच्छे अनुवादों के जरिये वे अुन्हें पढ़ लेते हैं। अंग्रेजों को अिस बात का फख है कि ससार की सर्वोत्तम साहित्यिक रचनाअें प्रकाशित होने के अेक सप्ताह के अन्दर-अन्दर सरल अंग्रेजी में अुनके हाथों में आ जाती हैं। अैसी हालत में, शेक्सपियर और मिल्टन के सर्वोत्तम विचारों और रचनाओं के लिअे मुझे अंग्रेजी पढ़ने की जरूरत क्यों हो? यह अेक तरह की अच्छी मितव्ययता होगी कि अैसे विद्यार्थियों का अलग ही अेक वर्ग कर दिया जाय, जिनका काम यह हो कि विभिन्न भाषाओं में पढ़ने लायक जो सर्वोत्तम सामग्री हो अुसको पढ़ें और देशी भाषाओं में अुसका अनुवाद करें। हमारे प्रभुओं ने तो हमारे लिअे गलत ही रास्ता चुना है, और आदत पड़ जाने के कारण गलती ही हमें ठीक मालूम पड़ने लगी है।

हमारी अिस झूठी, अभारतीय शिक्षा ने लाखों आदमियों का दिन-दिन जो लगातार नुकसान हो रहा है, अुसके तो रोज ही मैं प्रमाण पा रहा हूँ। जो ग्रेजुअेट मेरे आदरणीय साथी हैं, अुन्हें जब अपने आतरिक विचारों को व्यक्त करना पड़ता है तो खुद बड़ी परेशान हो जाते हैं। वे तो अपने ही घरों में अजनबी हैं। अपनी मातृभाषा के शब्दों का अुनका ज्ञान अितना सीमित है कि अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों तक का सहारा लिअे बगैर वे अपने भाषण को समाप्त नहीं कर सकते। न अंग्रेजी किताबों के बगैर वे रह सकते हैं। आपस में भी वे अक्सर अंग्रेजी में लिखा पढ़ी करते है। अपने साथियों का अुदाहरण मैं यह बताने के लिअे दे रहा हूँ कि अिस बुराअी ने कितनी गहरी जड़ जमा ली है।

हमारे कालेजों में जो समय की बर्बादी होती है अुसके पक्ष में दलील यह दी जाती है कि कालेजों में पढ़ने के कारण अितने विद्यार्थियों में से अगर अेक जगदीश बोस भी पैदा हो सके तो हमें अिस बर्बादी की चिंता करने की जरूरत नहीं। अगर यह बर्बादी अनिवार्य होती तो मैं जरूर अिस दलील का समर्थन करता, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि मैंने यह बतला दिया है कि यह न तो अनिवार्य थी, और न अभी ही अनिवार्य है। क्योंकि जगदीश बोस वर्तमान शिक्षा की अुपज नहीं थे। वे तो भयंकर कठिनाअियों और बाधाओं के बावजूद अपने परिश्रम की बदौलत अूँचे अुठे, और अुनका ज्ञान लगभग अैसा बन गया जो सर्वसाधारण तक नहीं पहुँच सकता। बल्कि अैसा मालूम पड़ता है कि हम यह सोचने लगे हैं कि जब तक कोअी अंग्रेजी न जाने तब तक वह बोस के सदृश महान् वैज्ञानिक होने की आशा नहीं कर सकता। यह अैसी मिथ्या धारणा है जिससे अधिक की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता। जिस तरह हम अपने को लाचार समझते मालूम पड़ते हैं, अुस तरह अेक भी जापानी अपने को नहीं समझता।

यह बुराअी, जिसका कि मैंने वर्णन करने की कोशिश की है, अितनी गहरी पैठी हुअी है कि कोअी साहसपूर्ण अुपाय ग्रहण किये बिना काम नहीं चल सकता। हाँ, काँग्रेसी मंत्री चाहें तो अिस बुराअी को दूर न भी कर सकें तो अिसे कम तो कर ही सकते हैं।

विश्वविद्यालयों को स्वावलंबी जरूर बनाना चाहिये। राज्य को तो साधारणतः अुन्हीं को शिक्षा देनी चाहिये जिनकी सेवाओं की अुसे आवश्यकता हो।

अन्य सब दिशाओं के अध्ययन के लिअे अुसे खानगी प्रयत्न को प्रोत्साहन देना चाहिये, शिक्षा का माध्यम तो अेकदम और हर हालत में बदला जाना चाहिये, और प्रान्तीय भाषाओं को अुनका वाजिब स्थान मिलना चाहिये। यह जो काबिले सजा बर्बादी रोज-बरोज हो रही है अिसके बजाय तो अस्थायी रूप से अव्यवस्था हो जाना भी पसंद करूँगा।

प्रान्तीय भाषाओं का दरजा और व्यावहारिक मूल्य बढ़ाने के लिअे मैं चाहूँगा कि अदालतों की कार्रवाअी अपने-अपने प्रान्त की ही भाषा में हो। प्रान्तीय धारासभाओं की कार्रवाअी भी प्रान्तीय भाषा या, जहाँ अेक से अधिक भाषा प्रचलित हों, अुनमें होनी चाहिये। धारासभाओं के सदस्यों से मैं कहना चाहता हूँ कि वे चाहें तो अेक महिने के अन्दर-अन्दर अपने प्रान्तों की भाषाअें भली-भाँति समझ सकते हैं। तामिल भाषी के लिअे कोअी रुकावट नहीं, जो वह तेलगू, मलयालम और कन्नड के, जो कि सब तामिल से मिलती-जुलती हुअी हैं, मामूली व्याकरण और कुछ सौ शब्दों को आसानी से न सीख सकें।

मेरी सम्मति में यह कोअी अैसा प्रश्न नहीं है कि जिसका निर्णय साहित्यज्ञों के द्वारा हो। वे अिस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि किस स्थान के लड़के-लड़कियों की पढ़ाअी किस भाषा में हो। क्योंकि अिस प्रश्न का निर्णय हरेक स्वतंत्र देश में पहिले ही हो चुका है। न वे यही निर्णय कर सकते हैं कि किन विषयों की पढ़ाअी हो, क्योंकि यह अुस देश की आवश्यकताओं पर निर्भर रहता है जिस देश के बालकों की पढ़ाअी होती है। अुन्हें तो बस यही सुविधा प्राप्त है कि राष्ट्र की अिच्छा को यथासम्भव सर्वोत्तम रूप में लायें। अतः जब हमारा देश वस्तुतः स्वतंत्र होगा तब शिक्षा के माध्यम का प्रश्न केवल अेक ही तरह से हल होगा। साहित्यिक लोग पाठ्यक्रम बनायेंगे और फिर अुसके अनुसार पाठ्य पुस्तकें तैयार करेंगे, और स्वतंत्र भारत की शिक्षा पानेवाले विदेशी शासकों को करारा जवाब देंगे। जब तक हम शिक्षित वर्ग अिस प्रश्न के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे, मुझे अिसका बहुत भय है कि हम जिस स्वतंत्र और स्वस्थ भारत का स्वप्न देखते हैं अुसका निर्माण नहीं कर पायेंगे। हमें तो सतत प्रयत्न पूर्वक अपनी गुलामी से मुक्त होना है, फिर वह चाहे शिक्षणात्मक हो या आर्थिक अथवा सामाजिक या राजनैतिक। तीन चौथाअी लड़ाअी तो वही प्रयत्न होगा जो कि अिसके लिअे किया जायगा।

अिस प्रकार मैं अिस बात का दावा करता हूँ कि मैं अुच्च शिक्षा का विरोधी नहीं हूँ। लेकिन अुस अुच्च शिक्षा का मैं जरूर विरोधी हूँ जो कि अिस देश में दी जा रही है। मेरी योजना के अन्दर तो अब से अधिक और अच्छे पुस्तकालय होंगे, अधिक संख्या में और अच्छी रसायन शालाअें और प्रयोग-शालाअें होंगी। अुसके अन्तर्गत हमारे पास अैसे रसायनशास्त्रियों, अिंजिनियरों तथा अन्य विशेषज्ञों की फौज-की-फौज होनी चाहिये जो राष्ट्र के सच्चे सेवक हों और अुस प्रजा की बढ़ती हुअी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें जो अपने अधिकारों और अपनी आवश्यकताओं को दिन-दिन अधिकाधिक अनुभव करती जा रही है। और ये सब विशेषज्ञ विदेशी भाषा नहीं बल्कि जनता की ही भाषा बोलेंगे। ये लोग जो ज्ञान प्राप्त करेंगे वह सबकी संयुक्त संपत्ति होगी। तब खाली नकल की जगह सच्चा असली काम होगा, और अुसका खर्च न्यायपूर्वक समान रूप से विभाजित होगा।

'हरिजन,' ९ जुलाअी १९३८

एक प्रयोग

(आशादेवी)

वर्धा शिक्षण योजना का वह पहलू जिसकी सबसे ज्यादा नुक्ताचीनी की गयी है, अुसका स्वावलंबी या अुत्पादक पहलू है। अभी तक अुद्योग द्वारा शिक्षा के स्वावलंबी होने या न होने के संबंध में जितनी भी बहस हुअी है वह दिमागी ही थी क्योंकि हमारे पास वैज्ञानिक ढंग से अिकट्ठा किया हुआ ज्ञान न था। जुलाअी में वर्धा के विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल में पहिली दो श्रेणियों के बच्चों को तकली पर कताअी द्वारा शिक्षण देने का प्रयोग शुरू किया गया था। अिस प्रयोग के संबंध में सब जानकारी बहुत सावधानी से अिकट्ठी की गयी है, और अुसने हमें अपनी चर्चा और अनुसंधान में काफी मदद मिल सकती है।

यह कहना जरूरी है कि अिस प्रयोग के लिअे जो साधन हमें मिले हैं, वे आदर्श नहीं हैं। प्राक्टिसिंग स्कूल के बच्चे स्थानीय म्युनिसिपल स्कूलों के हैं जिन्हें अुद्योग का वातावरण अभी तक नहीं मिला है। शिक्षक न तो दस्तकारी को अच्छी तरह जानते हैं और न नअी शिक्षण पद्धति से अच्छी तरह परिचित हैं। वे प्राक्टिसिंग स्कूल के पुराने शिक्षक हैं और अुन्होंने तकली पर कताअी का और नये शिक्षण की समवाय (Correlated) पद्धति का कुछ ज्ञान जल्दी में हासिल कर लिया है। असल में वे बच्चों को पढ़ाकर ही नअी पद्धति खुद सीख रहे हैं। अिस तरह यह प्रयोग साधारण ही कहा जा सकता है।

स्कूल में कोअी निश्चित समय-पत्रक नहीं है, क्योंकि शिक्षण दस्तकारी के मिलाते समय अुपयोगी अवसर मिलने पर निर्भर है। मामूली तौर पर रोज़ का काम अिस क्रम से होता है:—

प्रार्थना, शरीर की सफ़ाअी, तकली पर कातना और अुससे सम्बद्ध गणित, मातृभाषा और नाट्यकला, समाज-शास्त्र और सामूहिक गायन, सामान्य विज्ञान, तकली पर कताअी, बागबानी और सामूहिक खेल।

शुरू में ५॥ घंटे के कार्यक्रम में खालिस दस्तकारी के काम के लिअे सिर्फ चालिस मिनट (३० मिनट कताअी और १० मिनट में सूत लपेटना और गिनना) दिये जाते थे। धीरे-धीरे अब ८० मिनट दिये जाते हैं और जैसे-जैसे दस्तकारी के लिअे बच्चों का शौक बढ़ता जा रहा है यह समय भी बढ़ाया जा रहा है। लेकिन अभी तक ४० मिनट के दो समयों से अधिक सिर्फ दस्तकारी के लिअे नहीं दिये गये हैं।

चूँकि अिस लेख में मै सिर्फ अुत्पादक पहलू को ही सामने रखना चाहती हूँ। अिसलिअे अिस नअी शिक्षण पद्धति का बच्चों पर जो सामान्य प्रभाव पड़ा है, अुसका जिक्र नहीं किया जायगा। नीचे ७ से ८ साल तक के ३० बच्चों के कताअी के आँकड़े दिये गये हैं:—

नाम	गति (अेक घंटे में तारों की संख्या महीने के अंत में)			अुत्पादन					
				जुलाअी		अगस्त		सितम्बर	
	जुलाअी	अगस्त	सितम्बर	तार	घंटे	तार	घंटे	तार	घंटे
१. लक्ष्मण कृपाराम	२०	४०	२४	३१७	१६	२०३	५	१२०	४
२. नीलकंठ तुकाराम	१२	२१	३२	१५२	१२½	३८४	१८	८१७	२८
३. भाऊराव देवराम	२०	४१	५७	१०१	५	१५०	२३	१२०७	२१
४. नारायण जसूबा	१६	३६	४३	७०	४½	५८०	१६	१२६४	२९
५. प्यारेलाल	२६	४१	५१	२९२	१०	१९५	४	१३००	१२
६. रामविलास	२७	३१	७०	५९८	२१	६६४	१७	११३४	१९
७. अुमाशंकर	३५	४५	६५	३२०	९	३१८	७	११०८	१७
८. पुरुषोत्तम	१९	गे. हा.	३८	१२६	६	गे. हा.	गे. हा.	६१६	१६
९. लक्ष्मण	२०	३८	५५	२१९	१०	७०४	१८	११०९	२९
१०. भंवरीलाल	१६	४०	६१	२०८	१२	५०९	१२	९५५	१५
११. गणपत खाती	गे. हा.	७१	१२१	गे. हा.	गे. हा.	१२१०	१८	३७३७	२९
१२. सत्यनारायण	१९	२०	२५	३८	२	१९५	९	२००	८
१३. सीताराम	५८	६१	१६२	११४७	२०	११५०	१८	१६५०	१५½

१४.	पन्नाल	६५	८३	८४	७३४	१३½	१२७१	१९½	१०२४	१२½
१५.	शंकरलाल	४१	६६	९८	६३०	१७½	९६१	१७	१३२५	१७
१६.	अवध प्रसाद	४०	५३	६५	५५२	१८	७४३	१९	१०८९	१९
१७.	मोहन प्रसाद	२८	४१	६१	५८९	१९	६५५	१८	९९६	२२
१८.	श्रावण	३६	७६	९५	३५७	१०	८६१	१५	१७०२	२१
१९.	भैय्यालाल	४२	९१	१३५	८४०	२०	१४३५	१८	३०४०	२२¼
२०.	गजानन गणपती	२१	३७	४०	३४२	१९	४११	१२	११०६	३०
२१.	शरत अन्नासाहेब	२०	३०	२९	२८२	१२	६९४	२०	६९३	३०
२२.	रामकृष्ण रामचन्द्र	१८	३९	३८	१८०	१०	७९४	१०	१५९३	३२
२३.	शिवाजी मोतीबाबा	१३	३६	४८	१८६	१५	४३१	१२	१३२६	३३
२४.	कृष्णा नागोराव	१८	२१	५५	२६३	१४	३९४	१९	९३८	१५
२५.	विजय शंकरराव	२३	६०	६५	२०९	९	९२५	१८	१२९२	३५
२६.	वसंत दत्तात्रय	११	१८	२२	१२३	११	४०३	२५	९७२	३०
२७.	गंगाधर बुद्धेराव	४८	५६	७५	५८०	१२	८९९	१८	१११५	३८
२८.	कृष्णनारायण	३६	५०	६०	५७१	१९	१०१६	१८	२१३६	३९
२९.	वसंत महादेव	२४	४०	५६	२३९	१०	९५७	१७	१२८९	३२
३०.	शारदा शंकरराव	२३	३७	४३	२७७	१२	५३४	१४	११०२	२८

अूपर दिये आंकड़ों का सार अिस प्रकार है :—

	जुलाअी	अगस्त	सितम्बर
अेक घंटे में कताअी की सबसे अधिक गति	५० तार (२०० फीट)	९१ तार	१३३ तार
अेक घंटे में कताअी की सबसे कम गति	१२ तार	२० तार	२४ तार
अेक घंटे में कताअी की औसत गति	२४ तार	४४ तार	६४ तार
सूत का सबसे अधिक नम्बर (Count)	२० नम्बर	३० नम्बर	३२ नम्बर
सबसे कम नम्बर	४ ,,	४ ,,	५ ,,
औसत नम्बर	९ ,,	१२ ,,	१३ ,,
३० विद्यार्थियों की कक्षा का मासिक पूर्ण अुत्पादन	७४ लटी	१६० लटी	१५१ लटी

अगर हम अिन आंकड़ों का जाकिर हुसैन कमेटी के विस्तृत अभ्यासक्रम के आंकड़ों से मुकाबला करें तो हम देखेंगे कि २॥ महीने में ही विद्यार्थियों ने अभ्यासक्रम के ६ महीने के स्टैन्डर्ड तक की योग्यता और अुत्पादन शक्ति प्राप्त कर ली।

अिसके बाद बच्चों की कमाअी का हिसाब दिया जाता है। मजदूरी महाराष्ट्र चरखा संघ की चालू दरों के अनुसार लगायी गयी है :—

	जुलाअी	अगस्त	सितम्बर
प्रति मास प्रति कक्षा की कमाअी	०-१३-०	२-८-३	४-१-०
अेक विद्यार्थी की प्रत्येक मास में औसत कमाअी	०-०-५	०-१-१½	०-२-२
अेक महीने में सबसे कम कमाअी	०-०-३	०-०-६	०-१-०
अेक महीने में सबसे अधिक कमाअी	०-१-८	०-४-१½	०-५-३

नोट:—हरअेक महीने में कताअी (लपेटने के साथ) के लिअे नीचे लिखे अनुसार समय दिया गया:—जुलाअी—१२ घंटे, अगस्त—१५ घंटे, सितम्बर—२३ घंटे।

यह आंकड़े हमारी बात को साफ साबित कर देते हैं और अिसलिअे अुनके संबंध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

'हरिजन,' २६ नवम्बर, १९३८

शिक्षा-शास्त्रियों की उलझनें

हिन्दुस्तानी माध्यम

वर्धा के अध्यापक शिक्षण केन्द्र में पचहत्तर प्रतिनिधि, जिन्हें कि विभिन्न प्रान्तीय सरकारों और चन्द देशी राज्यों तथा खानगी व राष्ट्रीय संस्थाओं ने भेजा था, अपना तीन हफ्ते का अभ्यासक्रम पूरा कर चुके थे। अपने-अपने प्रान्तों को वापस जाने के पहिले, वे गांधीजी से मिलना और कुछ बातें कर लेना चाहते थे।

अुनमें से अधिकांश हिन्दुस्तानी समझते थे, पर थोड़े से अैसे भी थे जो हिन्दुस्तानी समझने में असमर्थ थे। श्रीमती आशादेवी ने गांधीजी से कहा कि 'आप हिन्दुस्तानी में बोल सकते हैं।' तदनुसार गांधीजी ने हिन्दुस्तानी में बोलना शुरू कर दिया, पर कुछ प्रतिनिधियों के चेहरों से जब अैसा प्रतीत हुआ कि वे अेक शब्द भी नहीं समझ रहे हैं, तब गांधीजी को लगा कि श्री० आशादेवी जरूरत से ज्यादा आशावाद से काम ले रही हैं। अुन बेचारों में राष्ट्रभाषा समझने की अभी योग्यता नहीं आयी है।

गांधीजी को अिस बात की फिक्र थी कि जिस स्कीम को वे लोग अमल में लाने जा रहे हैं अुसके सम्बन्ध में अगर कोअी अुलझनें अुनके दिमाग को परेशान कर रही हों तो अुन्हें अच्छी तरह हटा देना चाहिये। अुन्होंने मजाक के लहजे में कहा, 'अल्पसंख्यकों के हकों के बारे में चर्चा करना आज अेक फैशन-सा बन

गया है, अिसलिअे, हालाकि, जो केवल अंग्रेजी ही समझते हैं, अुनकी संख्या शायद अुँगलियों पर गिनने लायक है, तो भी मैं अंग्रेजी में ही बोलूँगा। मगर मैं आपको आगाह कर देता हूँ कि अगली मीटिंग में मैं अैसा नहीं करूँगा। हिन्दुस्तानी सीख लेने का दृढ़ निश्चय लेकर आपको वहाँ से जाना चाहिये। अगर हम अंग्रेजी माध्यम के जरिये ही विचारों का आदान-प्रदान करते रहेंगे, तो बुनियादी तालीम के अिरादे को, जो हमारे करोड़ों लोगों की शिक्षा सम्बन्धी जरूरतें पूरी करनेवाला समझा जाता है, अमल में लाना असम्भव है।

अुनकी अुलझनें

अुक्त प्रतिनिधियों ने गांधीजी से कितने ही प्रश्न किये। पहिले प्रश्न से यह शंका प्रगट होती थी कि वर्धा स्कीम भविष्य की कसौटी पर टिक सकेगी या नहीं, या महज वह अेक अस्थायी चीज है। बहुत-से बड़े बड़े शिक्षा-शास्त्रियों का तो यह मत है कि अेक-न-अेक दिन व्यापक अुद्योगीकरण के लिअे अिन दस्तकारियों को स्थान खाली करना ही होगा। अेक अैसा समाज, जिसने कि वर्धा स्कीम के अनुसार शिक्षा पायी होगी, और जो न्याय, सत्य और अहिंसा पर आधार रखता होगा, क्या अुद्योगीकरण के प्रबल प्रवाह से बच सकेगा?

"यह कोअी व्यावहारिक प्रश्न नहीं है," गांधीजी ने जवाब दिया—"हमारे तात्कालिक कार्यक्रम पर अिसका कोअी असर नहीं पड़ेगा!

"हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि अब से आगे आनेवाले जमाने में क्या होने जा रहा है; सवाल तो यह है कि हमारे गाँवों में जो करोड़ों लोग रहते हैं अुनकी सच्ची आवश्यकता अिस बुनियादी तालीम की स्कीम से पूरी हो सकेगी या नहीं। मेरा खयाल यह नहीं है कि हिन्दुस्तान में अिस हद तक कभी अुद्योगीकरण हो जायगा कि गाँव कोअी रहेंगे ही नहीं। हिन्दुस्तान का अधिकांश भाग तो हमेशा गाँवों का ही रहेगा।"

"हाल में जो कॉंग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव हुआ है, अुसके फलस्वरूप अगर कॉंग्रेस की नीति में परिवर्तन हुआ, तो बुनियादी तालीम की स्कीम का क्या होगा?" यह दूसरा प्रश्न था।

गांधीजी ने अिसका जवाब यह दिया कि "यह तो बेमौके का भय है। कॉंग्रेस-नीति में अगर कोअी हेरफेर हुआ तो वर्धा स्कीम पर अुसका कोअी असर

नहीं पड़ेगा। अुसका असर अगर पड़ेगा ही तो अूँची राजनैतिक बातों पर ही पड़ेगा।" अिसके बाद अुन्होंने कहा—"आप लोग यहाँ तीन हफ्ते के अभ्यासक्रम का शिक्षण लेने के लिअे आये हैं, जिससे कि आप अपने-अपने प्रान्त में जाकर अपने विद्यार्थियों को वर्धा योजनानुसार तालीम दे सकें। आपको यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि अिस शिक्षा-पद्धति से जरूर हमारी आवश्यकतायें पूरी होंगी।

"अुद्योगीकरण की भारी-भारी योजनायें भले ही पेश की जायें पर कॉंग्रेस का आज हमारे सामने जो ध्येय है, वह देश का अुद्योगीकरण नहीं है। बम्बअी में कॉंग्रेस ने जो प्रस्ताव पास किया था अुसके अनुसार अुसका ध्येय तो ग्राम-अुद्योगों का पुनरुद्धार है। मेहनत से तैयार की हुअी अुद्योगीकरण की किसी स्कीम के जरिये आप लोग देश की जागृति नहीं कर सकते। कोअी भी स्कीम बनाते समय हमें अपने करोड़ों किसानों को ध्यान में रखना होगा। अिन स्कीमों से अुनकी आमदनी में अेक पाअी की भी वृद्धि होने की नहीं; जब कि चर्खा संघ और ग्राम-अुद्योग संघ अेक साल के ही अर्से में अुनकी जेबों में लाखों रुपया पहुँचा देंगे। वर्किंग कमेटी या मंत्रिमंडलों में चाहे जो परिवर्तन हों, मुझे तो जाती तौर से, कॉंग्रेस की रचनात्मक प्रवृत्तियों के लिअे कोअी खतरा मालूम नहीं होता। हालांकि अिन प्रवृत्तियों की शुरूआत की तो कॉंग्रेस ने ही थी, पर अेक लम्बे अर्से से वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये हुअे हैं, और अपनी अुपयुक्तता अुन्होंने पूरी तरह साबित कर दी है। बुनियादी तालीम अिनकी अेक शाखा है। शिक्षा-मंत्री भले ही बदल जायें, पर यह तो रहेगी ही। अिसलिअे जो लोग बुनियादी तालीम में दिलचस्पी रखते हैं, अुन्हें कॉंग्रेस की राजनीति के बारे में परेशान होने की जरूरत नहीं। शिक्षा की अिस नअी योजना में कोअी अपने गुण होंगे, तो वह जीवित रहेगी, न होंगे, तो आप ही खत्म हो जायगी। लेकिन अिन प्रश्नों से मुझे सन्तोष नहीं होगा। अिनका बुनियादी तालीम की स्कीम से कोअी सीधा संबंध नहीं है। ये प्रश्न हमें कुछ आगे नहीं ले जाते।"

मूल सिद्धान्त

अेक मित्र ने पूछा—"क्या वर्धा शिक्षण योजना का यही मूल सिद्धान्त माना जाय कि जो चीज तकली से संबद्ध न की जा सके वह विद्यार्थियों को हरगिज न बतानी चाहिये।" गांधीजी ने कहा, "यह तो

मेरी निन्दा है। यह सच है कि मेरी राय में सब शिक्षा किसी बुनियादी हस्तकला से सम्बद्ध होना चाहिये। जब आप किसी ७ साल या १० साल के बच्चे को किसी अुद्योग द्वारा शिक्षा दें तो शुरू में आपको वे विषय अलग रखने होंगे जो अुद्योग द्वारा नहीं सिखलाये जा सकते। अिस प्रकार धीरे-धीरे आप अुद्योग में अुन विषयों का सम्बन्ध जिनको आपने शुरू में छोड़ रक्खा था, ढूंढ निकालेंगे। अगर आप यही तरीका अख्तियार करेंगे तो आपकी और विद्यार्थियों की शक्ति का बचाव होगा। फिलहाल हमारे पास न तो किताबें हैं और न [illegible] अनुभव। अिसलिअे हमको सावधानी से ही अपना कदम बढ़ाना होगा। असल बात तो यह है कि शिक्षक का दिमाग आशा से भरा होना चाहिये। अगर आप देखें कि कोअी विषय दस्तकारी के जरिये नहीं सिखलाया जा सकता तो नाराज और निराश न हों। अस विषय को छोड़कर आगे बढ़ें। शायद दूसरा शिक्षक आपको ठीक रास्ता दिखला सके। जब आप सब मिलकर अपना अनुभव अेक-दूसरे को बतायेंगे तो बाद में पुस्तकें भी तैयार हो सकेंगी और आगे चलकर आनेवाले शिक्षकों का काम बहुत आसान हो जायगा।

"हमारी शिक्षा में क्रान्ति होने की आवश्यकता है। दिमाग को हाथों द्वारा शिक्षित करना चाहिये। [illegible] अुँगलियों में जो शिक्षण शक्ति है अुस का [illegible] सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है और [illegible] नहीं है। जो लोग अपने हाथों को शिक्षित नहीं [illegible] शिक्षा ग्रहण करते हैं, अुनके जीवन में [illegible] शक्तियां विकसित नहीं हो पातीं। [illegible] का मन अेकाग्र नहीं हो सकता। [illegible] और अुनका दिमाग अिधर-अुधर दौड़ने [illegible] और कान अपना-अपना काम ठीक [illegible] जो बच्चों को [illegible] नाम से पुकारे जाने लायक नहीं हैं।"

हाथों द्वारा बुद्धि का विकास

श्रीमती आशादेवी ने गांधीजी से प्रार्थना की कि वे अिस बात को समझायें कि हाथों द्वारा बुद्धि का विकास किस तरह हो सकता है। गांधीजी ने कहा, "पुरानी रीति यह थी, कि स्कूलों के साधारण अभ्यास-क्रम में किसी दस्तकारी को भी जोड़ दिया जाता था। अुद्योग और शिक्षा में कोअी संबंध न था। मेरे ख्याल से यह अेक भारी भूल थी। शिक्षक को अुद्योग सिखाना चाहिये और अुस अुद्योग के सहारे विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान देना चाहिये। जब तक मै गणित न जानूं तब तक मैं यह नहीं बता सकूंगा कि मैंने तकली पर अमुक समय में कितने तार काते हैं और सूत का क्या नम्बर है। यह बतलाने के लिअे मुझे जोड़, बाकी, गुणा और भाग की क्रियाअें भी मालूम होना चाहिये। कठिन हिसाब हल करने के लिअे मुझे कुछ चिह्नों का अिस्तेमाल करना पड़ेगा और अिस तरह मैं बीजगणित भी समझ लूंगा। मेरा आग्रह है कि बीजगणित में रोमन अक्षरों के बजाय हिन्दुस्तानी अक्षर ही अिस्तेमाल किये जाने चाहिये।

"अब रेखागणित को लीजिये। तकली के कुंडल से अच्छा अुदाहरण वृत्त (Circle) को समझाने के लिअे और क्या होगा? मैं यूक्लिड का नाम लिअे बिना ही बच्चों को गोलाकार के सम्बन्ध में सब ज्ञान दे दूंगा।

"आप पूछेंगे कि मैं बच्चों को भूगोल और अितिहास कताअी द्वारा किस तरह सिखलाअूंगा। कुछ समय पहिले मैंने अेक किताब देखी थी जिसका नाम था "कपास-मनुष्य जाति की कहानी" ("Cotton-The Story of Mankind") अुस किताब ने मुझे रोमांचित कर दिया। अिसके प्रारंभ में पुराने जमाने का अितिहास था और यह बतलाया गया था कि शुरू में कपास कहाँ और किस तरह अुगायी गयी थी; अुसका विकास किस तरह हुआ और जुदा-जुदा देशों के बीच में अुसका व्यापार किस तरह हुआ करता था। जब मैं बच्चे को अिन देशों के नाम बतलाता तो स्वभावतः अुन देशों के अितिहास और भूगोल के संबंध में भी कुछ रोचक बातें बता देता। अुन्हें बतलाता कि किन राजाओं के जमाने में यह व्यापार चलता था। बच्चों को यह भी समझा देता कि कुछ देशों में कपास और कुछ देशों में कपास का बना कपड़ा बाहर से क्यों मंगाया जाता है। प्रत्येक देश कपास को अुत्पन्न क्यों नहीं कर सकता? अिस प्रश्न को हल करने में मैं अर्थ-

शास्त्र और कृषिशास्त्र का साधारण ज्ञान दे सकता हूँ। मैं बच्चों को यह भी बताअूंगा कि कपास की कौन कौन-सी किस्में होती हैं, वे किस तरह की भूमि में अुगती हैं, किस तरह अुगायी जाती हैं और किन-किन देशों में मिलती हैं। तकली पर सूत कातते-कातते मैं विद्यार्थियों को औीस्ट अिंडिया कंपनी के जमाने की झलक दे दूंगा। अुनको बतलाअूंगा कि अंग्रेज हिन्दुस्तान में क्यों आये, अुन्होंने हमारी कताअी की कला को किस तरह अुजाड़ दिया, और तिजारत के सहारे हिन्दुस्तान पर धीरे-धीरे किस किस तरह राजनैतिक कब्जा भी करने की कोशिश की। अुन्होंने मुगल और मरहट्टा राज्यों को धीरे-धीरे किस तरह मिट्टी में मिला दिया और अंग्रेजी राज्य स्थापित किया। बाद में हिन्दुस्तान के लोगों में किस तरह जागृति हुअी। अिस सिलसिले में काँग्रेस का अितिहास भी संक्षेप में और रोचक ढँग से बतलाया जा सकता है। अिस तरह हम अिस नये शिक्षा के जरिये बच्चों को बहुत-सी बातें बतला सकते हैं। नअी पद्धति द्वारा बच्चे हर-अेक बात जल्द समझ लेंगे और अुनके दिमाग पर भी अनावश्यक जोर न पड़ेगा।

अिसी बात को मैं थोड़े और विस्तार से कह देना चाहता हूँ। जिस तरह अेक शास्त्र को अच्छी तरह समझाने के लिअे हमें और भी शास्त्रों का ज्ञान हासिल करना पड़ता है, अुसी तरह अगर हम 'तकली योग' के विशेषज्ञ बनना चाहते हैं तो हमें और बहुत से शास्त्रों का ज्ञान अनायास ही मिल जायेगा। अगर मैं तकली की हरेक चीज पर ध्यान दूं और अुसके अुपयोग समझने की कोशिश करूं तो [illegible] विज्ञान का ज्ञान सरल रीति से मिल जायेगा। मैं सोचूंगा कि तकली का [illegible] पीतल का और अुसका तकुआ लोहे का क्यों है। मैं यह भी [illegible] का अमुक व्यास ही क्यों है। अुसको छोटा-बड़ा करने से क्या असर होगा। [illegible] सब प्रश्नों को हल करके मैं बच्चों के सामने भी पेश करूंगा। [illegible] को सोचने और समझने की कोशिश करेंगे तो वे [illegible] में भी प्रवेश कर सकेंगे। अिस प्रकार हमारे [illegible] है। अुसके द्वारा हमको अनंत ज्ञान प्राप्त हो [illegible] हो सकती है तो अपनी शक्ति और [illegible]।

मैं कताअी को ही [illegible] अगर मैं दस्अी होता तो अपने [illegible] सकता। कहीं कोई दूसरा [illegible]

अिस नअी शिक्षा पद्धति को सफल बनाने के लिअे हमें अैसे शिक्षकों की जरूरत है जो प्रतिभाशाली हों और सच्चे अुत्साह से भरे हों। अुनको दिन-रात यह सोचते रहना होगा कि वे अमुक ज्ञान अुद्योग द्वारा किस तरह दें। यह नया शिक्षा शास्त्र मोटी मोटी पुरानी किताबें पढ़कर प्राप्त न हो सकेगा। शिक्षक को अपनी निरीक्षण शक्ति बढ़ानी होगी और अधिक चिंतनशील बनना पड़ेगा। आपको अपनी वाणी, दिमाग और हस्तकला ही का सहारा लेना होगा। शिक्षणशास्त्र में यह अेक क्रान्ति होगी। अब तक आप लोग अिन्स्पेक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार ही चले हैं ताकि अिन्सपेक्टर आपके काम से खुश हो और आपको अधिक वेतन मिल सके। लेकिन नये शिक्षक को अब अिन बातों की चिंता न करनी होगी। वह कहेगा, 'अगर मैंने अपनी पूरी शक्ति लगाकर विद्यार्थियों की शक्तियों का विकास किया है तो यह मेरे लिअे काफी है और मेरा कर्त्तव्य पूरा हुआ।"

शिक्षकों की ट्रेनिंग

किसी ने सवाल पूछा, "क्या यह अच्छा न होगा कि शिक्षक को पहिले हस्तकला में निपुण करा दिया जाय और फिर अुद्योग द्वारा शिक्षण देने की नअी पद्धति को अच्छी तरह समझा दिया जाय? फिलहाल तो अुनसे आशा की जाती है कि वे अपने-आपको ७ साल के विद्यार्थी मानकर ही चलें और अुद्योग द्वारा छोटे बच्चों की तरह ज्ञान हासिल करें। किन्तु अिस तरीके से तो हमें नये शिक्षण-शास्त्र को पूरी तौर से समझने में बहुत समय लग जायगा।"

गांधीजी—"नहीं, बहुत समय न लगेगा। मान लीजिये कि जो शिक्षक मेरे पास सीखने के लिअे आता है अुसको गणित, अितिहास तथा अन्य विषयों का साधारण ज्ञान है। मैं अुसको कार्ड-बोर्ड के संदूक बनाने या कातने के लिअे कहूँगा। जब वह अपना काम कर रहा होगा तो मैं अुसको समझा दूंगा कि अमुक अुद्योग द्वारा वह गणित, अितिहास और भूगोल का ज्ञान किस तरह हासिल कर सकता था। अिस तरह वह ज्ञान और अुद्योग के बीच में संबंध स्थापित करना सीखेगा। यह सीखने में अुसको ज्यादा समय न लगना चाहिये। अब दूसरा अुदाहरण लीजिये। मान लीजिये कि मैं अपने सात साल के बच्चे के साथ अेक बुनियादी पाठशाला में जाअूं। हम दोनों कताअी सीखेंगे और मैं अपना पुराना

ज्ञान कताअी से संबद्ध भी कर लूगा। बच्चे के लिअे सभी चीजें नअी होंगी। ७० साल के पिता के लिअे कुछ हफ्तों से ज्यादा समय न लगना चाहिये। अिस तरह अगर शिक्षक में ७ साल के बच्चे की तरह अुत्सुकता और ग्रहण शक्ति पैदा न हुअी तो वह सिर्फ यंत्र की तरह कताअी करेगा और नअी पद्धति को न समझ सकेगा।"

प्रश्न—"अेक विद्यार्थी जिसने कि मेट्रिक परीक्षा पास की है, अगर चाहे तो कालेज में पढ सकता है। क्या अेक बच्चा बुनियादी शिक्षाक्रम को पूरा करके कालेज में पढने योग्य होगा ?"

अुत्तर—"बुनियादी शिक्षाक्रम को पूरा करनेवाला विद्यार्थी मामूली मेट्रिकुलेशन पास विद्यार्थी से अच्छा रहेगा, क्योंकि अुसकी शक्तियाँ अधिक विकसित होंगी। जब वह कालेज में जायगा तो मेट्रिकुलेट की तरह हताश न होगा।"

प्रश्न—"बुनियादी स्कूलों में ७ साल से कम अुम्र के विद्यार्थी भरती न किये जायेंगे। यह अुम्र शारीरिक होगी या मानसिक ?"

अुत्तर—"मामूली तौर से ७ साल की अुम्र के बच्चे ही भरती किये जायेंगे किंतु कुछ विद्यार्थी कम या ज्यादा अुम्र के भी होंगे। हमें जिस्मी और दिमागी दोनों ही अुम्रों का ख्याल रखना होगा। अेक बच्चा ७ साल की अुम्र में ही अेक अुद्योग के सीखने लायक हो सकता है। दूसरा शायद अिस लायक न हो। अिसलिअे हम कोअी सख्त नियम नहीं बना सकते। सभी बातें सोचनी होंगी।"

गांधीजी कहने लगे, "आपके प्रश्नों से मालूम होता है कि आपके मन में शंकाअें हैं। यह ठीक नहीं है। आपको तो पूरा यकीन होना चाहिये। अगर आपको मेरी तरह यह पक्का विश्वास हो कि वर्धा-शिक्षण-योजना ही हमारे देश के करोड़ों बच्चों के लिअे अुपयोगी है तो आप अपने काम में सफल होंगे। अगर आप में यह विश्वास नहीं है तो यह आपको ट्रेनिंग देनेवाले लोगों की गलती है। अुनमें कम-से-कम अितनी तो योग्यता होनी चाहिये कि वे आप में यकीन पैदा कर सकें।"

प्रश्न--"बुनियादी शिक्षा गांवों के लिअे तैयार की गयी है। क्या शहरवालों के लिअे कोअी दूसरा मार्ग नहीं है? क्या वे लकीर ही पीटते रहें?"

अुत्तर--"यह सवाल अच्छा है। लेकिन मैं अिसका जवाब 'हरिजन' के लेखों में पहिले दे चुका हूँ। हमारे सामने अभी बहुत काम पड़ा है। अगर हम फ़िलहाल सात लाख गांवों की तालीम का मसला हल कर सके तो काफी होगा। कुछ शिक्षा-शास्त्री शहरों के बारे में सोच ही रहे हैं। लेकिन अगर हम भी गावों के साथ-साथ शहरों का ख्याल करने लगें तो हमारी ताक़त बर्बाद हो जायगी।"

प्रश्न--"मान लीजिये कि अेक ही गाव में तीन बुनियादी स्कूल हों और हरअेक में अलग-अलग दस्तकारी के मार्फत तालीम दी जाती है। अेक बच्चा फिर कौन-से स्कूल में जाय?"

उत्तर--"हमारे बहुत से गाव अितने छोटे हैं कि वहाँ अेक से ज्यादा स्कूल चल ही नहीं सकता। लेकिन अेक बड़े गाँव में अेक से ज्यादा स्कूल हो सकते हैं। अैसी हालत में दोनों स्कूलों में अेक ही दस्तकारी सिखायी जानी चाहिये। लेकिन मैं कोअी सख्त नियम नहीं बना देना चाहता। तजुर्बे से ही हम सीख सकेंगे। हमें यह जाँच करनी होगी कि कौन-सा हुनर ज्यादा लोकप्रिय है और कौन-से हुनर की मार्फत हम बच्चों की शक्तियों को बढ़ा सकते हैं। असली मतलब यही है कि चाहे कोअी भी दस्तकारी हो, अुसके द्वारा बच्चे की सब शक्तियों का समान विकास होना चाहिये। वह हुनर गांव का हो और कुछ फ़ायदे का भी होना चाहिये।"

प्रश्न--"अगर किसी बच्चे को आगे जाकर दूसरा ही धंधा करना हो तो वह सात साल तक कताअी का ही धंधा क्यों सीखे?"

अुत्तर--"अिस सवाल से मालूम होता है कि आप नअी शिक्षा-पद्धति बिलकुल नहीं समझे हैं। बुनियादी स्कूलों में बच्चे सिर्फ अेक दस्तकारी सीखने नहीं जाते। वे स्कूलों में प्रारंभिक शिक्षा के लिअे और दस्तकारी द्वारा अपने दिमाग की तरक्की के लिअे जाते हैं। मैं दावा करता हूँ कि अेक बच्चा जो अिस नअी तालीम के स्कूल में ७ साल तक पढ़ चुका है, आगे जाकर सात साल तक साधारण शिक्षण पाये हुअे

दूसरे लड़कों से किसी भी धंधे में ज्यादा कामयाब होगा, चाहे वह लेन-देन का काम करे या तिजारत का। बुनियादी तालीम पाये हुअे लड़के की सब शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं। और वह फिर किसी भी काम को कुशलता से कर सकता है। अगर आपको मैं आज यह अच्छी तरह समझा सकूं कि बुनियादी तालीम थोड़ी साहित्यिक और थोड़ी औद्योगिक शिक्षा नहीं है, तो मुझे सन्तोष होगा। यह नअी तालीम दस्तकारी द्वारा सम्पूर्ण शिक्षण है।"

प्रश्न—"क्या यह ठीक न होगा कि हरअेक स्कूल में अेक से ज्यादा हुनर सिखलाये जायँ? बच्चे बहुत दिनों तक अेक ही तरह का काम करते-करते शायद अूब जायंगे।"

अुत्तर—"अगर मैं देखूँ कि अेक महीने की कताअी के बाद ही बच्चे शिक्षक से अूब गये हैं तो मैं अुस शिक्षक को बरखास्त कर दूंगा। जिस तरह अेक ही बाजे पर तरह-तरह के राग बजाये जा सकते हैं अुसी तरह कताअी और अुसके द्वारा तालीम देने में भी विविधता और नयापन हो सकता है! अेक हुनर के बाद दूसरा हुनर बदलते जाने में बच्चा अेक बन्दर की तरह हो जाता है जो अेक टहनी पर कूदता रहता है और जिसका घर कहीं भी नहीं है। मैं आपको यह भी बता चुका हूँ कि कताअी को शास्त्रीय ढंग से सिखाने में कताअी के अलावा बहुत-सी बातें भी सिखलायी जा सकती हैं। मिसाल के लिअे धीरे-धीरे अपनी तकली और अटेरन खुद बनाना सीख सकता है। अिसलिअे अगर शिक्षक दस्तकारी को वैज्ञानिक ढंग से सिखलायेगा तो वह नये-नये ढंग से बच्चों को शिक्षा दे सकेगा, और विद्यार्थियों की सब ताकतों की तरक्की करने में कामयाब होगा।"

'हरिजन', २५ फरवरी, १९३९.

बुनियादी तालीम की योजना और धार्मिक शिक्षण

जून सन् १९३८ में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा विभिन्न कॉंग्रेस प्रान्तों के शिक्षा-विभाग के कार्यकर्ताओं को वर्धा शिक्षण योजना समझाने के लिये अेक वर्ग चलाया गया था। अिन कार्यकर्त्ताओं को गांधीजी से सेगाँव में दो बार मिलने का मौका मिला, और अुन्होंने अपनी कठिनाअियां और शंकाअें महात्माजी के सामने पेश कीं।

सबसे बड़ी समस्या जो गांधीजी के सामने पेश की गयी वह वर्धा योजना में धार्मिक शिक्षण के स्थान के सम्बन्ध में थी। महात्माजी ने अिस प्रश्न का अुत्तर अिस प्रकार दिया, "हमने वर्धा शिक्षण योजना में धार्मिक शिक्षा को अिसलिअे स्थान नहीं दिया है कि आजकल जिस प्रकार धर्म सिखलाये और अमल में लाये जाते हैं, अुससे अेकता के बजाय झगड़ा ही पैदा होता है। किन्तु मेरी पक्की राय है कि वे तत्त्व जो सब धर्मों में समान हैं हरअेक बच्चे को सिखलाये जाने चाहिये। ये तत्त्व शब्दों या पुस्तकों द्वारा नहीं सिखलाये जा सकते। अिन तत्त्वों को बच्चे अपने गुरु के दैनिक जीवन द्वारा ही सीख सकते हैं। अगर शिक्षक खुद सत्य और न्याय के आधार पर अपनी जिंदगी बसर करता है तो बच्चे यह आसानी से सीख सकेंगे कि सत्य और न्याय सभी धर्मों के आधार हैं।"

जब महात्माजी से यह पूछा गया कि क्या ७ और १४ वर्ष के बीच के बच्चों को सब धर्मों के लिअे अेक-सा आदर रखना सिखलाया जा सकता है, महात्माजी ने अुत्तर दिया, "हा मेरा अैसा ख्याल है। यह बात कि सब धर्मों के मूल तत्त्व अेक ही हैं और अिसलिअे हमको अेक-दूसरे के धर्म के लिअे आदर और प्रेम होना चाहिये, अेक बहुत स्पष्ट सत्य है। अुसको ७ साल के बच्चे आसानी से समझकर अमल में ला सकते हैं। लेकिन असल बात तो यह है कि शिक्षक को स्वयं यह श्रद्धा रखनी चाहिये।

सेगाँव-पद्धति

१. पूज्य गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा की योजना को अिस लेख में 'सेगाँव-पद्धति' कहा गया है।

२. यह योजना बताती है कि अेक बालक को आगे चलकर मनुष्य-परिवार में अेक जिम्मेवार कुटुम्बीजन का स्थान लेने लायक बनाने के लिअे हम किस प्रकार अहिंसा का प्रयोग कर सकते हैं।

३. अिस योजना के सम्बन्ध में व्यापक रूप से यह दावा किया गया है कि यदि हमें मानव समाज में खूनी यानी लड़ाकू वृत्ति के स्थान पर शान्ति-स्थापक वृत्ति निर्माण करनी है, तो आवश्यक फेरफारों के साथ यह तमाम देशों में और सभी जातियों में काम दे सकती है। हिन्दुस्तान के लिअे तो आज यही अेक अुपयुक्त पद्धति है।

४. अिस पद्धति का ध्येय यह है कि बच्चे के अन्दर भले-बुरे का खयाल पैदा होते ही अुसे सामाजिक जीवन के कर्त्तव्यों में भाग लेना शुरू करा देना चाहिये।

५. अिस पद्धति का मध्यबिन्दु होगा, कोअी अुत्पादक पेशा। आमतौर पर हर किस्म की शिक्षा अिस अुद्योग के जरिये और अिसके साथ गूँथ दी जानी चाहिये। अुदाहरणार्थ अितिहास, भूगोल, गणित, भौतिक तथा सामाजिक शास्त्र अेवं साहित्य आदि सब विषयों की शिक्षा अिस अुद्योग के साथ ग्रथित करके साथ-साथ दी जानी चाहिये। अिन विषयों की अन्य बातें छोड़ी नहीं जायगी। पर ग्रथित शिक्षा पर अधिक जोर दिया जायेगा।

६. अुद्योग भी शिक्षा का केवल साधन या वाहन नहीं होता। बल्कि जिस हद तक वह मानव जीवन में अनिवार्यतः आवश्यक है, अुस हद तक वह हमारी शिक्षा का साध्य भी होगा। अर्थात् अिस शिक्षा का यह भी अेक ध्येय होगा कि अिसके द्वारा हर तरह के शरीरश्रम के प्रति, चाहे वह भंगी का ही काम क्यों न हो, बालक में आदर-भाव अुत्पन्न हो। और, अुसमें अेक अैसी कर्त्तव्य-

निष्ठा अुत्पन्न हो कि अुसे अपनी रोजी भी अीमानदारी के साथ शरीरश्रम द्वारा ही प्राप्त करनी चाहिये।

७. अिस पद्धति के अनुसार पढ़ानेवाले शिक्षक का लक्ष्य यह होगा कि विद्यार्थी जो भी अुद्योग सीखे, अुसीके जरिये अुसकी तमाम शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रकट हों।

८. अिसमें समाज-शास्त्र तथा आरोग्य-शास्त्र केवल वर्ग शिक्षण के विषयों के रूप में ही न पढ़ाये जायें, बल्कि भिन्न भिन्न रीति से मूक प्राणियों सहित सारे गाँव की सेवा करने के लिअे सामाजिक तथा व्यक्तिगत कार्यक्रम बनाकर, अुनके द्वारा अिन विषयों की प्रत्यक्ष शिक्षा दी जाये। अिस नवीन विद्यालय की हस्ती अेक दीप की तरह हो, जो समाज पर चारों तरफ़ से संस्कृति का प्रकाश फैलाता रहे।

९. संक्षेप मे कहें, तो हाथ और ज्ञानेन्द्रियों द्वारा यह पद्धति व्यक्ति की बुद्धि और हृदय को सुसंस्कृत करे और विद्यालय के जरिये अुसे समाज तथा परमात्मा तक पहुँचाये।

१०. शाला के सामुदायिक जीवन में रहकर रोज तीन या चार घंटे तक सह-परिश्रम करना लड़के-लड़कियों के लिअे आरोग्यदायक और अुत्तम रीति से शिक्षाप्रद भी है। "मनुष्य चाहे किसी भी श्रेणी का हो, विज्ञान और अुद्योग, दोनों के विकास के लिअे और सारे समाज के सामूहिक लाभ की दृष्टि से भी अुसे अैसी शिक्षा मिलनी चाहिये कि वह विज्ञान की शिक्षा के साथ-साथ दस्तकारी की शिक्षा को जोड़ सके।" (क्रोपाटकिन)

११. मौजूदा शिक्षा-पद्धति में तो अधिकांश विद्यार्थी अपनी कॉलेज की पढ़ाअी समाप्त कर लेने पर भी यह निश्चय नहीं कर पाते कि आगे वे क्या काम करेंगे? हम अकसर देखते हैं कि अैसे बहुत से लड़के और लड़कियाँ, जिनके घर की स्थिति बहुत ज्यादा खराब नहीं होती, प्राथमिक शाला से माध्यमिक शालाओं में और वहाँ से कॉलेजों में भारी खर्च अुठाकर जाते रहते हैं। अिसका कारण यह नहीं कहा जा सकता कि वे अिन विद्यालयों में सिर्फ अुन शुभ संस्कारों को पाते हैं, जिनका कि ये संस्थाअें दावा करती हैं। वास्तव में तो वे अिसलिअे पढ़ते चले जाते हैं कि अुन्हें कुछ सूझता ही नहीं कि अिसके अलावा

वे और क्या कर सकते हैं। जीविका कमाने के लिअे किसी अुपयुक्त धंधे के चुनाव की घड़ी को, जहाँ तक बन पड़ता है वे आगे ठेलते जाते हैं और अिस तरह अेक के बाद अेक अिम्तिहानों में बैठते चले जाते हैं। जिस स्त्री अथवा पुरुष को अपने जीवन के प्रारम्भिक बीस-पचीस साल अिस तरह निरुद्देश्य बिताने पड़ते हैं अुसके अन्दर दीर्घसूत्रता, संशयवृत्ति अनिश्चितता और अपने-आप किसी निर्णय पर पहुँचने की अक्षमता, आये बगैर रह ही नहीं सकती। सेगाँव-पद्धति का अुद्देश्य यह है कि प्रत्येक बालक या बालिका को वह जल्दी-जल्दी अिस बात का निर्णय करा दे कि अुसे अपने भावी जीवन में कौन-सा व्यवसाय करना होगा; अुसे किसी अेक धन्धे की कम-से-कम अितनी तालीम भी जरूर दे दे, जिससे वह जीवन के समुचित धारण-पोषण के लिअे आवश्यक न्यूनतम कमाअी अवश्य कर सके।

१२. साक्षरता को यानी लेखन-वाचन द्वारा अनेक विषयों की जानकारी की तथा तार्किक अथवा अैसी ही अन्य चर्चाओं को समझने की शक्ति को अिस सेगाँव पद्धति में न तो ज्ञान माना गया है और न ज्ञान का साधन ही। बल्कि, अिसमें तो अुसे ज्ञान अथवा अलंकृत अज्ञान को प्रकट करने की सांकेतिक पद्धति मात्र माना है। अिन संकेतों का ज्ञान तो तब अुपयोगी और जरूरी हो सकता है, जब ज्ञान की जड़ें हरी हों। सेगाँव-पद्धति का अुद्देश्य यह है कि अिन जड़ों को हरा-भरा रखा जाये। अिसके साधन हैं: प्रत्यक्ष काम, अवलोकन, अनुभव, प्रयोग और सेवा। अिसके बगैर कोरी किताबी पढ़ाअी विद्यार्थी के हृदय और बुद्धि के विकास में विघ्नरूप सिद्ध होती है और अुसके शरीर को भी नुकसान पहुँचाती है।

१३. सेगाँव-पद्धति के अनुसार, जो पढ़ाअी होगी, और अुसमें विद्यार्थी को पढ़ाअी की बुनियाद के रूप में जो कुछ सिखाया जायेगा, अुनमें नीचे लिखे विषयों का समावेश होना जरूरी है: मातृभाषा के साहित्य का साधारण परिचय, देश की राष्ट्रभाषा का व्यावहारिक ज्ञान, गणित, अितिहास, भूगोल, भौतिक तथा सामाजिक शास्त्र, आलेखन, संगीत, कवायद, खेल-व्यायाम वगैरा। अिन विषयों का साधारण ज्ञान, और किसी अेक धन्धे में अितनी कुशलता कि जो साधारण शक्तिवाले विद्यार्थी को मामूली कमाअी करने की शक्ति दे सके; और अगर वह होशियार तथा परिश्रमी भी हो, तो अुसे अिस लायक बना दे कि वह स्वाश्र-

त्यिक अथवा औद्योगिक क्षेत्र में अधिक शिक्षा पाने का पात्र बन जाये। अिस 'बुनियादी पढ़ाअी' में नीचे लिखे विषयों का समावेश आवश्यक नहीं है : अंग्रेजी अथवा अैसे तमाम विषय, व्यवहार में साधारणतया जिनकी जरूरत नहीं होती, अथवा बुद्धि के विकास के लिअे जो अनिवार्यतः आवश्यक नहीं होते; या खुद-बखुद अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने की पूर्व तैयारी के रूप में जिनकी जरूरत नहीं रहती।

१४. 'बुनियादी शिक्षा' का अध्ययन-क्रम सात वर्ष से कम का नहीं होना चाहिये। हाँ, अगर जरूरत हो, तो समय बढ़ाया जरूर जा सकता है। अगर आगे लिखे अनुसार शालायें स्वावलम्बी हो सकीं, और विद्यार्थियों के पालकों को भी अिससे कुछ लाभ मिल सका, तो बच्चों को अधिक समय तक पढ़ाने में अुनके पालकों को कोअी कठिनाअी न होगी।

१५. सेगाँव-पद्धति के सम्बन्ध में राज्य के कुछ कर्त्तव्य तथा जीवन वेतन की कम-से-कम मर्यादा के विषय में कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लिये गये हैं। वे नीचे दिये जा रहे हैं।

१६. जो स्त्री या पुरुष मेहनत करने के लिअे तैयार हों और जिन्हें सरकार पढ़ने के लिअे मजबूर करे, सरकार का कर्त्तव्य है कि वह अुन्हें काम दे और काम के बदले में कम-से-कम अितना वेतन जरूर दे, जिससे अुनका ठीक तरह निर्वाह हो जाये। जिस सरकार में अितना करने की शक्ति नहीं है, वह 'राज्य' कहलाने की पात्रता नहीं रखती।

१७. अैसा अनुमान किया गया है कि आजकल के बाजार-भावों के अनुसार हिन्दुस्तान में समुचित निर्वाह के लिअे 'पूरा काम' करनेवाले आदमी का मेहनताना फी घंटा अेक आने से कम नहीं पड़ना चाहिये। 'पूरा काम' यहाँ अुतना काम समझा जाये, जितना (तालीम पाया हुआ) अेक साधारण आदमी घंटे भर में कर सके।

१८. हमारे देश की वर्त्तमान शासन-पद्धति तथा समाज की रचना भी अिस कसौटी पर खरी नहीं अुतरती। अिसलिअे हमारे देश की सरकारें 'राज्य' कहलाने की पात्रता नहीं रखतीं। अिस खामी का कारण चाहे विदेशी सत्ता हो, या खुद हमीं हों, अिसे दूर तो करना ही पड़ेगा। सेगाव-पद्धति का दावा है कि

अगर अुस पर साहसपूर्वक और सच्चे दिल से अमल किया जावे, तो राज्य में तथा समाज में आवश्यक फेर-फार करने के साधन और शक्ति वह हमें देगी।

१९. अिसके लिअे राज्य को कम-से-कम अेक अुद्योग को अपनाना होगा; और वह अैसा होगा, जिसमें वह लगभग असंख्य आदमियों को काम दे सके और फिर भी अुसे कुछ घाटा न अुठाना पड़े।

२०. हिन्दुस्तान के लिअे तो हाथ-बुनाअी और हाथ-कताअी ही अेक अैसा धंधा है। अिसमें कच्चे माल की, थोड़ी पूंजी से काम चल निकलने की और अपार मनुष्य-बल आदि की वे सारी स्वाभाविक अनुकूलतायें हैं, जो अिसे देश का खास अुद्योग बना देने के लिअे आवश्यक हैं। फिर, अिसके पीछे लंबी परम्परा भी तो है, क्योंकि सैकड़ों वर्ष तक हिन्दुस्तान ही ने संसार को तन से ढँका है।

२१. यों तो पहले ही कातने की मजदूरी असंतोषकारक थी, पर आगे चल वह कलों के बने माल की प्रतिस्पर्द्धा में और भी अधिक घट गयी। राज्य तथा जनता को चाहिये कि वे अिस प्रतिस्पर्द्धा को मिटा दें। और जब तक वे अैसा नहीं कर सकते खादी-अुद्योग को जिलाने के लिअे, प्रतिस्पर्द्धा की किसी प्रकार परवा किये बगैर, वे कातनेवाले को अितनी मजदूरी देना शुरू कर दें जिससे अुसका अच्छी तरह निर्वाह हो सके।

२२. अिसी तरह सभी प्रकार की मजदूरी की दर बढ़ाने की जरूरत है, जिससे मजदूरों का धारण-पोषण पूरी तरह हो सके। सरकार को चाहिये कि अैसा करने की शक्ति वह प्राप्त करे। जनता का भी कर्त्तव्य है कि अिस काम में सरकार की मदद करे, जिससे वह अिस लायक बन जाय!

२३. अूपर बतायी हुअी अल्पतम मजदूरी बड़ी अुम्र के आदमी के लिअे है। सेगाँव-पद्धति की शाला के विद्यार्थी के लिअे अुसकी दर फी घंटा आध आना पड़ती है।

२४. यदि हम रोजाना काम के तीन घण्टे मान लें, और यह मान लें कि साल में नौ महीने शाला लगेगी, तो सेगाँव-पद्धति की शाला की कुशलता की कसौटी यह होगी कि सात दर्जों। हर दर्जे में २५ विद्यार्थी। और लगभग [illegible] की सिखावनी शाला की आय अितनी हो जानी चाहिये कि अुससे [illegible]

हिसाब से मजदूरी ऑकी जाये, तो अुसमें से शिक्षकों का वेतन निकल आये। शिक्षक के वेतन कम-से-कम रु. २५ मासिक मान लिया गया है। वह रु. २० मासिक से कम तो किसी हालत में न होगा।

२५. विद्यार्थियों की कार्यशक्ति, साधन तथा शिक्षा-पद्धति में अितना सुधार हो जाने चाहिये कि कुशलता की अुपर्युक्त कसौटी पर कम-से-कम प्रत्येक शाला खरी अुतर सके।

२६. अुपर्युक्त दर से शाला के विद्यार्थी की मजदूरी ऑकते हुअे, और गॉवों में खानगी कारीगरों को आज जो मजदूरी मिलती है, अुसका विचार करते हुअे, अिस बात का कोअी भय नहीं रहता कि खानगी कारीगरों के माल के साथ शालाओं के माल की प्रतिस्पर्द्धा होगी। गॉवों के कारीगरों की मजदूरी की दर के अिस सीमा तक आने में थोडा समय लगेगा, और तब तक तो देहाती कारीगरों की कार्य-शक्ति और साधनों में भी अितने ही सुधार हो चुके होंगे। अिसलिअे यहॉ प्रतिस्पर्द्धा का भय रखने की जरूरत ही नहीं।

२७. फिलहाल तो शाला को अुपर्युक्त मजदूरी चुकाने का आश्वासन सरकार को दे ही देना चाहिये। कम-से-कम चर्खा संघ तथा ग्रामोद्योग संघ द्वारा मंजूर की गयी दर तो जरूर देनी चाहिये। और जब तक विद्यार्थी को फी घंटा आध आना मजदूरी नहीं पड़ जाती, ये संस्थायें ज्यों-ज्यों अपने यहाँ मजदूरी की दर बढाती जायें, त्यों-त्यों शालाओं की मजदूरी की दर भी बढती जानी चाहिये। अिस पर शायद यह आक्षेप किया जायेगा कि यह तो शाला को अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने की बात हुअी। और यह कि अिससे, मौजूदा बाजार-भावों को देखते हुअे सरकार पर बहुत अधिक आर्थिक बोझ पड़ेगा। मगर कारीगरों की कार्यशक्ति और साधनों में भी सुधार के लिअे अितनी गुंजाअिश है कि हम यह आशा रख सकते हैं कि पदार्थों की अधिक कीमत बढाये बिना भी, पॉच वर्ष के अन्दर शाला में अथवा खानगी तौर से तालीम पाया हुआ प्रत्येक कारीगर हक के साथ जीवन वेतन की न्यूनतम मर्यादा तक पहुँचने की शक्ति प्राप्त कर लेगा।

२८. यह जो सिद्धान्त कहा गया है कि अूपर बताये अर्थ में प्रत्येक शाला को स्वाश्रयी हो जाना चाहिये, अुसमें केवल आर्थिक दृष्टि ही नहीं है,

बल्कि यह शाला के औद्योगिक विभाग की कुशलता की व्यावहारिक कसौटी के रूप में रक्खा गया है।

२९. यहाँ केवल खादी अुद्योग द्वारा 'बुनियादी पदार्थों' की दृष्टि से सेगाँव-पद्धति का सांगोपांग विचार किया गया है। अिससे कोअी यह न समझे कि अिसमें हम अन्य अुद्योगों को प्रोत्साहन नहीं देना चाहते। बात यह है कि दूसरे अुद्योगों के सम्बन्ध में योजना बनाने और अनुमान निकालने के लिअे अभी हमारे पास आवश्यक सामग्री नहीं है।

३०. सेगाँव-पद्धति के सिद्धान्त आवश्यक फेरफारों के साथ अुसके बाद की शिक्षा मे भी प्रयुक्त किये जाने चाहिये। हर प्रकार की शिक्षा में स्वाश्रय को तो स्थान होना ही चाहिये। अुच्च शिक्षा में संस्था का खर्च या तो विद्यार्थियों की मेहनत से निकल आना चाहिये या फीस से। और अगर फीस न देनी पड़ती हो तो विद्यार्थी अपना खर्च शाला में या बाहर कहीं मजदूरी करके निकाल ले।

—किशोरलाल मशरूवाला

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

	मूल्य
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	
१. शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१- ०-०
२. नअी तालीम की मूल कल्पना	०- १-०
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनों की रिपोर्ट	
३. बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ. जाकिर हुसेन कमेटी की रिपोर्ट)	१- ८-०
४. समग्र नअी तालीम	२-१२-०
५. सातवाँ नअी तालीम सम्मेलन (सेवाग्राम १९५१)	२- ०-०
६. ठहराव तथा निष्कर्ष (अुपरोक्त संमेलन)	०- ६-०
७. आठवाँ नअी तालीम सम्मेलन विवरण	१- ४-०
८. नवाँ ,, ,, ,,	०-१०-०
९. दसवाँ ,, ,, ,,	०-१२-०
१०. अध्ययन मंडलियों का विवरण (अुपर्युक्त सम्मेलन की)	०- ३-०
११. ग्यारहवाँ नअी तालीम सम्मेलन	१- ०-०
१२. अ. भा. अुत्तर बुनियादी शिक्षा-संमेलन	१- ०-०
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	
१३. प्रौढशिक्षा का अुद्देश्य (शांता नारुलकर और मार्जरी साअिक्स)	०-१२-०
१४. जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शांता नारुलकर)	१- ४-०
अलग-अलग विषयों पर पुस्तकें	
१५. मूल अुद्योग : कातना (विनोबा) हिन्दी	०-१२-०
१६. ओटना, धुनना व तार बनाना (सुन्दरम्)	१- ०-०
१७. खेती शिक्षा (भिसे और पटेल) हिन्दी	१- ०-०

	मूल्य
१८. तकली (कुन्दन दिवान) हिन्दी	२- ०-०
१९. कम्पोस्ट वाली संडास	०- ५-०

पाठ्यक्रम की पुस्तकें

२०. आठ सालों का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१- ८-०
२१. उत्तर-बुनियादी शिक्षाक्रम (संक्षिप्त)	०- ४-०
२२. पूर्व-बुनियादी शिक्षकों की ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम	०-१०-०

अन्य पुस्तकें

२३ नयी किताब (सचित्र) तीसरे दर्जे के लिये	०-१२-०
२४. भारत की कथा (अभिनय तथा संगीत)	०- ८-०
२५. नयी तालीम का आयोजन	०- १-०
२६. सेवाग्राम—गांधीलोक	०- ५-०
२७. नयी तालीम प्रदर्शिनी	०- २-०
२८. वर्त्तमान शिक्षा की गंभीर स्थिति (आर्यनायकम्)	०- २-०
२९. सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो. राओस)	०- १-०
३०. नयी तालीम का विश्वरूप (धीरेन्द्र मजूमदार)	०- ४-०
३१. सेवाग्राम विश्वविद्यालय (आशादेवी)	०- १-०

